द्वितीय अध्याय :

"विवेच्य नाटकों का सामान्य परिचय"

द्वितीय अध्याय - ' विवेच्य नाटकों का सामान्य परिचय '

प्रस्तावना :

साठोत्तरी हिंदी नाटककारों में कुसुम कुमार शीर्षस्थ हैं। कुसुम कुमार के नाटकों में प्रयोगधर्मिता के विविध आयाम दिखाई देते हैं। उनके नाटकों का देशभर में प्रदर्शन यह सिध्द करता है, कि उनके नाटकों में प्रयोग की स्थिति काफी मजबूत है। उनके नाटक साहित्य में नये क्रांतिकारी चरित्र लेकर आयें हैं, जो आधुनिक है और यथार्थ जीवन को चित्रित करते हैं।

प्रस्तुत अध्याय में कुसुम कुमार के नाटकों का सामान्य परिचय प्रस्तुत किया जा रहा है, जिसे पढ़कर उनके नाटकों का कथ्य आसानी से समझा जा सकता है।

2.1 'ओम् क्रांति क्रांति'

'ओम् क्रांति क्रांति' कुसुम कुमार का प्रकाशन क्रम की दृष्टि से प्रथम नाटक हैं। प्रस्तुत नाटक का प्रथम संस्करण 'नेशनल पब्लिशिंग हाऊस' नई दिल्ली से सन् 1978 ई.में प्रकाशित हुआ है। प्रस्तुत नाटक तीन दृश्यों में विभाजित हैं। नाटक में लगभग दस पात्र हैं। जिसमें आठ प्रमुख पात्र हैं। मिसिज दानी, मिसिज पंत, मिसिज मंगला, मिस सिंह ये चार कॉलेज के लेक्चरर हैं और दो गौण पात्र है - पांचू, प्रिंसिपल। इस नाटक में कोई केंद्रीय पात्र नहीं हैं। 'ओम् क्रांति क्रांति' एक समस्या प्रधान नाटक हैं। प्रस्तुत नाटक में शिक्षा व्यवस्था की अधोन्मुखी स्थिति, शिक्षकों की उत्तरदायित्वहीनता और विद्यार्थियों की विवशता दिखाई देती है।

नाटक के प्रथम दृश्य में महिला कालेज का परिवेश है। चार लड़कियों की ट्यूटोरियल के बारे में चर्चा के साथ नाटक का कथानक आरंभ हो जाता है। इसमें कालेज की चार लडकियाँ हैं - मेनका, अनू, थैलमा और मीना। इनमें से मेनका अपनी क्लासरूम में ट्यूटोरियल की तयारी कर रही है। अन्य लड़कियाँ लापरवाही से इधर-उधर देख रही है। वे लड़कियाँ बीच-बीच में मेनका को कोसना चाहती है। थैलमा लेक्चरर मिसिज दानी को आते देखकर उनकी पीएच्.डी. की उपाधि प्राप्त करने पर व्यंग कस रही है, क्योंकि मिसिज दानी पीएच्.डी. की उपाधि के योग्य नहीं है। उन्हें अच्छे ढंग से पढ़ाना भी नहीं आता और जो क्लास में प्रश्न पूछें जातें हैं, इनका उत्तर भी देना नहीं आता। त्रह विद्यार्थियों द्वारा पूछे गये प्रश्नों के उत्तर देने में टालमटोल करती है। क्लास में जाते समय देरी से जाती है। थैलमा प्लेटफॉर्म पर चढ़कर लेक्चरर की पोज और अनुकरण करने का प्रयत्न करती है। मिसिज दानी पर व्यंग्य कसना मेनका को पसंद नहीं है, क्योंकि वह टीचर का बहुत सम्मान करती है। अन्य लडकियाँ कैंटीन जाना सोच रही है, मेनका उन्हें क्लास अटेंड करने के लिए बिनती करती है। थैलमा लेक्चरर के मंच पर जाकर मिसिज दानी की नकल करती है - "तत्काल कापी निकालिए - जल्दी निकालिए कापी निकालने में ही इतनी समय लगाएँगी तो तत्काल नोट्स कैसे बनाएँगी हम लोग तो परीक्षा की तैयारी यूं (चुटकी बजाते हुए) तत्काल किया करते थे- सब मेरा मुंह क्या देख रही हो- तत्काल निकालो - अभी तो बीस मिनट बाकी है -

तत्काल लिखना शुरू कीजिए - आज अभी हम कवि सूरदास पूरा किये लेते हैं।"[1] नकल करने के बाद अनू, थैलमा और मीना कैंटीन जाती है। मेनका क्लासरूम में अकेली बैठी है, उसी वक्त मिसिज दानी का आगमन होता है। मिसिज दानी मेनका को अकेली क्लास में उपस्थित रहने का कारण पूछती है। मेनका स्पष्ट शब्दों में कहती हैं, आप हमेशा देरी से आती है, इसलिए वे लड़कियाँ बाहर गई हैं। देरी से आने का आरोप लगाने पर मिसिज दानी यह मानने को तैयार नहीं है। वह हमेशा जल्दी आती हैं, ऐसी सफाई देती है। मेनका, हररोज देरी से आने पर कोर्स कैसा पूरा होगा, ऐसी चिंता व्यक्त करती है। कोर्स पूरा करने के लिए विद्यार्थियों से सहयोग न मिलने का कारण बताकर मिसिज दानी मेनका के आरोप का खंडन करती है। मिसिज दानी और मेनका में कुछ अनबन होने पर मेनका मिसिज दानी पर क्रोधित होती है। वह दानी के प्रति विद्रोह करना चाहती है, लेकिन उसके मन में साहस नहीं हो पा रहा है। उसी वक्त अन्य तीन लड़कियों का क्लास में प्रवेश होता है। क्लास में देरी से आने के कारण मिसिज दानी उन लड़कियों को खड़ी रहने की सजा सुनाती है। थैलमा मिसिज दानी पर आप भी, देरी से आतो है, ऐसा प्रत्यारोप करती है। मिसिज दानी बेल बजने में दस मिनट शेष है, उसी वक्त पढ़ाई का काम शुरू करती है। कबीर का 'चींटी शक्कर ले गई' यह पद पढ़ा रही है . मिसिज दानी 'सक्कर' की जगह 'शक्कर' का उल्लेख करती है, तो लड़कियाँ किताब में 'सक्कर' लिखा है कहकर मिसिज दानी की गलतियों की याद दिलाती है। मिसिज दानी कहती है - " कबीर कुछ कम पढ़े लिखे थे ना इसलिए उनकी भाषा में ऐसी त्रुटियां बहुत जगह मिलती हैं।"[2] कबीर पढ़े-लिखे थे या अनपढ़ थे इसपर काफी बहस होने के बाद मिसिज दानी कल मिसिज मंगला को पूछकर कह देती हूं कहकर क्लास स्थगित करती है। मेनका मिसिज दानी पर आरोप लगाती है - " आप हर प्रश्न इसी तरह स्थगित करके हमें टाल देंगी तो इस क्लास का आखिर होगा क्या ?"[3] मेनका का कटू वाक्य सुनकर मिसिज दानी घुस्से में आकर विद्यार्थियों के बारे में प्रिंसिपल तक शिकायत करने की धमकी देकर चली जाती है। मिसिज दानी द्‌वारा दी गयी धमकी पर थैलमा अपना मत व्यक्त करती है - " देने दो ..... देने दो ...... ऐसी धमकियों को कौन परवाह करता है ? मेनका, तू भी इन धमकियों से डरना मत ...... डेढ़ साल से टीचर ने हमारे पल्ले एक अक्षर भी नहीं डाला और प्रिंसिपल से शिकायत करने का रोब भी उल्टे हमें ही दिखाती है .... हं .... ह.।"[4] मेनका छात्रों के हित को सामने रखकर मिसिज दानी को विरोध करती है। मिसिज दानी द्‌वारा दिये गये धमकी के कारण मेनका उदास बैठी है, तभी बेल बजती है। यहां नाटक का प्रथम दृश्य समाप्त होता है।

दूसरे दृश्य के प्रारंभ में स्टाफ-रूम का दृश्य है। मिसिज मंगला पुस्तक पढ़ रही है और मिसिज पंत पेपर-चैक करती हुई बैठी है। पेपर-चैक करते-करते मिसिज पंत जोर-जोर से हँसने लगती है। वह सैकंड इयर 'सी' क्लास के बैच की शार्प लड़कियों की प्रशंसा करती है। मिसिज पंत ने क्लास में निबंध लिखने को सबजैक्ट दिया था ' द प्रोफेशन आय लाइक द मोस्ट ' प्रस्तुत निबंध में लड़कियों ने अपना जो मत व्यकत किया है, वह पूरे महिला कालेज के लेक्चरर की अनुशासनहीनता, उत्तरदायित्वहीनता के विरोध में हैं। इस पर मिसिज पंत लड़किंयों की प्रशंसा

करती हुई कहती है - " मिसिज मंगला यह जैनरेशन बड़ी ही बोल्ड .... कितनी साफगोई है इसमें। सामने इसके प्लेट में रसगुल्ला रक्खा तो मुंह में लार समेटकर, पेट पर हाथ रखकर .... नहीं.... नहीं करना नहीं सीखा इसने.... मुझे तो बेहद खुशी होती है तब.... जब देखती हूं ... उन लोगों का पाखंड भी इस जैनरेशन ने झीना कर दिखाया तो उठते - बैठते मिठाई को दूसरों के स्वास्थ्य के लिए नुकसानमंद बताते नहीं थके और खुद ? जब भी दिखे .... बताशों की खीर पर हाथ साफ करते हुए दिखे।"[5] मिसिज दानी का स्टाफ - रूम में आगमन होता है। मिसिज पंत द्वारा प्रशंसा सुनकर मिसिज मंगला कहती है - " भई आप बहुत रियायत करती हैं लड़कियों के साथ मिसिज पंत।"[6] मिसिज दानी भी उन्हीं के सूर में सूर मिलाकर मिसिज पंत पर लड़कियों मे अधिक पॉप्युलर होने के लिए कोशिश करती है, ऐसा आरोप लगाती है। मिसिज पंत क्रोधित होकर पॉप्युलर होने और पॉप्युलर होने की कोशिश करने में जो फर्क होता है, इसकी सही जानकारी देती है। कैंटीन बॉय पांचू आने पर तनाव में शिथिलता आती है। कैंटीन बॉय को आर्ड़र देकर मिसिज दानी इलायची मुंह में डालती है। यह बात मिसिज पंत को पसंद नहीं है, क्योंकि क्लास में जाते समय इलायची खाना पंत को बिल्कुल पसंद नहीं। मिसिज दानी की अनुशासनहीनता पर उन्हें क्रोध आता है। मिसिज दानी सेकंड इयर 'सी' के विद्यार्थियों के बारे में प्रिंसिपल से शिकायत करके आयी है। इसी बात पर मिसिज पंत और मिसिज दानी में क्लास के अधिकार पर अनबन होती है। मिसिज दानी उन लड़कियों पर बदतमीज, नालायक और घमंडी होने का आरोप लगाती है। मिसिज पंत, मिसिज दानी को यह समझा देना चाहती है कि लड़कियाँ क्यों नालायक और घमंडी है । उनके घमंडी विद्रोह का सही कारण मिसिज दानी की अनुशासनहीनता है। मिसिज पंत व्यंग्य से कहती है - " छोडिए डॉ.मिसिज दानी, छोडिए .... अभी आपसे नहीं सुलझेगी सह समस्या, कभी वक्त मिलने पर एक पीएच्.डी. और कर डालिए इस विषय पर भी ..... तब शायद समझ में आ जाए कि लड़कियाँ नालायक, घमंड़ी और गुस्ताख क्यों हैं।"[7] मिसिज पंत क्लास पर जाती है। मिस सिंह का क्लास- रूम में आगमन होता है। मिस सिंह मेनका और थैलमा को स्टाफ - रुम में बुलाकर इतिहास की किताब देती है। मिसिज दानी को यह बात उचित नहीं लगती। मिसिज दानी मिसिज सिंह पर हमेशा क्रांति को उकसाती है, ऐसा आरोप लगाती है। मिस सिंह स्पष्ट शब्दों में कहती है - " आप हमेशा शांति का पक्ष लेती हैं। पीली पड़ी ..... बीमार शांति का ! !"[8] मिस सिंह विद्यार्थियो और कर्मचारियों पर होनेवाले अत्याचार के विरोध में आवाज उठाना चाहती है। कैंटीन बॉय पांचू आर्ड़र लेने के लिए आता है। वह मिस सिंह को कैंटीन मालिक आहूजा साहब का लड़का घनश्याम बाबू के बारे में कहना चाहता है। घनश्याम बाबू ' संतोष नामक लड़की को देखकर जय जय संतोषी माता जय जय' का गाना गाते वक्त आहूजा साहब द्वारा पकडे जाने की बात कहता है। तभी बेल बजती है। यहां दूसरा दृश्य समाप्त होता है।

नाटक के तीसरे दृश्य में क्लासरूम के दूसरे दिन का दृश्य है। थैलमा लेक्चरर के प्लैटफार्म पर खड़ी है। सभी लड़कियाँ मिसिज दानी की अनुशासनहीनता, उत्तरदायित्वहीनता के विरोध में आवाज उठाने के लिए लड़कियाँ अवसर ढूँढ़ रही है। थैलमा कहती है - " नहीं बहन, आप अब

तक जो कुछ देखती आयी, वह सब बहकावा था, छलावा था। सूरज तो अब उगा है....।"[9] थैलमा और उनकी सहेलियाँ महिला कालेज की भ्रष्ट लेक्चरर के विरोध में आवाज उठाने की तैयारी करती हैं। लड़कियों के इस कथन से स्पष्ट होता है -

" अनु - मैं बताऊ एक इलाज ? पूरी क्लास मिलकर एक दिन दंगा कर दो ..... प्रिंसिपल के पास शिकायत लेकर चलते हैं..... कुछ दम है तो चींटी को एक बार शक्कर से अलग कर दो।

थैलमा - यू मीन, क्रांति ला दो।"[10] सभी लड़कियाँ मिसिज दानी और मिसिज बुखारी की भ्रष्टनीति को मिटा देने का इरादा व्यक्त करती हैं। सभी लड़कियाँ 'ओम् क्रांति क्रांति ' का नारा लगाती हैं। थैलमा डर व्यक्त करती है - " अभी टीचर क्लास में आ गई तो तुम्हारी यह सारी क्रांति हवा में उड़ जाएगी। बचा रहेगा सिर्फ ओम्। फिर बस ओऽम ही खाना ओऽम ही पीना .... ओऽम - ओऽम।"[11] पिछले डेढ़ साल से क्लास में सिर्फ शांति ही चल रही है। लेकिन अब जरूरत है सिर्फ क्रांति की। इसी विचार से प्रेरित होकर लड़कियाँ प्रिंसिपल के नाम एक पत्र लिखने का निर्णय लेती है।

मिसिज दानी का क्लास में प्रवेश होने के बाद क्लास में खामोशी फैलती है। मिसिज दानी फिर कबीर के पद पढ़ाने की कोशिश करती है। अनू 'चींटी शक्कर ले गई' कबीर के इस पद का नहीं पढ़ना है ऐसा अपना मत व्यक्त करती है - " मैम, आज हम 'चींटी शक्कर ले गई' नहीं पढ़ेंगे।"[12] सभी लड़कियाँ अनू के मत का अनुमोदन करती हैं। मिसिज दानी अपनी राय बदल कर 'मीरा' पढ़ाने की शुरूआत करती है। मेनका मिसिज दानी के विरोध में क्रांति करने के विचार से सहमत होकर अपना मत व्यक्त करती है - " नहीं मैम। पढ़ने से पहले हम किसी और बात का फैसला करेंगे आज।"[13] मिसिज दानी पढ़ाना चाहती है। मेनका फिर मिसिज दानी को इशारा देती है - " आज कोई नहीं पढ़ेगा इस कलास में।"[14] सभी लड़कियाँ चिल्लाकर मेनका के इस निर्णय को योग्य मानकर क्लासरूम में न उपस्थित रहने का निर्णय लेती हैं। इसी समय प्रिंसिपल का प्रवेश होता है। प्रिंसिपल मेनका जोशी और थैलमा को खड़े रहने का आदेश देती है। प्रिंसिपल मेनका पर आरोप लगाती है - " मेनका जोशी तुम्हारी टीचर मिसिज दानी की तुम्हारे खिलाप जो सख्त शिकायत है , वो यह कि तुम घमंडी लड़की हो। क्लास में तुम्हारे हाव-भाव बड़े विद्रोही किस्म के होते हैं।"[15] प्रिंसिपल मिसिज दानी का पक्ष लेकर विद्यार्थियों पर दबाव डालना चाहती है। उनके विद्रोह को मिटा देना चाहती है, लेकिन सभी लड़कियाँ मेनका का पक्ष लेकर मेनका पर लगाये गए आरोप का खंड़न करती हैं। सभी लड़कियाँ जोर-जोर से शोर मचाती हैं। प्रिंसिपल मेनका को धमकी देती है - " जानती हो, क्लास में रूकावट ड़ालने का क्या परिणाम होता है। सुना है, तुम एक टीचर की बेटी हो .... इसलिए तुम्हे जरूर हर गुस्ताखी का परिणाम पता होना चाहिए।"[16] थैलमा आक्रोश में अपना अभिप्राय व्यक्त करती है - " और टीचर को ? मैड़म प्रिंसिपल ..... और टीचर को अन्याय का परिणाम क्या नहीं पता होना चाहिए ?"[17] मेनका और थैलमा किसी भी कीमत पर अपने क्रांतिकारी विचार से नहीं हटती। अतएव प्रिंसिपल ने दोनो को कालेज से रस्टिकेट किया है।

प्रस्तुत इस निर्णय को सुनकर मेनका चक्कर खाकर गिर पड़ती है। सभी लड़कियाँ जोर-जोर से शोर मचाना शुरू करती है। प्रिंसिपल मेज पर हाथ पीटकर चुप हो जाने का आदेश देती है। लड़कियों को अपने निर्णय पर अड़िग देखकर प्रिंसिपल को विवशता से खड़े रहना पड़ता हैं। मिसिज दानी क्लास में मचाए गए शोर को शांत करने के लिए 'ओऽम शांति शांति' का नारा लगाती है। मीना चिल्लाकर कहती है - "अब शांति स्थापित नहीं हो सकती गुरूदेव... अब तो होगी और होके रहेगी क्रांति, सिर्फ क्रंति, सिर्फ क्रांति। "[18] सभी लड़कियाँ बांहें ऊँची करके एक्साथ 'ओम क्रांति क्रांति' का नारा लगाकर, अब सिर्फ क्रांति होने की उद्घोषणा करती हैं। यहां नाटक समाप्त होता है।

2.2 'सुनो शेफाली'

'सुनो शेफाली' कुसुम कुमार का प्रसिद्ध नाटक है। प्रकाशन क्रम से यह उनका दूसरा नाटक है। प्रस्तुत नाटक का प्रथम संस्करण 'प्रराग प्रकाशन, दिल्ली' से सन् 1979 ई.में. प्रकाशित हुआ है। 'सुनो शेफाली' का कथानक एक हरिजन लड़की शेफाली और समाजसेवीं सत्यमेव दीक्षित के पुत्र बकुल के माध्यम से राजनीतिक छल-प्रपंच का पर्दाफाश करनेवाला नाटक है। प्रस्तुत नाटक छः दृश्यों में विभाजित है। नाटक में लगभग तेरह पात्र है। जिसमें प्रमुख पात्र है - मनन, आचार्य, सत्यमेव, दीक्षित, शेफाली, बकुल और गेरू तथा आँठ गौण पात्र हैं- शेफाली की मां, मिस साहब, स्त्री-पुरूष, पुजारीन युवती, भजन-मंडली, अंग्रेज फोटोग्राफर, किरन और शिवालय का पुजारी। नाटक में शेफाली और बकुल दो केंद्रीय पात्र है। नाटक की संपूर्ण घटनाएँ शेफाली और बकुल के इर्द-गिर्द ही घूमती रहती है।

प्रस्तुत नाटक की नायिका शेफाली, दलितवर्ग की लड़की है। शेफाली का ब्राह्मण जाति में जन्में बकुल से पिछ्ले कई वर्षों से प्रेम-संबंध है। लेकिन शेफाली हमेशा यह महसूस करती रही है कि बकुल के इस प्रेम संबंध के पीछे अवश्य ही कोई न कोई स्वार्थ है। शेफाली एक भोली-भाली किंतु स्वाभिमानी लड़की है। आत्मसम्मान से भरी हुई इस सज़ग लड़की को यह ज्ञात होता है कि सत्यमेव दीक्षित उसका विवाह बकुल से इसलिए करना चाहते हैं कि उससे उनकी राजनीतिक पृष्ठभूमि मजबूत हो सके। स्वाभिमानी शेफाली अपनी विद्रोही चरित्र के कारण निहायत घटिया और भ्रष्ट राजनीति के लिए वह अपना जीवन बलिदान करना नहीं चाहती।

नाटक के प्रथम दृश्य की शुरूआत ज्योतिषी और गेरू के वार्तालाप से होती है। गेरू ज्योतिषी के छोटे-छोटे कार्यों में मद्द करता है। ज्योतिषी यमुना के घाट पर बैठा करता है, दूर-दूर से लोग अपना भविष्य जानने के लिए ज्योतिषी के पास आते हैं। घाट के दायीं ओर शेफाली बैठी है। शेफाली को पहचानकर ज्योतिषी शेफाली का नाम लेकर पुकारता है। लेकिन शेफाली ज्योतिषी को नहीं पहचानती। शेफाली इस जगह कई सालों से बैठा करती है, लेकिन ज्योतिषी को नहीं पहचानती। यह जानकर ज्योतिषी को आश्चर्य होता है। ज्योतिषी जब शेफाली को शिवालय के बारे में पूछता है तब इस बात का भी शेफाली को पता नहीं है। शेफाली ने शिवालय के बारे में सुना है,

लेकिन वह शिवालय में अभी तक नहीं गई है। शेफाली बकुल के प्यार में इतनी खो गई है कि उसे बाहरी दुनिया की सुध-बुध नहीं है। ज्योतिषी अपनी पहचान करा देता है - मनन ज्योतिषी। मनन ज्योतिषी शेफाली को अपरोक्ष रूप से मद्द करता है। मनन को शेफाली और बकुल के प्रेम-संबंध की पूरी जानकारी है। मनन और शेफाली की बातचीत चलती है, उसी वक्त बकुल का प्रवेश होता है। मनन अपने स्थान पर जाकर बैठ जाता है। बकुल शेफाली के पास सटकर बैठता है। बकुल शेफाली से चुहुल करने के मूड़ में है, लेकिन शेफाली गंभीर है। शेफाली कहती है - "बस बाबा, बस। मुझे बदहवास करने के सब उपाय ... अब बस!! दूध कि धूली प्यार कि यह लफ्फाजी .... अब और नहीं चाहिए।"[19] शेफाली ने बकुल के स्वार्थी लालची वृत्ति को पूरी तरह से जान लिया है। बकुल शेफाली की बांहे खीचकर शरारत करना चाहता है। लेकिन शेफाली रिस्पान्स नहीं देती। वह रोने लगती है।

नाटक के दूसरे दृश्य की शुरूआत में दूसरे दिन बकुल और शेफाली दोनों मिलते हैं। बकुल शेफाली की आँखों पर हाथ से ही पंखा करता है। बकुल शेफाली को आलिगंन में आने का संकेत देता है। शेफाली इस मूड़ में नहीं है। बकुल विवाह करने की बात सुनाकर शेफाली को प्रसन्न करना चाहता है। वह विवाह का प्रस्ताव शेफाली के सामने रखता है, क्योंकि अब उसके पिता चुनाव लड़ना चाहते हैं। शेफाली इस प्रस्ताव को घर की जिम्मेदारी का कारण बताकर टालना चाहती है। बकुल शेफाली को समाजसेवक सत्यमेव दीक्षित की बहू बनाने की लालच दिखाता है। बकुल शेफाली को प्यार के मोहजाल में डालकर फंसाने के मूड़ में है। शेफाली अपनी स्वाभिमानी प्रवृत्ति की याद दिलाती है। अपने स्कूल के दिनों में हरिजनों के नाम पर मिलनेवाली सुविधाओं से लाभ उठाना अपमान समझती है। " स्कूल में कभी किताबें बंटती, कभी मुफ्त ऊन मिलती, कभी वर्दी का कपड़ा .... लेकिन हम तीनों बहने कोई रियायत न लेतीं ...... हम क्यों कहें कि हम हरिजन हैं ? यह 'जनहरि' लड़कियाँ क्या हमसे कोई ज्यादा हैं ? घर सें टूटा हुआ पैन-पेंसिल ले आएंगी और लिखते वक्त उल्टे हमें से मांगेंगी ... उस वक्त हमीं काम आएंगे इनके ..... मुझे यह सोच-सोचकर कुछ ज्यादा ही दु:ख होता है।"[20] इस घटना की याद दिलाकर शेफाली अपरोक्ष रूप से बकुल के लालच को ठुकराती है। बकुल शेफाली को विवाह के लिए राजी न होते हुए देखकर उसे 'अन-फेथफुल गर्ल ' कहकर अपना रोष व्यक्त करता है। शेफाली अपने मन में छुपी हुई बात को व्यक्त करती है - " झूठ - अब और झूठ न बोलो, बकुल! मैं सिर्फ प्यार करना जानती थी .... प्यार करती रही ..... हिसाब तो तुम लगातें रहें ..... और तुम्हारे घरवाले.... मैं एक गरीब घर की हरिजन लड़की ..... तुमने मुझे प्यार किया .... शादी भी करना चाहते हो .... आय शुड बी ग्रेटफुल टु यू .... आय शूड भी फेथफूल टू यू ....। "[21] शेफाली बकुल की स्वार्थीवृत्ति को पहचान लेती है। वहां से बकुल का प्रस्थान होता है। शेफाली मनन ज्योतिषी के पास चली जाती है। शेफाली अब ज्योतिषी के अन्तर्मन को जानना चाहती है, क्योंकि मनन बकुल के कुटिल चाल को जानता है। मनन ज्योतिषी का सहारा लेकर शेफाली विद्रोह करना चाहती है।

बकुल के पिता सत्यमेव दीक्षित चुनाव में जीत होगी या नहीं यह जानने के लिए मनन ज्योतिषी के पास आते है। रास्ते में उसे कीर्तन-मंड़ली की आवाज सुनाई देती है। एक अंग्रेज फोटोग्राफर फोटों खीच रहा है। वह अपने देश में यहां की संस्कृति का महत्त्व मैगजीन में छपवाने के लिए फोटो खींचवाता है। सत्यमेव दीक्षित फोटोग्राफर के साथ बातचीत करता है, लेकिन उन्हे अंग्रेजी बोलना नहीं आता। वह सिर्फ 'एस्-एस्' कहा करता है। लेखिका कुसुम कुमार ने राजनेताओं की अंग्रेजी भाषा की अनभिज्ञता पर व्यंग्य कसा है।

सत्यमेव दीक्षित मनन ज्योतिषी के पास आता है। मनन ने उसके स्वार्थी राजनीति को पहले से ही जान लिया है। सत्यमेव दीक्षित समाजसेवा के नाम पर अपना स्वार्थ साधना चाहता है। वह अपना मन्तव्य मनन के पास व्यक्त करता है। सत्यमेव दीक्षित अपने बेटे बकुल का विवाह हरिजन युवती शेफाली से करवारकर समाजसेवा के भुनाऊ रास्ते से चलकर राजनीति के मंच पर चढ़ना चाहता है। शेफाली का मन परिवर्तन करने में सत्यमेव दीक्षित मनन की सहायता लेना चाहता है। मनन कहता है कि - " लेकिन अपने अहंकार का झंडा गाड़ने के लिए आपको जिस लड़की के कोमल कंधों के जरूरत है, वह नहीं मिलेगी। वह लड़की भोली हो सकती है, पर बहुत बड़े अहं की मालिक है ..... इस काम में उसका सहयोग आपको कभी नहीं मिलेगा।"[22] मनन शेफाली और बकुल के प्रेम विवाह में सहायता करने के लिए नापंसदी व्यक्त करता है। यहां नाटक का दूसरा दृश्य समाप्त होता है।

तीसरे दृश्य के शुरूवात में शेंफाली की मां शेफाली को समझा रही है कि शेफाली बकुल के साथ विवाह करने के लिए तैयार हो जाए। शेफाली यह मानने को बिल्कुल तैयार नहीं है। मां सत्यमेव दीक्षित का आदर करना चाहती है, क्योंकि वे बड़े घर के लोग है। शेफाली अपनी मां को समझाती हुई कहती है कि - " तू क्या उन्हें इतना भोला समझती है, अम्मा ? वह क्यों शादी करना चाहते हैं मुझसे - अभी .... इसी वक्त ..... मै खूब समझती हूं .... बाप-बेटा अपनी समाजसेवा की हथेली पर सरसों जमाना चाहते हैं .... एक हरिजन लड़की का उध्दार किया उन्होंने - यही कह - कहकर अपने लिए जिन्दाबाद के नारे लगवाएँगे।"[23] शेफाली की मां परिस्थितिवश शेफाली का विवाह बकुल के साथ करने के लिए तैयार है। शेफाली बकुल से सच्चा प्यार करती थी। लेकिन बकुल सिर्फ प्यार का नाटक करता था। इसलिए मां शेफाली पर आरोप लगाती है - " उसके प्यार में तू खुद फंसी है .....अब हमसे शिकायत किस बात की करती है ? तू जानती थी, वे लोग मतलबी है तो अपनी आबरू क्यों गंवाई तूने ?"[24] इस बात पर शेफाली अपनी मन की व्यथा को अभिव्यक्त करती है - " कौन लड़की नहीं चाहेगी कि दो साल तक सोते-जागते सिर्फ एक ही सपना देखने के बाद वह उस अपने को अपनी जिंदगी की हकीकत न बनाले ? तकलीफ तब और भी ज्यादा होती है जब पता चले कि यह हकीकत मेरे प्रेमी के वेश में कोई फैशनेबुल - मतलबी लोकसेवक है, जो घात लगाकर मुझे कहाँ से कहाँ ले आया।"[25] शेफाली सच्चा प्रेम करती थी। वह बकुल से विवाह भी करना चाहती थी। लेकिन जब उसे पता चला कि वह प्रेमी सच्चा प्रेमी नहीं है तब वह अपना निर्णय बदल लेती है। फिर भी मां मानने को तैयार नहीं है। मां को एक ही चिंता है

कि घर में तीन बेटियाँ हैं। उनका विवाह करना मां की जिम्मेदारी है। मां यह भी कहती है कि अगर शेफाली विवाह के लिए तैयार नहीं होगी तो किरन का विवाह बकुल से करने के लिए राजी है। ऐसा प्रस्ताव सत्यमेव दीक्षित ने शेफाली की मां के सामने रखा है। यह सुनकर शेफाली के अन्तर्मन में छुपा हुआ आत्मसम्मान जाग उठता है। वह कहती है - " क्या ? क्या कहा, अम्मा ? किरन की शादी ? बकुल से ? किसने कहा तुझसे? उसके बाप ने ? (दांत किटकिटाकर) तून सुने लिया, अम्मा ? जिस मुंह से उसने आग की यह लपटें निकाली उसे तूने .....(हाफते हुए) उसे तूने ..... मिट्टी के तेल दिखाकर राख क्यों नहीं कर दिया होता।"[26] शेफाली अपनी मां को दोष देती है। स्वाभिमानी शेफाली को बड़े लोगों की बहू बनना बिल्कुल पसंद नहीं है। वह बकुल को सबक सिखाने का इरादा करती है - " बकुल जी .... बकुल बाबू ..... आप भी क्या याद करेंगे - एक हरिजन लड़की का सिखाया हुआ पाठ पूरी उम्र बैठकर रटते न रह जाएं तो मेरा नाम भी शेफाली नहीं।"[27] शेफाली अपनी इरादे पर अड़िग रहती है।

एक पुजारीन युवती तुलसी की पुजा करके आरती गा रही है। वह अपने प्रेम-विवाह में सफलता मिलने के लिए प्रेम का प्रतीक, सौभाग्य का प्रतीक तुलसी की आरती उतारती है। शेफाली को ऐसी बातों पर बिल्कुल विश्वास नहीं है। वह परंपरा का विरोध करती है। यहां नाटक का तीसरा दृश्य समाप्त होता है।

चौथे दृश्य की प्रारंभ मनन् और शेफाली के वार्तालाप से होती है। शेफाली के चेहरे पर उदासी है। वह अपने निर्णय पर अड़िग है। शेफाली के निर्णय को सुनकर मनन शेफाली के स्वाभिमान की प्रशंसा करता है - " लाभ तुम्हें हुआ ही कहां ? (भावुक होकर) लेकिन तुममें बड़ी हिम्मत है, शेफाली ! अपने सम्मान का जो मादा मैंने तुममें देखा है वहं किन्हीं बिरले लोंगो में ही होता है।"[28] शेफाली दु:खी है, वह अपना दु:ख भूलाने के लिए अपने बुआ के पास कानपुर जाना चाहती है। मनन शेफाली के उदासी को जानकर उसे प्रफुल्लित करना चाहता है। शेफाली को पता है कि, सत्यमेव दीक्षित मनन के पास भविष्य जानने के लिए आये थे। शेफाली मनन से यह जानना चाहती है कि सत्यमेव दीक्षित और बकुल ने जो चाल चली है, इसमें उन्हें सफलता मिलेंगी या नहीं। मनन शेफाली को अपरोक्ष रूप से सलाह देता है कि सत्यमेव दीक्षित और बकुल दोनों बाप-बेटे बड़े पाखंडी है, शेफाली अपने निर्णय पर अड़िग रहे। मनन को शेफाली पर पूरा विश्वास है। इसलिए वह शेफाली को धीरज बांधना चाहता है। शेफाली कानपुर जाने से पहले मनन को मिलकर जाने का आश्वासन देकर चली जाती है। यहां नाटक का चौथा दृश्य समाप्त होता है।

पांचवे दृश्य में बकुल और सत्यमेव दीक्षित मिस साहब के यहाँ आ बैठे है। मिस साहब के यहां शेफाली की मां नौकरी करती है। शेफाली के पिता बीमार होने के कारण घर चलाने की जिम्मेदारी शेफाली की मां पर आती है। जब तीन बेटियाँ का स्कूल का खर्च चलाने का प्रश्न आता है, तब शेफाली की शिक्षा का खर्च स्वयं मिस साहब ने ही उठाया था। शेफाली की बी.ए.तक की शिक्षा का खर्च मिस साहब ने किया था। सत्यमेव दीक्षित और बकुल मिस साहब की सहायता लेकर शेफाली को विवाह के लिए बाध्य करना चाहते हैं। सत्यमेव दीक्षित और बकुल को विवाह

जल्दी करना है, क्योंकि अब चुनाव कुछ ही दिनों में होनेवाले है। जल्दी विवाह करके वे राजनीति में अपना फायदा उठाना चाहते हैं। बकुल मिस साहब के सामने चुप्पी साधकर गूमसुम बैठा है। यह जानकर मिस साहब इस प्यार के निजी मामले में वह रूचि लेना नहीं चाहती। विवाह का यह निर्णय बकुल और शेफाली ये दोनों ही लेंगे, ऐसी अपनी राय स्पष्ट करके मिस साहब अपरोक्ष रूप से विरोध करती है। सत्यमेव दीक्षित अपने निर्णय पर अड़िग है। वह यहां से चला जाता है। बकुल भी जाने लगता है। उसे मिस साहब रोक लेती है, क्योंकि बकुल और शेफाली आपस में बातें करें। बकुल शेफाली को देखकर पहले जैसे बातें करता है। लेकिन शेफाली उनके साथ बातें करने में उत्साही नहीं है। बकुल शेफाली को कल रात के सपने के बारे में बताना चाहता है। सपने में दोनों का विवाह हुआ है, ऐसा कहता है। यह सुनकर शेफाली व्यंग्यभरी आक्रोश से बकुल के आगे के सपने का मंतव्य व्यक्त करती है - " इस लड़की को मैं आज ही अभी-अभी ब्याहकर ला रहा हूं। उतना ही हरिजनों का उध्दार भी। अब तक इस दिशा में हमने जितने प्रयास किए, वे सब असफल रहें..... अछूतोध्दार की इस दिशा में सभी प्रयत्न असफल होते देखकर मैंने निराशा की स्थिति में पहले इस हरिजन लड़की से प्रेम किया, फिर शादी कर ली .... लीजिए, भाइयों और बहनों, अब तो आप हमें ही देंगे ना अपना कीमती वोट। यही था न तुम्हारा सपना ?"[29] बकुल ने आज तक जो शेफाली के बारे में चाल चलाई इसकी विस्तृत जानकारी बकुल को सुनाकर उसके झूठे - प्रेम का पर्दाफाश कर देती है। बकुल क्रोधित होकर शेफाली को आगे की हकीकत सुनने की धमकी देकर वहां से चला जाता है। यहां नाटक का पांचवाँ दृश्य समाप्त होता है।

छठे दृश्य के प्रारंभ में मनन आचार्य यमुना घाट पर बैठा है। शेफाली कानपुर से लौट आयी है। शेफाली मनन से मिलकर एक सप्ताह बीता है। मनन शेफाली को शिवालय जाने का प्रस्ताव रखता है। दोनों तय करके शिवालय जाते हैं। शिवालय में एक नव-विवाहित जोड़ा उन्हें नजर आता है। अभी भी उन दोनों की आपस में बातें चलती है। जब शिवालय से शंख ध्वनि सुनाई देती है तब किरन दुल्हन बनी बकुल का हाथ पकड़े हुए नजर आती है। यहां नाटक समाप्त होता है।

2.3 ' दिल्ली ऊँचा सुनती है '

' दिल्ली ऊँचा सुनती है ' कुसुम कुमार का प्रसिद्ध नाटक है। प्रकाशन क्रम से यह उनका तीसरा नाटक है। प्रस्तुत नाटक का प्रथम संस्करण ' सरस्वती विहार, दिल्ली ' से सन् 1982 ई.में प्रकाशित हुआ है। प्रस्तुत नाटक का प्रथम मंचन दि.22 सितंबर, सन् 1981 ई.को त्रिपुरारि शर्मा एवं रवि शर्मा के निर्देशन में ' श्रीराम सेंटर फॉर आर्ट एण्ड कल्चर, नई दिल्ली ' में किया गया है। ' दिल्ली ऊँचा सुनती है ' नाटक संरचनात्मक दृष्टि से दो अंक और पांच-पांच दृश्यों में विभाजित है। नाटक में लगभग पंद्रह पात्र हैं। जिसमें चार प्रमुख पात्र हैं - माधोसिंह, मगनलाल, कमला और नीति। ग्यारह गौण पात्र हैं - मिस्टर ए., मिस्टर पी., अस्पताल कर्मचारी, चपरासी, युवक, डाकिया, डॉक्टर, जरीवाला, मंत्री, अलका और सोनी। नाटक में माधोसिंह और कमला दो केंद्रीय पात्र है। ' दिल्ली ऊँचा सुनती है ' नाटक में माधोसिंह एक सेवा - निवृत्त क्लर्क है और सेवा निवृत्ति के बहुत दिनों बाद पेंशन की धन राशि न मिलना, सरकारी तंत्र में फैली भ्रष्टता का ही द्योतक है। यही प्रस्तुत नाटक का मुख्य कथ्य है।

प्रस्तुत नाटक का नायक माधोसिंह भारत सरकार के वित्त विभाग में छत्तीस साल तक सरकारी क्लर्क की नौकरी करके सेवा - निवृत्त हुआ है। छत्तीस साल तक उन्होंने दिल्ली महानगर में यह छोटी-सी नौकरी करते हुए व्यतीत किये हैं। अपनी पेंशन के पैसों से वे नगर में रहकर परिवार के तीन लोगों की परवरिश नहीं कर सकते थे । इसी कारण वे अपने पैतृक गाँव अलीगढ़ के पास एक कस्बे में रहने का निश्चय करके अपना जीवन बीताना चाहते है। माधोसिंह के परिवार में कुल तीन सदस्य है, कमला पत्नी और नीति उनकी बेटी है।नीति परित्यक्ता है। वह सुंदर है, किन्तु अधिकांश समय अस्वस्थ, उदास रहती है। उसकी अस्वस्थता मनोवैज्ञानिक है।

मगनलाल, माधोसिंह का पुराना मित्र है। माधोसिंह ने मगनलाल का मकान किराये पर लिया है। माधोसिंह मगनलाल को अपना भाई मानता है। माधोसिंह का परिवार दिल्ली से अलीगढ़ आकर कुछ ही दिन हुए हैं। कमला का मन यहाँ अभी नहीं लगता इसलिए वह उदास है। माधोसिंह अपनी पत्नी कमला को समझाता है कि - " सब ठीक हो जायेगा। आदत की बात है और आदत डालनी ही पड़ेगी।"[30] नीति यहाँ आने पर अधिक उत्साहित है। वह हररोज सुबह अपने पिता के साथ घूमने जाती है। नीति की मानसिकता में आयें बदलाव के कारण मां-बाप दोनों खुश हैं।

मगनलाल माधोसिंह के हर सुख-दुःख में सहयोगी रहा है। वह किसी भी कीमत पर माधोसिंह को मद्द करने का आश्वासन देता है। मगनलाल के स्नेहपूर्ण व्यवहार से माधोसिंह अलीगढ़ में रहने का पक्का इरादा करता है। माधोसिंह को छः महीने से पेंशन नहीं मिली है, अतएव घर खर्च चलाना कठिन है। उसने ' पे ॲण्ड एकाउण्ट्स आफिस ' को अब तक छः बार रिमांइडर पत्र भेज दिया है। फिर भी पेंशन नहीं मिली है। अपनी घर की परेशानी का कारण बताकर भी पेंशन मिलने की संभावना नहीं है, यह जानकर कमला माधोसिंह को दिल्ली जाने के लिए कहती है।

माधोसिंह दिल्ली को पेंशन के मामले पूछताछ करने के लिए ' पे अॅण्ड एकाउण्ट्स आफिस ' में जाता है। वहा का अधिकारी मिस्टर ए. अपने चपरासी को अखबार और चाय लाने का आदेश देता है। चपरासी दयाराम को माधोसिंह की दया आती है। वह उनके आने का कारण पूछकर मिस्टर ए.को सहायता करने के लिए बिनती करता है। माधोसिंह मिस्टर ए.को काम के बारे में पूछता है। मिस्टर ए. अभी काम शुरू नहीं हुआ कहकर अपने रूखे व्यवहार का परिचय करा देता है। मिस्टर ए.की अनाकानी पर माधोसिंह दुःखी होता है। मिस्टर ए.के सहयोगी अधिकारी सोनी भी माधोसिंह के साथ रूखा व्यवहार करता है। माधोसिंह के प्रति उनके मन में जरा भी दया भाव उत्पन्न नहीं होता। टाइपिस्ट मिस अलका के आने पर अधिकारी उसके साथ बातचीत में व्यस्त रहतें हैं। माधोसिंह के पेंशन के बारे में फाइलें देखना छोड़ देते हैं। अलका माधोसिंह को पहचान लेती है, क्योंकि अलका माधोसिंह की बेटी नीति की सहेली है। अलका द्वारा माधोसिंह को पहचान लेने पर अफसर फाइलें देखना शुरू करते हैं। बाद में उन्हें पता चलता है कि माधोसिंह जीवित होते हुए रेकॉर्ड़ में उसकी मृत्यु हो चुकी है, ऐसा दर्ज किया है। माधोसिंह को अब प्रमाणित करना होगा कि वह जीवित है। माधोसिंह जीवित हूं यह प्रमाणित करने की अर्जी लिखकर घर लौट आते है।

माधोसिंह को जीवित है, यह प्रमाणित करने के लिए डॉक्टर से मेडिकल सर्टिफ़िकेट की जरूरी है। इसी सिलसिले माधोसिंह अपने पुराने परिचय के डॉक्टर मित्र के पास जाता है। डॉक्टर साहब को सब हकीकत बताने पर मेडिकल सर्टिफ़िकेट देने के लिए इंकार करता है। डॉक्टर खुद इस पेचीदगी में नहीं पड़ना चाहता है। जीवित होते आदमी को जिंदा है ' ऐसा ' सर्टिफ़िकेट देने में इंकार कर देने पर माधोसिंह को बहुत दुःख होता है। बीस साल के परिचय का डॉक्टर माधोसिंह के साथ रूखा व्यवहार करता है। यहां लेखिका ने डॉक्टर लोगों की ह्रदयहीनता पर प्रकाश डाला है।

माधोसिंह को किसी भी हालत में जीवित है, यह प्रमाणित करना अत्यंत जरुरी है। बर्थ सर्टिफ़िकेट प्राप्त करने लिए माधोसिंह को सरकारी अस्पताल जाना पड़ता है। माधोसिंह को सरकारी अस्पताल में लगातार तीन दिन कतार में रहना पड़ता है। पहले दिन वह सरकारी अस्पताल में अर्जी लिखकर घर लौट आता है। दूसरे दिन भी अस्पताल में मरीजों की लंबी कतार होती है। वहां के कर्मचारी बड़े स्वार्थी है। अपने परिचय के आदमी का पर्चा ऊपर रखकर नंबर में गड़बड़ी करता है। उस दिन लेड़ी डॉक्टर आती है। माधोसिंह की बारी आने से कुछ क्षण पहले लंच की घंटी बजती है। लेड़ी डॉक्टर वहां से चलने निकलती है। माधोसिंह उन्हें अनुनय स्वर में बिनती करता है। लेड़ी डॉक्टर भी माधोसिंह के साथ ह्रदयहीनता से पेश आती है। लेड़ी डॉक्टर कहती है - " जांच करनी है और दस्तखत करने हैं - इस छोटे से काम के लिए आप कल आइएगा ... कल ... कल देखेंगे।"[31] माधोसिंह डॉक्टरों की ह्रदयहीनता से दुःखी होता है।

तीसरे दिन माधोसिंह को मरीजों की कतार में डॉक्टर के आने का इंतजार करना पड़ता है। उस दिन डॉक्टर ही नहीं आता। माधोसिंह की अंतिमतः डॉक्टर से भेंट नहीं होती। आखिर माधोसिंह निराश होकर घर आता है। माधोसिंह को दिल्ली में तीन दिन रहने पर भी बर्थ सर्टिफ़िकेट नहीं मिलता। वह तीन रात्रि सड़क पर सोता है। रातभर खुली हवा में सोने से बीमार पड़ता है। माधोसिंह

को सरकारी अस्पताल से सर्टिफ़िकेट मिलता है, लेकिन ' माधोसिंह' की जगह ' माधवसिंह ' लिखकर मिलता है। माधोसिंह के पेंशन के कार्य में फिर रूकावट आती है। गलती सुधार करने के लिए अर्जी लिखकर भेजना पड़ता है। सरकारी डॉक्टरों के मनचाहे कारोबार से पेंशन के मामले में अवरोध उपस्थित होता है। अर्जी लिखने पर गलती सुधारकर सर्टिफ़िकेट वापस आता है। जिस दिन सर्टिफ़िकेट मिलता है उस दिन माधोसिंह सर्टिफ़िकेट को ' पे अॅण्ड एकाउण्ट्स आफिस ' के नाम भेज देता है। अब तो पेंशन मिलेगी यह उम्मीद रखकर माधोसिंह दिल्ली जाता है। ' पे अॅण्ड एकाउण्ट्स आफिस ' का डायरेक्टर जनरल मिस्टर पी. माधोसिंह क फाईल पर ' फार नैसेसरी एक्शन मिस्टर क्यू. ' ऐसी टिप्पणी लिखकर आगे की कार्रवाई के लिए मिस्टर क्यू.के पास भेज देता है। अफसर लोंगो की लालफीताशाही माधोसिंह को विवश करती है। माधोसिंह की विवशता को देखकर मिस्टर पी. समझा देता है कि - " दिस इज ' पे अॅण्ड एकाउण्ट्स आफिस '! यह कोई किसी के घर की टकसाल तो नहीं कि जो आएं, अपना हक बताए, पैसा ले और चलता बने।"[32] माधोसिंह मिस्टर पी. की हर बात पर ' जी - जी ' कहकर आखिर घर चला आता है। काग़ज-पत्रों की पूर्ति करने पर भी माधोसिंह को पेंशन नहीं मिलती। ' पे अॅण्ड एकाउण्ट्स आफिस ' की कार्य पद्धति के जरिए उसे और त्रस्त होना पड़ता है।

मगनलाल माधोसिंह को पेंशन के मामले में गृहमंत्री कुलजीवन लाल के पास ले जाता है। अब तो काम होगा यही आशा रखकर माधोसिंह और मगनलाल गृहमंत्री से मिलने जाते हैं। मगनलाल मंत्री जी से बिनती करता है - " मुझे काम नहीं चाहिए मंत्री जी ... यह बड़े भाई है ... इनका एक काम किसी सरकारी दफ्तर में फंसा है ... आठ महीने से कितने ही चक्कर लगा चुके है, मामला वही अटका है, किरपा करके इनकी सुन लिजिए।"[33] मंत्री जी मगनलाल की बिनती को सुनता है, लेकिन वह भी आत्मविश्वास से नहीं कहता कि वह काम जरूर करेगा। महीने पहले मंत्री जी की पार्टी की पार्लामेंट में मैजोरिटी थी, अब अर्थमंत्री दूसरी पार्टी का आदमी है। इसलिए मंत्री जी इस काम के बारे में अनिश्चितता प्रकट करता है। मगनलाल के बिनती पर मंत्री जी फायनैन्स सेक्रेटरी को फोन करके पेंशन के बारे में जल्द निर्णय लेने के लिए कहता है - " कौन, सक्सेना जी ? मैं कुलजीवन लाल बोल रहां हूं। यार, आज आपका विक्टिम यानी आपके विभाग का विक्टिम ... आप लोगों ने ऐसी गत बनाई बेचारे की ... अब कैसे क्या तो वह खुद ही आकर बताएगा आपको ... उसे आपके पास भेज रहां हूं ... उसकी बात जरूर सुन लिजिएगा और हो सके तो मद्द भी कीजिएगा ... मेरा ? मेरा खास कुछ नहीं, पर इंसानियत का भी एक रिश्ता होता है यार!"[34] मंत्रीजी का रूखा व्यवहार माधोसिंह को और अधिक विवश करता है। मंत्री जी से मिलकर माधोसिंह और मगनलाल दोनों घर लौट आते हैं।

माधोसिंह और मगनलाल घर वापस आनेपर घर सुनसान लगता है। जिस दिन माधोसिंह और मगनलाल दिल्ली चले गए उस दिन नीति आत्महत्या कर लेती है। कमला दुःख में हताश होकर घर के एक कोने में पड़ी है। माधोसिंह नीति की मृत्यु का समाचार सुनकर अंदर से टूट जाता है। वह अपनी व्यथा व्यक्त करता है - " मुझे किसी चीज की आस नहीं अब ... नीति बेटी मेरे होते

चल बसी मगना, कौनसी आस बची है, अब मेरे लिए ?"[35] माधोसिंह फिर भी इस आघात से संभल जाता हैं। इतने सारे प्रयास करने पर दिल्ली से और एक पत्र आता है। पत्र पढ़ने से पता चलता है कि अर्थ सचिव ने और एक एन्क्वायरी करने के लिए इन्वैस्टीगेशन ऑफिसर की नियुक्ति की है। सरकारी दफ्तरों की रूकावट के कारण आखिर माधोसिंह को पेंशन नहीं मिलती। वह अपनी पेंशन की आशा को मौत के हवालें कर गिर जाता है। माधोसिंह की मृत्यु के चार महीने बाद ' पे अ‍ॅण्ड एकाउण्ट्स आफिस ' से पेंशन मिलने की रजिस्ट्री आती है। कमला इस रजिस्ट्री को अस्वीकार कर देती है। यहां नाटक समाप्त होता है। प्रस्तुत नाटक में सरकारी दफ्तरों में चल रही लालफीताशाही, अधिकारियों की हृदयहीनता, मनचाहा कारोबार का यथार्थ दर्शन होता है।

निष्कर्ष : -

साठोत्तरी हिंदी नाटकों में कुसुम कुमार के नाटक अपना विशिष्ट स्थान रखते हैं। कुसुम कुमार के सभी नाटक प्रयोगधर्मी है। शैली, शिल्प और कथ्यगत प्रवृत्तियों की दृष्टि से कुसुम कुमार के नाटक विशेष महत्व रखते हैं। शैली, शिल्प और कथ्य, इन तीनों स्तरों पर नयी प्रयोगात्मक प्रवृत्ति के कारण कुसुम कुमार के नाटक रंगमंचीय दृष्टि से सफल हैं।

कुसुम कुमार द्वारा लिखित ' ओम् क्रांति क्रांति ' नाटक में शिक्षा व्यवस्था में फैली अराजकता की स्थिति को दिखाने का प्रयास किया गया है। प्रस्तुत नाटक में शिक्षकों की उत्तरदायित्वहीनता और विद्यार्थियों की विवशता दिखाई देती है। ' ओम् क्रांति क्रांति ' नाटक तीन दृश्यों में संपन्न हुआ है। प्रस्तुत नाटक में नौ स्त्री पात्र और पांचू केवल एक मात्र पुरूष पात्र है। स्त्री पात्रों की संख्या अधिक रखना यह लेखिका के प्रयोगधर्मिता का परिचायक है। लेखिका ने प्रस्तुत नाटक के माध्यम से सामूहिक क्रांति को महत्त्व दिया है। कोई भी क्रांति सामूहिक रूप से करने से इसमें निश्चित सफलता मिलती है। प्रस्तुत नाटक के माध्यम से नाटककारने शिक्षा क्षेत्र में फैली बुराइयों, अराजकता और दोषी शिक्षक वर्ग को दिखाने का प्रयास किया है। क्लासरूम की क्रांति पूरे शिक्षा विभाग के प्रति की गई क्रांति है, जिसमें शिक्षा व्यवस्था में आमूल परिवर्तन हो सके। यही प्रस्तुत नाटक का प्रमुख उद्देश्य रहा है। प्रस्तुत उद्देश्य की परिपूर्ति में लेखिका को पूर्णतः सफलता मिली है।

कुसुम कुमार द्वारा लिखित ' सुनो शेफाली ' नाटक बहुचर्चित रहा है। प्रस्तुत नाटक रंगमंचीय दृष्टि से एक सफल नाट्यरचना है। प्रस्तुत नाटक हरिजन लड़की शेफाली और समाजसेवी सत्यमेव दीक्षित पुत्र बकुल के माध्यम से राजनीतिक छल-प्रपंच का पर्दाफाश करता है। बकुल राजनीति में स्वार्थ साधने के लिए शेफाली के साथ प्यार का नाटक करता है। शेफाली जब उनके स्वार्थनीति को जान लेती है तब वह विद्रोही नारी के रूप में प्रस्तुत होती है। शेफाली स्वभाव से भोली - भाली किन्तु स्वाभिमानी लड़की है। वह अपनी स्वाभिमानी प्रवृत्ति के कारण घिनौनी राजनीति के लिए पवित्र प्रेम का बलिदान नहीं करना चाहती। परिस्थितिवश शेफाली की मां शेफाली को विवाह के लिए बाध्य करना चाहती है। लेकिन शेफाली कर स्वाभिमान परिस्थिति के

सामने हार नहीं मानता । बकुल का विवाह अंततः किरन से हो जाता है। कथ्य के स्तर पर यह नाटक एक हरिजन लड़की और उच्चवर्गीय नेता के पुत्र की प्रेम कहानी के माध्यम से सामाजिक व्यवस्था की गिरती दशा और राजनीतिक स्वार्थ का पर्दाफाश करता है। नाटक में रंगमंचनिर्देश, ध्वनि एवं संगीत की व्यवस्था, प्रकाश योजना, दृश्य सज्जा आदी का काफी संकेत दिया है। जिसमें नाटककार कुसुम कुमार के नाट्य कौशल्य का दर्शन होता है। भाषा, शैली, शिल्प और उद्‌देश्य में लेखिका कुसुम कुमार को पूर्णतः सफलता मिली है।

कुसुम कुमार द्‌वारा लिखित ' दिल्ली ऊँचा सुनती है ' नाटक में सरकारी कार्यालयों की अव्यवस्था से परेशान आदमी का स्वाभाविक और यथार्थ चित्र दृष्टव्य है। इसलिए यह नाटक कथ्य के स्तर पर व्यंग के माध्यम से पाठकों की मानसिक संवेदना और अनुभूति को जगाने में सफल रहा है। माधोसिंह पेंशन के मामले में दफ्तर में जगह - जगह पर भटकता रहता है। फिर भी पेंशन का मामला वहीं का वहीं रह जाता है। सरकारी दफ्तरों नें फैली भ्रष्टता, डॉक्टरों की हृदयहीनता, नेताओं के झूठे आश्वासन के कारण माधोसिंह को पेंशन के मामले में सरकारी दफ्तर में आठ महीने रगड़ना पड़ता है। फिर भी माधोसिंह को पेंशन नहीं मिलती । अंततः सहनशीलता की मर्यादा को तोड़कर प्रथम माधोसिंह की बेटी नीति आत्महत्या कर लेती है। बाद में सरकारी दमन नीति के सामने हार कर माधोसिंह भी अपनी जीवन लीला समाप्त कर देता है। नाटक में माधोसिंह की मृत्यु के बाद पेंशन की चिट्ठी मिलती है, जिसे कमला स्वीकार नहीं कर सकती, क्योंकि इसे स्वीकार करने का उसके पास औचित्य शेष नहीं। इस तरह भ्रष्टाचार पर आधारित व्यवस्था का यथार्थ चित्र प्रस्तुत करना नाटक का मूल उद्‌देश्य है। प्रस्तुत नाटक का कारूणिक वातावरण संवेदना और नाट्यानुभूति के स्तर पर पाठक या श्रोता को झकझोर कर देता है। प्रस्तुत नाटक में कुसुम कुमार ने पात्रों के नाम मिस्टर 'ए.', 'पी.', 'क्यू.' ऐसे संक्षिप्त नाम धरे हैं। प्रस्तुत नाटक के माध्यम से सरकारी दफ्तरों में फैंली अव्यवस्था, भ्रष्टता, अराजकता आदि की सच्ची तस्वीर उतारने में लेखिका ने सराहनीय प्रयास किया है।

कुल मिलाकर कुसुम कुमार ने तीनों नाटक कथ्य के स्तर पर पाठक या श्रोता को कुछ सोचने -समझने के लिए मजबूर करते हैं।

संदर्भ सूची

अं.क्र.	लेखक का नाम	पुस्तक का नाम	पृष्ठ क्रं.
1.	कुसुम कुमार	' ओम क्रांति क्रांति '	18
2.	वही	वही	35
3.	वही	वही	38
4.	वही	वही	40
5.	वही	वही	46
6.	वही	वही	48
7.	वही	वही	55
8.	वही	वही	60
9.	वही	वही	69
10.	वही	वही	73
11.	वही	वही	74
12.	वही	वही	75
13.	वही	वही	76
14.	वही	वही	वही
15.	वही	वही	77
16.	वही	वही	वही
17.	वही	वही	78
18.	वही	वही	79
19.	वही	' सुनो शेफाली '	19
20.	वही	वही	32
21.	वही	वही	36
22.	वही	वही	55
23.	वही	वही	58
24.	वही	वही	वही
25.	वही	वही	60
26.	वही	वही	62
27.	वही	वही	63
28.	वही	वही	68
29.	कुसुम कुमार	' सुनो शेफाली '	86

30.	कुसुम कुमार	' दिल्ली ऊँचा सुनती है '	16
31.	वही	वही	66
32.	वही	वही	83
33.	वही	वही	90
34.	वही	वही	94
35.	वही	वही	98

तृतीय अध्याय :

"विवेच्य नाटकों का तात्विक विवेचन"

तृतीय अध्याय - ' विवेच्य नाटकों का तात्विक विवेचन '

प्रस्तावना -

'नाटक' अन्य विधाओं की तुलना में सर्वाधिक रमणीय तथा सर्वाधिक लोकप्रिय माना जाता है। नाटक में दर्शक अपने जीवन को अपने ही सामने देखते है। अतः उसमें रम जाना सहज तथा स्वाभाविक है। डॉ.भगीरथ मिश्र के मतानुसार "नाटक में अतीत और भविष्य दोनों ही वर्तमान के रूप में प्रत्यक्ष कराये जाते हैं। इसके साथ-ही-साथ संगीत आदि कलाओं के कारण भी नाटक अधिक रमणीय हो जाता है। उसके भाव-प्रवाह में सारा दर्शक-समाज डूबता-उतरता रहता है। इसलिए नाटक सर्वाधिक रम्य काव्य का रूप माना गया है।"[1] दिन-ब-दिन नाटक यह विधा काफी लोकप्रिय होने का यही कारण है। डॉ.रेखा गुप्ता के मतानुसार - "पाश्चात्य काव्यशास्त्रियों ने नाटक के छः तत्व स्वीकार किये हैं -

1. कथावस्तु
2. चरित्र-चित्रण
3. कथोपकथन
4. देशकाल व वातावरण
5. शैली
6. उद्‌देश्य "[2]

उपर उल्लेखित तत्व अधिकांश विद्‌वानों द्‌वारा स्वीकृत है।

कुसुम कुमार के विवेच्य नाटकों का तात्विक विवेचन विद्‌वानों द्‌वारा स्वीकृत नाटक संबंधी आधुनिक तत्वों के आधार पर निम्न लिखित प्रकार से प्रस्तुत किया जा रहा है -

1. कथावस्तु
2. पात्र या चरित्र चित्रण
3. कथोपकथन या संवाद
4. देशकाल और वातावरण
5. भाषा शैली
6. उद्‌देश्य
7. शीर्षक की सार्थकता

3.1 'ओम् क्रांति क्रांति'

3.1.1 कथावस्तु -

नाटक का कथानक ही 'वस्तु' (plot) कहलाता है। उस वस्तु को ही 'कथावस्तु' कहते है। कथावस्तु नाटक का महत्त्वपूर्ण तत्व है। डॉ.भगीरथ मिश्र के मतानुसार - "कथावस्तु का संगठन नाटक का प्रमुख उद्देश्य है। क्योंकि इसमें कथोपकथन और अभिनय द्वारा ही कथानक का उद्घाटन होता है, अतः कथा का संगठन अत्यंत महत्वपूर्ण होता है। कथा के दो भेद हैं - 1. अधिकारिक 2. प्रासंगिक अधिकारिक कथावस्तु का संबंध नाटक के फलभोक्ता या अधिकारी से रहता है। इस का संबंध फल-प्राप्ति के कार्य से है। प्रासंगिक कथा का अधिकारिक कथा के साथ ऐसा संगठन होना चाहिए जिससे कहीं व्यर्थ न हो।"[3] कथावस्तु का महत्त्व अपने आप में अलग होता है। जिससे नाटक सुंदर बन पड़ता है।

'ओम् क्रांति क्रांति' नाटक में छात्र-आंदोलन पाया जाता है। मेनका, अनू, थैलमा और मीना महिला कालेज की भ्रष्ट लेक्चररों के विरोध में आंदोलन छेड़ देती हैं। महिला कालेज की लेक्चरर मिसिज दानी अपने मनचाहे कारोबार से कालेज में अराजकता फैला देती है। मिसिज दानी कक्षा में आते समय हमेशा देरी से आती है। कक्षा में आने पर इधर-उधर की बातें करके टाईम-पास करती है। मिसिज दानी के विरोध में आवाज उठाने के लिए मेनका, अनू, थैलमा और मीना छात्राओं को संघटित करती है। मिसिज पंत की तरह मिस सिंह भी विद्यार्थियों को सहायता करती है। मिस सिंह एक क्रांतिकारी महिला के रूप में परिचित है। वह स्टाफ काउंसिल की मीटिंग में कालेज के कर्मचारियों का पक्ष लेकर लड़ती है। मिस सिंह हमेशा विद्यार्थियों के हित के बारे में सोचती है। मिसिज दानी द्वारा सेकेंड इयर 'सी' क्लास की लड़कियों पर भयंकर होने का आरोप लगाने पर मिस सिंह कहती है कि - "भयंकर क्या महा भयंकर हैं। कुछ लड़कियाँ योग्य हैं इनमें से, पर है वे भी भयंकर। योग्यता असल में होती ही भयंकर है।"[4] मिस सिंह को मिसिज दानी का भ्रष्टतापूर्ण व्यवहार मालूम होने के कारण मिस सिंह छात्राओं का पक्ष लेकर छात्र-आंदोलन में सहायता करती है।

क्लास की सभ्य लड़की मेनका जोशी क्लास में चूप बैठी है, क्योंकि मिसिज दानी ने मेनका के बारे में प्रिंसिपल के पास शिकायत करने की धमकी दी थी। अनू इस पर इलाज बताकर कहती है कि - "मैं बताऊं एक इलाज ? पूरी क्लास मिलकर एक दिन दंगा कर दो ... प्रिंसिपल के पास शिकायत लेकर चलते हैं ... कुछ दम है तो चींटी को एक बार शक्कर से अलग कर दो।"[5] सभी लड़कियाँ अनू की राय को स्वीकार करके 'ओम् क्रांति क्रांति' का नारा लगा देती है। मिसिज दानी के विरोध में लड़ने के लिए सभी लड़कियाँ इकट्ठा होती है। थैलमा कहती है कि - "होगा कभी तो कुछ होगा... और नहीं तो किसी को कभी कुछ महसूस तो होगा ? मेनका, तू यों गुमसुम हुई क्यों बैठी है ? कागज निकाल... चल प्रिंसिपल के नाम एक पत्र लिखते हैं। सब लड़कियाँ उस पर

हस्ताक्षर करेंगी... देख लेंगे ... जो होगा देख लेंगे।"[6] मिसिज दानी का कक्षा में प्रवेश होने पर सभी लड़कियाँ अपने इरादे पर अड़िग रहकर न पढ़ने का विचार व्यक्त करती हैं। मिसिज दानी के भ्रष्ट व्यवहार के विरोध में आवाज उठाने का प्रयास डेढ़ साल से चल रहा है। लेकिन उन लड़कियों में इतना साहस नहीं हो रहा है। मेनका जोशी होशियार और सभ्य लड़की है। मिसिज दानी के विरोध में विद्रोह करने के लिए वह अकेली साहस करती है। मिसिज दानी क्लास में आने पर प्रथमतः अनू न पढ़ने का विचार व्यक्त करती है। बाद में सभी लड़कियाँ अनु के प्रस्ताव को स्वीकार करती है। क्लास में शोर मचाने पर मिसिज दानी मीरा पढ़ाना चाहती है। लेकिन लड़कियाँ सुनने के मूड़ में नहीं है। वे क्लास में जोर-जोर से शोरगुल मचा देती हैं। प्रिंसिपल का क्लास में प्रवेश होने पर क्लास में खामोशी छा जाती है। प्रिंसिपल मेनका जोशी और थैलमा रोबिंसन को खड़ा रहने का आदेश देती है। प्रिंसिपल मेनका जोशी पर आरोप लगाते हुए कहती है कि - " हां तो मेनका जोशी, तुम्हारी टीचर मिसिज दानी की तुम्हारे खिलाफ जो सख्त शिकायत है, वो यह कि तुम एक घमंड़ी लड़की हो। क्लास में तुम्हारे हाव-भाव बड़े विद्रोही किस्म के होते है। टीचर्स के लिए कभी - कभी तुम बड़े आपत्तिजनक रिमार्क्स भी प्रयोग में लाती हो।"[7] मेनका पर प्रिंसिपल द्वारा लगाए गए आरोप का खंड़न करने के लिए पूरी क्लास में शोरगुल होता है। आखिर प्रिंसिपल पक्षपाती नीती अपनाकर मेनका जोशी और थैलमा रोबिंसन का कालेज से रस्टीकेट करती है। प्रिंसिपल और मिसिज दानी के द्वारा किये गये अन्याय के विरोध में सभी लड़कियाँ ' ओम् क्रांति क्रांति ' का नारा लगाती है। मीना कहती है कि - " अब शांति स्थापित नहीं हो सकती गुरूदेव ... अब तो होगी और हो के रहेगी क्रांति, सिर्फ क्रांति।"[8] आखिर सभी लड़कियाँ ' ओम् क्रांति क्रांति ' का नारा लगा देती है। यहाँ पर नाटक समाप्त होता है। देश के किसी भी महाविद्यालय, विश्वविद्यालय के क्लास में यह दृश्य आज देखने को मिलता है। प्रस्तुत नाटक की कथावस्तु की विशेषताएँ यह है कि इसमें सुगठित चरित्रांकन, चुस्त, व्यंग्यात्मक संवाद और गत्यात्मक घटनाएँ आदि को नाटककारने कुशलता से चित्रित किया है। ' ओम् क्रांति क्रांति ' नाटक की कथावस्तु का प्रारंभ स्वाभाविक है। कथावस्तु रोचक, नाटकीय और प्रभावशाली है।

3.1.2 पात्र या चरित्र - चित्रण : -

पात्र तथा चरित्र - चित्रण यह नाटक का दूसरा प्रमुख एवं स्थायी तत्व है। नाटक की पात्र योजना, कथावस्तु के अनुकूल तथा विषय एवं नाटकीय घटनाओं से संबधित होनी चाहिए। डॉ. रेखा गुप्ता के मतानुसार - " अधिकांश पाश्चात्य विद्वानों ने नाटक में चरित्र चित्रण को कथावस्तु की अपेक्षा अधिक महत्त्व प्रदान किया है। केवल कथावस्तु और घटनावली ही यदि वे दो सुसम्बध्द होकर मानव - प्रकृति और चरित्र का चित्रण एवं विकास नहीं करते तो इन्हें सार्थक नहीं कहा जा सकता।"[9] वर्तमान युग में चरित्र - चित्रण नाटक के प्राण बन रहें है। आज चरित्र चित्रण में आदर्श की तुलना यथार्थ दृष्टि का विकास हो रहा है।

कुसुम कुमार ने विवेच्य नाटक ' ओम् क्रांति क्रांति ' समस्या प्रधान नाटक होने के कारण इसमें प्रमुख अथवा नायक - नायिका इस तरह के पात्र नहीं है। इसमें कोई केंद्रीय पात्र नहीं है। अनेक पात्रों को मिलाकर प्रस्तुत नाटक की घटनाओं को मूर्त स्वरूप दिया गया है। नाटक के पात्र - परिचय की सूची में दस पात्र अंतर्भूत है। दस पात्रों में से आठ पात्र प्रमुख तथा दो गौण पात्र के रूप में चित्रित है। प्रमुख पात्र है - मेनका, अनू, थैलमा, मीना, मिसिज दानी, मिसिज पंत, मिसिज मंगला, मिस सिंह है। गौण पात्र - पांचू और प्रिंसिपल है। प्रस्तुत नाटक में स्त्री पात्रों की बहुलता है। नारी को केंद्र बिंदु में रखकर नाटक की निर्मिति करना अपने आप में एक अनोखा प्रयोग हिंदी रंगमंच पर कुसुम कुमार ने प्रस्तुत किया है। प्रस्तुत नाटक के अंतर्गत आनेवाले पात्रों के चरित्र की विशेषताएँ निम्न प्रकार से हैं -

प्रमुख पात्र -

3.1.2.1 मेनका : -

' ओम् क्रांति क्रांति ' नाटक के प्रमुख पात्रों में से एक है - मेनका। वह एक होशियार और सभ्य लड़की है। मेनका महिला कालेज की सेकंड इयर ' सी ' कक्षा में पढ़ती है। मेनका के चरित्र की विशेषताएँ इस प्रकार से प्रस्तुत की जा सकती है।

3.1.2.1.1 अध्ययनशील लड़की : -

मेनका नियमित रूप से क्लास अटेंड करती है। अन्य लड़कियाँ मिसिज दानी का क्लास होता है, तो वे कैंटीन जाना अधिक पसंद करती है, क्योंकि मिसिज दानी हररोज देरी से आती है। ऐसा करना मेनका को पसंद नहीं है। मेनका नाटक के प्रारंभ में हमेशा ट्यूटोरियल की तैयारी करती हुई दिखाई देती है। वह अध्ययनशील है।

3.1.2.1.2 समय का ख्याल रखनेवाली लड़की : -

बेल बजने के पहले मेनका क्लासरूम में जाती है। ठीक समय पर पर कालेज आना और ठीक समय पर घर जाना यह उसका अच्छा गुण है। मेनका समय को अधिक महत्त्व देती है। छोटी - छोटी घटनाओं में उसका प्रस्तुत गुण दिखाई देता है।

3.1.2.1.3 शिक्षकों के प्रति आदरभाव : -

मेनका शिक्षिका की बेटी है। इसलिए वह किसी भी शिक्षक को आदर भाव से देखती है। जब थैलमा मिसिज दानी पर व्यंग्य कसती है, तब मेनका कहती है कि - " ग्रेट - व्रेट कुछ नहीं थैलमा, पर टीचर की इंसल्ट मुझसे नहीं होती। मम्मी भी तो टीचर है। "[10] मीना मिसिज दानी का नाम बिगाड़कर 'नादानी ' कहती है, तो मेनका सलाह देती है कि टीचर्स के नाम बिगाड़कर मत बोला कर। मेनका टीचर का आदर करती है और उनके साथ आदरभाव से व्यवहार करती है।

3.1.2.1.4 स्पष्ट वक्ता मेनका : -

मेनका स्पष्ट बोलनेवाली लड़की है, वह अपनी लेक्चरर मिसिज दानी को कहती है कि - " पता नहीं मैम आप अक्सर तो लेट आती है।"[11] मेनका मिसिज दानी के भ्रष्ट व्यवहार के विरोध में अकेली आवाज उठाती है। उसका यह रूप स्पष्ट वक्ता के समान है।

3.1.2.1.5 विद्रोही मेनका : -

मेनका में विद्रोही रूप पाया जाता है। मिसिज दानी के मनचाहे कारोबार के विरोध में विद्रोह प्रकट करती हुई मेनका कहती है - " मेरा घमेंड मेरा ही उध्दार नहीं होने देगा ना मैम ? मत हो मेरा उध्दार ... आप दूसरी लड़कियों का तो उध्दार कीजिए ? आपके हाथों उनका उध्दार भी नहीं होगा इतना निश्चित है।"[12] मेनका का विद्रोही रूप इस प्रकार दिखाई देता है। विद्रोह करते समय वह बिल्कुल नहीं हिचकिचाती।

3.1.2.2 अनू : -

अनू महिला कालेज की होशियार लड़की है। वह अपना ट्यूटोरियल घर में तयार करके लायी है। अनू अपनी सहेली मेनका, थैलमा और मीना को छोड़कर नहीं रह सकती, चाहे कैंटीन जाना हो या क्लास अटेंड करना हो। वह सहेलियों के साथ घुल-मिलकर रहनेवाली लड़की है।

अनू में एक अच्छे कलाकार का भी गुण है, वह अपनी सहेलियों के साथ व्यवहार करते वक्त कलाकार ढ़ंग में बातें करती है। अनू की पारिवारिक परिस्थिति भी अच्छी है। उसके घर में मनोरंजन के लिए टी.व्ही.है। वह मनोरंजनार्थ देखा करती है। अनू अपनी सहेलियों के साथ बातें करते समय ' यार ' शब्द का बार-बार प्रयोग करती है। अनू प्रसन्न, हँसमुख, व्यंग्य और मज़ाक करनेवाली लड़की हैं। अनू अपने भावी जीवन के प्रति सज़ग है, सिर्फ अपने प्राध्यापकों की प्रशंसा करना उसे उचित नहीं लगता। वह कहती है कि - " यार तुम लोग टीचर के इश्क में ही फंसकर रह जाओगी तो तुम्हारे उन भावी प्रेम-संबंधों का क्या होगा, जिन पर तुम्हारे अगले दस वर्षों का स्वास्थ्य निर्भर करता है।"[13] अनू में ठीक समय पर निर्णय लेने की क्षमता भी है। मिसिज दानी के विरोध में विद्रोह करने के लिए वह सहलियों को सलाह देती हुई कहती है कि - " पूरी क्लास मिलकर एक दिन दंगा कर दो ... प्रिंसिपल के पास शिकायत लेकर चलते है ... कुछ दम है तो चींटी को एक बार शक्कर से अलग कर दो।"[14] अनू में विद्रोही वृत्ति पायी जाती है।

अनू एक होशियार, होनहार कलाकार, हँसमुख, अन्याय के प्रति लड़नेवाली लड़की के रूप में लेखिका ने उसका चरित्र प्रस्तुत किया है।

3.1.2.3 थैलमा रोबिंसन :-

कुसुम कुमार द्वारा लिखित ' ओम् क्रांति क्रांति ' नाटक में चित्रित पात्र थैलमा रोबिंसन की विशेषताएँ इस प्रकार से हैं -

3.1.2.3.1 होशियार : -

थैलमा महिला कालेज की सेकंड इयर ' सी ' कक्षा की छात्रा है। थैलमा की हर बातों में उनकी होशियारी स्पष्ट दिखाई देती है। मिसिज पंत थैलमा की प्रशंसा करती हुई कहती है कि - " तेज नहीं मिसिज मंगला, बड़ी इंटेलिजेंट ... बड़ी क्रिएटिव लड़की है ये ... कार्टून इतने अच्छे बनाती है कि लगता है, पांच नहीं इस लड़की की पचास सेंसिज है।"[15] थैलमा होशियार लड़की है। उसकी होशियारी उसके क्लास व्यवहार में दिखाई देती है।

3.1.2.3.2 हँसी - व्यंग्य करनेवाली थैलमा : -

थैलमा रोबिंसन हँसी - मजाक करनवाली लड़की है। साथ ही साथ अच्छी व्यंग्यकार भी है। वह मिसिज दानी पर हमेशा व्यंग्य कसती है। थैलमा कहती है कि - " तू इतना चमक क्यों उठी हैं ? आएंगी तो वह हमेशा की तरह अपनी चाल से ही ... आधा पीरियड सरकने को होगा तो तब आएंगी श्रीमती दानी ... महाज्ञानी अजब परानी।"[16] थैलमा व्यंग्यकार के रूप में नजर आती है। उसका व्यंग्य उसकी वाणी में नजर आता है।

3.1.2.3.3 प्राध्यापिकाओं के प्रति आदर भाव : -

थैलमा एक ओर मिसिज दानी पर व्यंग्य कसती है, तो दूसरी ओर वह मिसिज पंत की प्रशंसा करती है। थैलमा प्रशंसा करती हुई कहती है कि - " बहुत - बहुत प्यारी टीचर हैं मिसिज पंत ! पढ़ाती हैं जब वे तो मेरा दिल बहार को आता है ! हँसती है तो लगता है उनकी हँसी की नकल उतार लो ... आँखों में चमक इतनी है ... इतनी है उनके कि बस ! ... जी चाहता है, हम भी उस चमक की एक बूँद अपने अंदर ले।"[17] उसका यह कथन अध्यापिका के प्रति आदर भाव व्यक्त करता है।

3.1.2.3.4 विद्रोही थैलमा : -

थैलमा के चरित्र की विशेषता यह है कि उसके चरित्र का गुण विद्रोही है। थैलमा रोबिंसन के चरित्र में विद्रोह कूट - कूट कर भरा हुआ है। इसी कारण महिला कालेज की भ्रष्ट लेक्चरर मिसिज दानी के विरोध में आवाज उठाने का काम थैलमा करती है। महिला कालेज की छात्राओं को संघटित कर क्लासरूम में क्रांति करती है। थैलमा विद्रोही लड़की होने के कारण महिला कालेज में फैली अराजकता दूर करने में सफल होती है। थैलमा के चरित्र में अच्छें व्यंग्यकार, होशियार लड़की, उसका विद्रोही रूप आदि गुण पाये जाते हैं।

3.1.2.4 मीना : -

मीना ' ओम् क्रांति क्रांति ' नाटक का प्रमुख पात्र है। उसका चरित्र पाठकों या दर्शकों के सामने इस प्रकार चित्रित हुआ है।

3.1.2.4.1 हँसी - मजाक, व्यंग्य करनेवाली लड़की : -

मीना हँसी - मजाक करनेवाली लड़की है। वह अच्छी व्यंग्यकार भी है। वह मिसिज दानी की नक़ल करती हुई कहती है कि - " समय मत बरबाद कीजिए ! समय अमूल्य है ... अरे यह पूरी क्लास गायब कहां है ? तुम लोग कुल चार ही लड़कियाँ हो यहाँ ?... अनुशासनहीनता की भी कोई हद होती है... मुझसे तो इसकी मिसाल तक देते नहीं बनता ... तुम लोंग चाहो तो तुम भी जा सकती हो... ।"[18] मीना अपनी व्यंग्य- बाणों से भ्रष्ट लेक्चरर मिसिज दानी को अपना लक्ष्य बनाती है।

3.1.2.4.2 अन्याय के विरोध में लड़नेवाली मीना : -

मीना अन्याय के विरोध में लड़नेवाली युवती है। महिला कालेज की भ्रष्ट लेक्चरर मिसिज दानी के विरोध मे लड़ते समय वह साहस से काम लेती है। मीना विद्रोह प्रकट करती हुई करती है कि - " अब शांति स्थापित नहीं हो सकती गुरूदेव ... अब तो होगी और होके रहेगी क्रांति, सिर्फ क्रांति।"[19] मीना महिला कालेज में फैली अराजकता, भ्रष्टाचार को समूल उखाड़कर फेंक देने के लिए साहस से काम करती है।

मीना हँसी - मजाक करनेवाली, सफल व्यंग्यकार और अन्याय - अत्याचार के विरोध में लड़नेवाली साहसी लड़की के रूप में चित्रित है।

3.1.2.5 मिसिज दानी : -

मिसिज दानी, ' ओम् क्रांति क्रांति ' नाटक का प्रमुख पात्र है। उसके चरित्र की विशेषताएँ निम्न प्रकार से प्रस्तुत हैं -

3.1.2.5.1 उत्तरदायित्वहीन प्राध्यापिका : -

मिसिज दानी महिला कालेज में हिंदी की लेक्चरर हैं। मिसिज दानी ने अपने कालेज में अराजकता फैला दी है। कक्षा में आते समय देरी से आती है। दस मिनट शेष होते हैं तब पढ़ाने का प्रारंभ करती है। कक्षा में जाते समय इलायची खाना, स्टाफ मेंबर के साथ अनुचित व्यवहार से महिला कालेज में अराजकता फैला दी है। इस संदर्भ में निम्न वार्तालाप प्रस्तुत है -

" मीना - पचास मिनट के पीरियड में मिसिज दानी दस मिनट दायें और बीस मिनट बायें रखती हुई कुल पंद्रह मिनट हाथ में रखती हैं हमारे और वह भी ...

अनू - कभी बातचीत में, कभी अपनी प्रशंसा में, कभी उल्टे - सीधे व्याख्यानों में लगाकर चली जाती है।"[20]

मिसिज दानी अपना कर्तव्य निभाते समय दायित्वहीन का व्यवहार करती है।

3.1.2.5.2 मनमानी कारोबार करनेवाली : -

मिसिज दानी ने महिला कालेज में मनमानी कारोबार से अराजकता फैला दी है। पीएच्.डी उसने सिर्फ कहने भर के लिए की है। विद्यार्थियों द्वारा पूछे गये प्रश्नों का उत्तर वह ठीक तरह से नहीं देती। विद्यार्थियों के हित के बारे में कभी सोचती ही नहीं, सिर्फ नौकरी करना है, इसी उद्देश्य से अध्यापन का कार्य करती है।

3.1.2.5.3 झगड़ालू दानी : -

मिसिज दानी में झगड़ालू वृत्ति के दर्शन होते हैं। मिसिज दानी सेकंड इयर ' सी ' क्लास की लड़कियों के बारे में प्रिंसिपल के पास शिकायत करने पर मिसिज पंत विद्यार्थियों का पक्ष लेती है। सेकंड इयर ' सी ' क्लास की लड़कियाँ विद्रोही होने के कारण मिसिज दानी उनके विरोध में प्रिंसिपल के पास शिकायत करके आती है। मिसिज दानी और मिसिज पंत दोनों सेकंड इयर ' सी ' के क्लास के अधिकार पर झगड़ती है।

इस प्रकार मिसिज दानी अशिष्ट, उत्तरदायित्वहीन नौकरीपेशा नारी के रूप में चित्रित है।

3.1.2.6 मिसिज पंत : -

मिसिज पंत ' ओम् क्रांति क्रांति ' नाटक का प्रमुख पात्र है। मिसिज पंत की चारित्रिक विशेषताएँ निम्न प्रकार से हैं -

3.1.2.6.1 कर्तव्यनिष्ठ प्राध्यापिका : -

मिसिज पंत महिला कालेज में अंग्रेजी की लेक्चरर है। मिसिज पंत कर्तव्यनिष्ठ प्राध्यापिका है। मिसिज पंत विद्यार्थियों को भ्रष्ट लेक्चरर मिसिज दानी के विरोध में विद्रोह करने के लिए सहयोग देती है। मिसिज पंत अध्यापन के साथ - साथ विद्यार्थियों के हित के बारे में भी सोचकर उन्हें प्रेरणा देती है। मिजिस दानी सेकंड इयर ' सी ' क्लास के विद्यार्थियों पर विद्रोही, घमंडी, नालायक होने का आरोप लगाती है। इस पर मिसिज पंत विद्यार्थियों का पक्ष लेते हुए कहती है कि - " सच ? तो फिर इतना और बता डालिए कि वह बदतमीज, नालायक और घमंडी क्यों है ?"[21] मिसिज पंत सत्य का पक्ष लेकर विद्यार्थियों द्वारा भ्रष्ट लेक्चरर मिसिज दानी के विरोध आवाज उठाना चाहती है। यह गुण उसकी कर्तव्यनिष्ठा का अच्छा प्रमाण है।

3.1.2.6.2 अनुशासनप्रिय प्राध्यापिका : -

मिसि पंत अनुशासनप्रिय प्राध्यापिका है। स्वयं अनुशासन का पालन करती है। अपनी सहकर्मी लेक्चरर और विद्यार्थियों को अनुशासन में रहने के लिए बाध्य करती है। लेक्चरर मिसिज दानी कक्षा में और स्टाफ- रुम में अनुशासनहीन व्यवहार करती है। मिसिज दानी कक्षा में जाते समय इलायची खाती है। इस पर मिसिज पंत कहती है कि - " मुझे क्लास में टीचर का मुँह चलाना अच्छा नहीं लगता।"[22] इससे स्पष्ट होता है कि पंत अनुशासनप्रिय प्राध्यापिका है।

3.1.2.6.3 विद्यार्थीप्रिय प्राध्यापिका : -

मिजिस पंत विद्यार्थियों में प्रिय है। दयालू स्वभाव के कारण विद्यार्थियों में अधिक लोकप्रिय है। थैलमा मिसिज पंत की प्रशंसा करती हुई कहती है कि - " बहुत - बहुत प्यारी टीचर है मिसिज पंत ! पढ़ाती हैं जब वे तो मेरा दिल बहार को आता है। हँसती हैं तो लगता है उनके कि बस ! ... जी चाहता है, हम भी उस चमक की बूँद अपने अंदर उतार लें !"[23]

मिसिज पंत विद्यार्थियों के हित के बारे में सोचनेवाली प्राध्यापिका है। मिसिज पंत कर्तव्यनिष्ठ, विद्यार्थीप्रिय, दयालु प्राध्यापिका है। उनकी 'कथनी और करनी में कोई अंतर नहीं है।'

3.1.2.7 मिसिज मंगला : -

मिसिज मंगला ' ओम् क्रांति क्रांति ' नाटक का प्रमुख पात्र है। उसके चरित्र की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं -

3.1.2.7.1 महिला कालेज की प्राध्यापिका : -

मिसिज मंगला महिला कालेज में हिंदी की लेक्चरर है। उन्होंने कबीर के व्यक्तित्व पर पीएच्.डी. की उपाधि प्राप्त की है। मिसिज मंगला प्रस्तुत नाटक में प्राध्यापिका के रूप में चित्रित है।

3.1.2.7.2 तटस्थ नौकरीपेशा नारी : -

मिसिज मंगला तटस्थ नौकरीपेशा नारी के रूप में व्यवहार करती है। मिजिस दानी भ्रष्ट लेक्चरर होते हुए भी वह उनका विरोध नहीं करती। मिसिज पंत द्वारा विद्यार्थियों की प्रशंसा करना भी उन्हें उचित नहीं लगता। इसलिए वह मिसिज पंत पर आरोप लगाती हुई कहती है कि - " भई, आप बहुत रियायत करती है लड़कियों के साथ मिसिज पंत।"[24] मिसिज मंगला में त्याग की अपेक्षा अधिक व्यवहारिकता दिखाई देती है। मिसिज मंगला सिर्फ नौकरी परस्त नारी के रूप में चित्रित है।

3.1.2.7.3 समय का ख्याल रखनेवाली प्राध्यापिका : -

मिसिज मंगला बेल बजने पर उचित समय में कक्षा में जाती है। मिसिज मंगला कैंटीन बॉय पांचू को गोल्ड - स्पॉट लाने का आर्ड़र देती है। लेकिन कलास का टाईम होने पर कहती है कि -

" पांचू, हमारा गोल्ड - स्पॉट रहने दो ... बेल बजने को है ... ।"[25] मिसिज मंगला समय का ख्याल रखनेवाली प्राध्यापिका के रूप में दर्शकों के सामने आती है।

मिसिज मंगला तटस्थ नौकरीपेशा नारी, समय का ख्याल रखनेवाली प्राध्यापिका के रूप में चित्रित है।

3.1.2.8 मिस सिंह : -

मिस सिंह ' ओम् क्रांति क्रांति ' नाटक का प्रमुख पात्र है। मिस सिंह के चरित्र की विशेषताएँ निम्नलिखित प्रकार से हैं -

3.1.2.8.1 महिला कालेज की प्राध्यापिका : -

मिस सिंह महिला कालेज में इतिहास की लेक्चरर है। मिस सिंह अविवाहित है। मिस सिंह विद्यार्थियों के हित में अपना हित माननेवाली प्राध्यापिका है। मानों उन्होंने अपना जीवन केवल शिक्षा क्षेत्र के लिए समर्पित किया है, ऐसा ही लगता है।

3.1.2.8.2 विद्रोही प्राध्यापिका : -

मिस सिंह प्राध्यापिका के रूप में चित्रित है। मिसिज दानी जैसे अनुशासनहीन, भ्रष्ट लेक्चरर ने महिला कालेज में अराजकता फैला दी है। मिसिज दानी के विरोध में लड़ने के लिए मिस सिंह विद्यार्थियों को अप्रत्यक्ष रूप से सहायता करती है। मिस सिंह हमेशा क्रांति का पक्ष लेकर अन्याय के विरोध में लड़नेवाली प्राध्यापिका है। स्टाफ काउंसिल की मीटिंग में कालेज कर्मचारियों का पक्ष लेकर लड़ती है। प्रस्तुत संदर्भ में मिस सिंह कहती है कि - " ' ओम् शांति शांति ' नहीं कह सकीं ... आपकी तरह ! ... सिर्फ अपने मान - अपमान की बात हो या व्यक्तिगत लाभ - हानि की तो सभ्यता की हर ऊँचाई को छुआ जा सकता है, लेकिन विद्यार्थियों के हित और कर्मचारियों की आवाज पर बरफ रखते देखकर शांति शांति की जगह हमारे मुंह से तो जबरन ' शेम - शेम' निकलता है।"[26] मिस सिंह विद्रोही नारी के रूप में नजर आती है। वह हमेशा सत्य का पक्ष लेकर लड़ती है। इसलिए उनके चरित्र में विद्रोह भरा हुआ है।

3.1.2.8.3 छात्र - प्रिय प्राध्यापिका : -

मिस सिंह विद्यार्थियों को स्टाफ - रुम में बुलाकर इतिहास की पुस्तक देती है। यह मिसिज दानी को उचित नहीं लगता। इसलिए मिसिज दानी कहती है कि - " मिस सिंह स्टाफ - रूम में लड़कियों का आना कुछ ठीक नहीं लगता।"[27] मिस सिंह विद्यार्थियों को सहायता करके अपना समस्त समय विद्यार्थियों के हित के लिए देती है। प्रस्तुत संदर्भ में मिसिज दानी कहती है कि - " आप अपने स्टूडेंटस् को इतना ज्यादा समय देती हैं कि वे हमें तो एकदम निकम्मा समझती हैं। वे ये

आस लगाए रहती हैं कि हम भी उन्हें आपकी तरह अतिरिक्त समय देंगी।"[28] मिस सिंह का छात्र-प्रिय रूप प्रस्तुत नाटक में नजर आता है।

मिस सिंह प्रस्तुत नाटक में त्यागी, निस्वार्थी, विद्यार्थियों के हित के लिए सोचनेवाली प्राध्यापिका के रूप में चित्रित है।

गौण पात्र : -

प्रस्तुत नाटक में प्रिंसिपल और पांचू गौण पात्र के रूप में चित्रित हैं। उनका कार्य प्रसंगानुकूल है। जो कथावस्तु को आगे बढ़ाने में सहायक है।

3.1.3 कथोपकथन या संवाद : -

कथोपकथन या संवाद नाटक का सबसे महत्वपूर्ण तत्त्व होता है। इसे नाट्यकला का मूल और आदि प्रेरणास्त्रोत कहा जाता है। डॉ.शांति मलिक कथोपकथन के महत्त्व को इस प्रकार स्वीकार करते हैं कि - " नाटक के विभिन्न उपकरणों को एकसूत्र में पिरोकर, नाटक का रूप प्रदान करनेवाला तथा नाट्यशरीर में सजीवता का संचार करनेवाला संवाद एकमात्र तत्व है।"[29] संवादों के माध्यम से ही नाटककार अपने विचार अथवा उद्‌देश्य को दर्शकों, पाठकों के सामने प्रस्तुत करता है। डॉ.रेखा गुप्ता के मतानुसार - " पर्याप्त सीमा तक सफलता कथोपकथनों के कुशल एवं कलापूर्ण प्रयोग पर निर्भर करती है। कथोपकथन ही ऐसा माध्यम है, जिसके द्‌वारा नाटककार पात्रों का वर्णन करता है; अपने उद्‌देश्य की स्थापना करता है तथा कथावस्तु को आगे बढ़ाता है।"[30] इससे स्पष्ट होता है कि संवादों में कथानक को गति देना, पात्रों का चरित्र चित्रण करने तथा संवादों में उद्‌देश्य की ओर ले जाने की क्षमता होती है। संवादों में संक्षिप्तता, स्वाभाविकता, व्यंग्यात्मकता के गुणों का होना भी महत्त्वपूर्ण होता है। जिससे नाटक सफल बनता है।

कुसुम कुमार द्‌वारा लिखित ' ओम् क्रांति क्रांति ' नाटक के संवादों में संक्षिप्तता, स्वाभाविकता, व्यंग्यात्मकता आदि गुण पाये जाते हैं।

3.1.3.1 कथानक को गति देनवाले संवाद : -

नाटक को गति प्रदान करनेवाले संवाद नाटक में प्रस्तुत होने के कारण नाटक प्रवाहमयी बनता है।

" मीना - देख मीना, तू टीचर्स के नाम बिगाड़कर मत बोला कर।

थैलमा - किसी और टीचर के नाम तो हम बिगाड़कर नहीं बोलते ना मेनका ? लेकिन हाय री हमारी बदनसीबी, हम करे क्या ? यह मिसिज दानी और वह मिसिज बुखारी ... दोनों हमारा फ्युचर चाट जाएंगी और हम खड़े देखते रह जाएंगे अपना ...

अनू - थर्ड डिवीजन का सर्टिफिकेट ! सैड याऽऽर।"[31]

15211

प्रस्तुत संवाद के माध्यम से कथानक को गति मिली हे, जिससे भविष्य की घटनाओं का संकेत मिलता है।

3.1.3.2 संक्षिप्त सारगर्भित संवाद : -

संवादों का संक्षिप्त होना उसकी प्रभावात्मकता में वृद्धि करता हैं। ' ओम् क्रांति क्रांति ' नाटक में संक्षिप्त संवाद बड़े रोचक बने हैं -

" थैलमा - हाय राम ! मैंने सोचा वे आ गई !

मीना - वो कौन ?

थैलमा - वो मिसिज दानी, कल से डॉक्टर मिसिज दानी हो गई, पता है कुछ ?

थैलमा - पीएच्.डी कर ली उसने भी ?"[32]

3.1.3.3 व्यंग्यात्मक संवाद : -

नाटक में सामाजिक विसंगतियों को व्यक्तिगत दुर्बलताओं को दर्शकों के सामने रखने के लिए व्यंग्यात्मक संवादों का प्रयोग किया जाता है। कुसुम कुमार के नाटकों में व्यंग्यात्मक संवादों के दर्शन होते हैं। मिस सिंह अपने सहकर्मी लेक्चरर मिसिज दानी के साथ व्यंग्य भरे शब्दों में बातचीत करते हुई कहती है -

" मिसिज दानी - आपकी नॉलेज की सभी लड़कियाँ वैसे ... तारीफ बहुत करती हैं।

मिस सिंह - अरे वा ! मेरी तारीफ ?

मिसिज दानी - नहीं तो क्या मेरी ?

मिस सिंह - आपकी तो सचमुच बड़ी तारीफ करती हैं वे कहती है, मिसिज दानी बहुत इंटरैस्टिग हैं। पूरा साल चींटियों को शक्कर खिलाती रहती हैं।"[33]

मिसिज दानी और मिस सिंह के बीच जो संवाद हुआ है, वह व्यंग्यात्मक संवाद का सुंदर उदाहरण है।

कुसुम कुमार के ' ओम् क्रांति क्रांति ' नाटक में संक्षिप्त और व्यंग्यात्मक संवाद बड़े रोचक बनें हैं।

3.1.4 देशकाल और वातावरण : -

देशकाल और वातावरण नाटक का अनिवार्य तत्त्व है। श्रीमती गिरिजा सिंह के मतानुसार - " पात्रों के चरित्र में वास्तविकता के आभास के लिए उनके चारों ओर की परिस्थिति, वातावरण तथा देश-काल की योजना की विशेष आवश्यकता पड़ती है।"[34] देशकाल वातावरण से नाटक प्रभावपूर्ण बनता है। डॉ. रेखा गुप्ता के मतानुसार - " नाटक का संबंध किसी न किसी देश, काल अथवा वातावरण से अवश्य होता है। देश का अभिप्राय उस स्थान से है, जहां कथावस्तु की घटना घटित होती है, काल का अर्थ समय से तथा वातावरण का अर्थ, स्थान एवं समय के अनुसार

परिस्थितियों का निर्माण।"[35] नाटक में देशकाल तथा वातावरण का यथार्थ और हृदयग्राही चित्रण होना चाहिए, जिससे पात्रों के व्यक्तित्व में स्पष्टता और यथार्थता आ जाती है।

' ओम् क्रांति क्रांति ' नाटक में देशकाल तथा वातावरण का ध्यान रखा गया हैं। प्रस्तुत नाटक शिक्षा व्यवस्था पर आधारित है। जिसमें कालेज के वातावरण का चित्रण मिलता है। प्रारंभ में नाटककार ने संकेत दिया है कि - " किसी एक महिला कालेज का क्लासरूम परदा उठने पर केवल एक लड़की डैस्क पर मुंह टिकाए बैठी है - अपने जूतों से कुछ आवाज भी कर रही है - लेकिन बेचैन है - छत की तरफ देखती है - पंखा बंद है - उठकर स्विच ऑन करती है - जम्हाई लेती है फिर एक क्षण अपने कपड़ो की तरफ देखती है - डांस का एक स्टेप लेकर झूंमती है - तभी बैग लटकाए हुए क्लास में तीन और लड़कियों का प्रवेश - वे तीनों लड़कियाँ इस पहली लड़की से ' हाऽय ' कहकर पीछे के डैस्कों की तरफ बढ़ती हैं।"[36] स्थल के बारे में विचार किया जाय तो नाटक की सभी घटनाएँ क्लासरूम और स्टाफ - रूम इन दो स्थानों पर घटित होती है। कालेज का वातावरण निर्माण करने में संवाद भी रोचक और वातावरण के अनुकूल हैं -

" अनू - अभी तो दस मिनट हैं क्लास लगने में ! तुम अभी से पीछे बैठ रही हा यार ? मेनका, तुम आज इन सब के साथ कैसे हो ?

मेनका - मैं किसी के साथ नहीं बाबा ! मुझे इन्हीं दस मिनट में ट्यूटोरियल तैयार करना है।

अनू - ट्यूटोरियल तैयार करने की जगह अच्छी ढूंढी है।

मेनका - अब चुप भी हो जा अनू ! एक मिनट किताब खोलकर देख लेने दे प्लीज !

अनू - मैं तो चुप ही हूं मैडम, लेकिन अभी जब पूरी क्लास धावा बोल देगी तब ? तब देख लेना अच्छी तरह से किताब !"[37]

' ओम् क्रांति क्रांति ' नाटक में नाटकीय घटना की अवधि दो दिन की है। प्रथम दृश्य में कालेज के क्लास का पहला दिन है। दूसरे दृश्य में स्टाफ - रूम का दृश्य है और तीसरे दृश्य में कालेज के दूसरे दिन का दृश्य है। इन दो दिनों की अवधि में नाटकीय घटनाएँ घटित होती है। प्रस्तुत नाटक में स्टाफ - रूम के वातावरण का चित्रण मिलता है। कैंटीन बॉय पांचू स्टाफ - रूम में ऑर्डर लेने आया है, वह कहता है -

" पांचू - मैडम चाय, कोकाकोला कुछ लाए ?

मिसिज मंगला - हमारे लिए एक गोल्ड स्पॉट लाओ पांचू ... लेकिन भागकर एकदम जल्दी बेल होने को है !

पांचू - मैडम आप के लिए ?

मिसिज पंत - कुछ नहीं ... यह तिपाई पर रक्खें जूठे कप उठा ले जाओ... मक्खी आती हैं।

पांचू - मैडम, आपके लिए खाने को क्या लांऊ ? दोसा, समोसा, कटलेट

मिसिज दानी - आज गुलाब जामुन नहीं बनें क्या ?

पांचू - नहीं मैडम, आज मीठा कुछ नहीं बना, सब नमकीन है।"[38]

कुसुम कुमार ने प्रस्तुत नाटक में कालेज का परिवेश प्रस्तुत करने के लिए उत्तमोत्तम दृश्य चित्रों की निर्मिति की है। प्रस्तुत नाटक में लेखिका कुसुम कुमार को देशकाल और वातावरण की अन्विति करने में सफलता मिली है।

3.1.5 भाषा शैली : -

भावों की अभिव्यक्ति का लिखित साधन भाषा है। भाषा के अंतर्गत शब्द- योजना, वाक्य - विन्यास आदि गुण आते हैं। नाटक में भाषा तथा शैली का विशिष्ट स्थान रहता है। नाटक में भाषाशैली का प्रयोग करते समय नाटक के कथ्य, घटना, देशकाल तथा समय के अनुसार रूप निश्चित करना पड़ता है। भाषाशैली माधुर्य, ओज, भावुकता, आवेग, व्यंग्यात्मकता और नाट्यानुकूलता आदि से युक्त होनी चाहिए।

प्रस्तुत नाटक में कुसुम कुमार ने व्यंग्यात्मक भाषा का प्रयोग किया है। प्रमुख पात्रों की भाषा अपने रहन - सहन के अनुकूल ही है।

3.1.5.1 व्यंग्यात्मक भाषा : -

नाटककार अपनी कृति को आकर्षक बनाने के लिए व्यंग्यात्मक भाषा का प्रयोग करता है। कुसुम कुमार ने विवेच्य नाटक में व्यंग्यात्मक भाषा का प्रयोग किया है। मिसिज दानी लड़कियों पर भयंकर होने का आरोप लगाती है। उस समय लेक्चरर मिसिज दानी और मिस सिंह के बीच जो वार्तालाप हुआ है, उस में व्यंग्यात्मक भाषा का प्रयोग दिखाई देता है -

" मिसिज दानी - ये सेकंड इयर ' सी ' की लड़कियाँ बड़ी भयंकर हैं।

मिस सिंह - भयंकर क्या भयंकर हैं। कुछ लड़कियाँ योग्य हैं, इनमें से, पर हैं वे भी भयंकर ! योग्यता असल में होती ही भयंकर है।

मिसिज दानी - नहीं - नहीं, ऐसा ना कहें।

मिस सिंह - कहने - ना कहने से कुछ फर्क नहीं पड़ता डॉ.महोदया ... लेकिन यह सच है कि योग्यता भयंकर होती है।

मिसिज दानी - लेकिन ऐसी भयंकर योग्यता भी किस काम की ?

मिस सिंह - और सफेद कपड़े पर पड़े सफेद दाग - सी योग्यता भी किस काम की ? जिसका न कोई रंग न रूप।"[39]

व्यंग्यात्मक भाषा के कारण संवाद रोचक बनें हैं।

3.1.5.2 मुहावरे और कहावतें : -

भाषा को आकर्षक, लोकप्रिय बनाने के लिए लेखक अपनी रचना में मुहावरों और कहावतों का प्रयोग करता है। जिससे रचना में रोचकता, प्रभावोत्पादकता आ जाती है। कुसुम कुमार ने अपने नाटकों में रोचकता, प्रभावोत्पादकता निर्माण करने के लिए मुहावरों और कहावतों का प्रयोग किया है। कुछ उदाहरण दृष्टव्य हैं -

1. उड़कर हवा हो जाएगा। (ओम् क्रांति क्रांति पृ.19)

2. किसका जूता किसके सर पर दे मारा आपने ? (ओम् क्रांति क्रांति पृ.61)

3. सारी की सारी भक्ति-भावना रफू चक्कर हो गई (ओम् क्रांति क्रांति पृ.63)

4. कुछ भी किए टस से मस नहीं हो (ओम् क्रांति क्रांति पृ.73)

3.1.5.3 अंग्रेजी शब्द : -

' ओम् क्रांति क्रांति ' नाटक में अंग्रेजी शब्दों का भी प्रयोग किया है, वे शब्द ग्रहण करते समय अर्थ में बाधा नहीं बनकर आते। जैसे -

क्लास, ट्यूटोरियल, साइड बिजनेस, कैंटीन, फ्यूचर, एब्सर्ड, जीनियस, सर्टिफिकेट, सीरियसनेस, नून शोज, कॉंट्रेक्टर , पीरियड, लीनियेंट, प्रोफेशन, ग्रेटेस्ट, लैंग्वेज, एस्से, प्रोग्रेसिव, बोल्ड एक्सप्रेशन, पॉप्युलर, आनर्स, स्टाफ काउंसिल, रिमार्क्स आदि।

3.1.5.4 शैली : -

अभिव्यक्ति का ढंग शैली है। प्रत्येक लेखक की अलग शैली होती है। शैली के बारे में श्रीमती गिरिजा सिंह का निम्न विचार दृष्टव्य है - " शैली अभिव्यक्ति की एक विशिष्ट रीति तो है ही, परंतु इसमें भाषा के सौंदर्य का समावेश इसे और भी महत्वपूर्ण बना देती है। एक लेखक को दूर से अलग करनेवाली उसकी शैली ही होती है। एक ही विषय का प्रतिपादन कई कवियों और लेखकों द्वारा विभिन्न रीति से किया जाता है। अपने - अपने मानसिक गठन तथा व्यक्तित्व के आधार पर वे शैली का नियोजन करते हैं।"[40] शैली भाषा का अभिन्न अंग है। प्रत्येक नाटककार अपने नाटक में अलग - अलग शैली का उपयोग करके पाठकों या दर्शकों को आकृष्ट करता है।

कुसुम कुमार द्वारा लिखित ' ओम् क्रांति क्रांति ' नाटक में प्रश्नोत्तर शैली, आवेगपूर्ण शैली, व्यंग्यात्मक शैलियों का प्रयोग दिखाई देता है।

3.1.5.4.1 प्रश्नोत्तर शैली : -

प्रश्नोत्तर शैली के माध्यम से दर्शकों या पाठकों में अभिरूचि उत्पन्न की जाती है। कुसुम कुमार ने प्रश्नोत्तर शैली का प्रयोग किया है।

उदाहरण -

" मिसिज दानी - हां तो हम कहां थे ?

मीना - (धीरे से) आपकी बला से ?

मिसिज दानी - यह कौन खुसपुस कर रहा है ?

अनू - (खड़ी होकर) कोई नहीं मैम ?

मिसिज दानी - तो तुम खड़ी क्यों हो गई ?

अनू - मैम, आज हम ' चींटी शक्कर ले गई ' नहीं पढ़ेगें।"[41]

नाटक में प्रश्नोत्तर शैली से कथा का विकास होता है, जिसका कारण यह है कि दर्शक प्रत्येक प्रश्न तथा उत्तर सुनने के लिए उत्सुक होते हैं।

3.1.5.4.2 आवेगपूर्ण शैली : -

जब नाटक में पात्र अनुचित बातों से आन्दोलित हो उठते हैं, तो उत्तेजित होकर आवेश में आकर बोलने लगते हैं, तब आवेग्पूर्ण शैली निर्माण हो जाती है। कुसुम कुमार द्वारा लिखित 'ओम् क्रांति क्रांति' नाटक में थैलमा विद्रोही व्यक्ति है। थैलमा एक स्थान पर उत्तेजित होकर आवेग में आकर बोलती है -

उदाहरण -

" थैलमा - (आपे से बाहर होकर) और टीचर को ? मैडम प्रिंसिपल ... और टीचर को अन्याय का परिणाम क्या नहीं पता होना चाहिए ?"[42]

आवेगपूर्ण शैली से नाटक में कौतुहल निर्माण होता है।

3.1.5.4.3 व्यंग्यात्मक शैली : -

व्यंग्यात्मक शैली से नाटक प्रवाहमान होता है। जिससे सामाजिक विसंगतियों, कुरीतियों पर प्रकाश डाला जाता है। कुसुम कुमार द्वारा लिखित ' ओम् क्रांति क्रांति ' नाटक में व्यंग्य के दर्शन होते हैं।-

उदाहरण -

" मिसिज पंत - छोड़िए डॉ.मिसिज दानी, छोड़िए ... अभी आपसें नहीं सुलझेगी यह समस्या ... कभी वक्त मिलने पर एक पीएच्.डी और कर डालिए इस विषय पर भी ... तब शायद समझ में आ जाए कि लड़कियाँ नालायक, घमंड़ी और गुस्ताख क्यों हैं !"[43]

3.1.6 उद्देश्य : -

नाटककार किसी - न - किसी उद्देश्य से ही नाट्य कृति का निर्माण करता है। बिना प्रयोजन की नाट्य रचना का कोई महत्त्व नहीं होता। नाटक में उद्देश्य का महत्त्व प्रतिपादित करते हुए डॉ.शांति मलिक कहती है कि - " यह तत्व नाटक की आत्मा है, क्योंकि बिना किसी सुनिश्चित उद्देश्य तथा प्रेरणा व अनुभूति के धरातल से लिखा गया नाटक शक्ति एवं प्रभावोत्पादकता के गुण से वंचित ही होता है। वास्तव में यही तत्त्व है, जिसे व्यंजित एवं चरितार्थ करने के निमित्त नाटककार पात्रों एवं शैली को अवतारणा करता है।"[44] उद्देश्य नाटक की आत्मा है, जिसके आधार पर नाटक की सफलता निर्भर करती है। नाटक की घटनाएँ किसी कार्यफल की ओर निरंतर अग्रसर होती है। प्रस्तुत कार्यफल ही नाटक का उद्देश्य होता है।

कुसुम कुमार ' ओम् क्रांति क्रांति ' नाटक के माध्यम से शिक्षा व्यवस्था में फैली भ्रष्टता, अराजकता के विरोध में की गई क्रांति द्वारा परिवर्तन लाना चाहती है। शिक्षा व्यवस्था में फैली हुई बुराइयों को दूर करने के लिए क्लासरूम क्रांति की जरूरत है। शिक्षा व्यवस्था में परिवर्तन एवं सुधार लाने का लेखिका कुसुम कुमार का प्रमुख उद्देश्य रहा है। शिक्षकों की दिन - ब - दिन बढ़ती जा रही अनुशासनहीनता, गैर जिम्मेदारी के विरोध में आवाज उठाने के लिए क्लासरूम क्रांति की जरूरत है। कुसुम कुमार ने सामूहिक रूप में की गई क्रांति का महत्त्व प्रतिपादित किया है। प्रस्तुत नाटक में लेखिका को पूरी सफलता मिली है।

3.1.7 शीर्षक की सार्थकता : -

शीर्षक, साहित्य कृति का एक ऐसा घटक होता है, जो साहित्य कृति का सबसे पहला, अर्थपूर्ण और प्रेरक अंग होता है और जिसके आधार पर साहित्य कृति को अलग रूप से पहचाना जाता है। नाटक का समूचा संदर्भ शीर्षक में होता है। शीर्षक कथावस्तु, कथ्य अथवा पात्रों से संबंधित होना आवश्यक है। यदि वह नाटक की मूल संवेदना को ध्वनित या व्यंजित कर सके तो वह सार्थक शीर्षक होता है।

कुसुम कुमार द्वारा लिखित ' ओम् क्रांति क्रांति ' उनका प्रथम नाटक है। वैदिक धर्म में ॐ (ओम) का विशेष महत्त्व है। वैदिक धर्म में किसी भी कार्य का प्रारंभ ' ओम् ' शब्द द्वारा किया जाता है। कुसुम कुमार वैदिक धर्म के प्रति आकृष्ट है। इसलिए उन्होंने अपनी नाट्यरचना का प्रारंभ ' ओम् ' शब्द से किया है। कुसुम कुमार द्वारा लिखित ' ओम् क्रांति क्रांति ' नाटक शिक्षा व्यवस्था में फैली हुई अराजकता को स्पष्ट करता है। प्रस्तुत नाटक में लेक्चरर मिसिज दानी महिला कालेज में अपनी अनुशासनहीन व्यवहार से अराजकता फैला दी है। भ्रष्ट लेक्चरर मिसिज दानी के विरोध में आवाज उठाने का कार्य महिला कालेज की लड़कियाँ करती है। मिसिज दानी हमेशा शांति का पक्ष लेकर कालेज में अनुशासनहीनता से व्यवहार करती है। मिसिज दानी के भ्रष्ट व्यवहार के विरोध में आवाज उठाने के लिए लड़कियाँ ' ओम् क्रांति क्रांति ' का नारा देकर क्लास में शोर

मचाती है। क्लास में मचाये गये शोर को शांत करने के लिए मिसिज दानी ' ओम् शांति शांति ' का नारा लगाती है। इसके विपरीत लड़कियाँ ' ओम् क्रांति क्रांति ' का नारा लगाकर सिर्फ क्रांति ही होने की चेतावनी देती है। ' ओम् शांति शांति ' से कुछ परिवर्तन होनेवाला नहीं है; इसलिए लेखिका कुसुम कुमार ने शिक्षा व्यवस्था में परिवर्तन लाने के लिए ' क्रांति ' का महत्त्व प्रतिपादित किया है। प्रस्तुत ' क्रांति ' अकेले व्यक्ति द्वारा की गई क्रांति नहीं, बल्कि पूरे कालेज की लड़कियाँ द्वारा की गई सामूहिक क्रांति है। कुसुम कुमार ने ' ओम् क्रांति क्रांति ' नाटक के माध्यम से सामूहिक क्रांति का महत्त्व प्रतिपादित किया है। ' ओम् क्रांति क्रांति ' नाटक का शीर्षक अपने उद्देश्य को पूर्ण करने में सहायक सिध्द हुआ है। अतः हम कह सकते हैं कि कुसुम कुमार द्वारा लिखित ' ओम् क्रांति क्रांति ' नाटक का शीर्षक सार्थक है।

नाटक के तत्त्वों के आधारपर प्रस्तुत नाटक खरा उतरता है।

3.2 ' सुनो शेफाली ' : -

प्रस्तुत नाटक का तात्त्विक विवेचन निम्नलिखित प्रकार से प्रस्तुत किया जा रहा है -

3.2.1 कथावस्तु : -

कुसुम कुमार द्वारा लिखित नाटक ' सुनो शेफाली ' एक हरिजन लड़की शेफाली और उच्चकुलोत्पन्न समाजसेवी सत्यमेव दीक्षित के पुत्र बकुल के प्रेम- संबंध पर आधारित है। प्रस्तुत नाटक में लेखिका कुसुम कुमार ने राजनीति में चलनेवाले छल - प्रपंच का पर्दाफाश किया है। बकुल और शेफाली का प्रेम - संबंध कई सालों से चलता आ रहा है। बकुल के प्रेम - संबंध में स्वार्थ निहित है, यह शेफाली ने अच्छी तरह से जान लिया है। जब भी बकुल शेफाली से मिलता है, तब शेफाली को लालच दिखलाकर प्यार के संबंधों को और अधिक मजबूत करना चाहता है। शेफाली को समाजसेवी सत्यमेव दीक्षित की बहू बनाने का लालच दिखलाकर बकुल राजनीतिक पृष्ठभूमि मजबूत करना चाहता है। बकुल शेफाली को लालच दिखलाते हुए कहता है कि - " और सब तो तुमसे रियायत ही रियायत करेंगे... बकुल की बीवी होना कोई मजाक की बात नहीं, शेफाली। श्री सत्यमेव दीक्षित की बहू होना उससे भी बड़ी बात है।"[45] सत्यमेव दीक्षित को अब चुनाव जीतकर मंत्री बनना है। चुनाव में दलितों के प्रति सहानुभूति दिखलाकर जनता से वोट प्राप्त करने हैं। इसलिए वह दलित युवती शेफाली को अपनी बहू बनाना चाहता है। जब से शेफाली सत्यमेव दीक्षित को अंग्रेजी सीखाने के लिए उनके घर जाया करती थी तब, से वह बकुल के प्यार में पागल हुई है। शेफाली बकुल के झुठे - प्यार के चंगुल में फंसने से सत्यमेव दीक्षित को और अधिक आनंद मिलता है। अपनी राजनीतिक पृष्ठभूमि मजबूत बनाने के लिए सत्यमेव दीक्षित अपने पुत्र बकुल को प्रेम - संबंध मे मजबुती लाने के लिए प्रेरित करता है।

बकुल स्वार्थ सिद्धि के लिए शेफाली को झूठे - प्यार के मोहजाल में फंसाना चाहता है। लेकिन शेफाली बकुल की कुटिल चाल को पहले से ही जान चुकी है। शेफाली कहती है - " मुझे

जानना चाहिए ... और कुछ नहीं तो तुम्हारा जो मुझ पर असीम कृपा रही है, उसके बारे में जरूर जानना चाहिए मुझे ... तुम्हारे लबालब होंठो के चुम्बन ... बरसों प्यार के कोहरे में चलते रहनेवाले पुरजोर वे अलिंगन - सब जैसे मुझ पर बरसाए जाने वाले उपकारों के फूल थे ... मुझे क्या पता था यह पूरा सिलसिला सिर्फ़ तुम्हारी दया - दृष्टिवश चल रहा है ?... ऐसा अगर मैं पहले जान पाती तो उसी वक्त तुम्हारा धन्यवाद कर देती ... ।"[46] शेफाली बकुल से सच्चे दिल से प्यार करती थी। लेकिन बकुल स्वार्थ हेतू रखकर शेफाली से प्यार का नाटक करता रहता है। शेफाली बकुल के झूठे प्यार का पर्दाफाश करती हुई कहती है - " झूठ अब और झूठ न बोलो, बकुल ! मैं सिर्फ प्यार करना जानती थी ... प्यार करती रही ... हिसाब तो तुम लगाते रहे ... और तुम्हारे घरवाले ... मैं एक गरीब घर की हरिजन लड़की ... तुमने मुझे प्यार किया ... शादी भी करना चाहते हो ... आय शुड बी ग्रेटफुल टू यू ... आय शुड बी फेथफुल टू यू।"[47] शेफाली ने मन में यह पक्का इरादा किया है कि वह क़िसी भी कीमत पर बकुल से विवाह नहीं करेगी।

चुनाव अब कुछ ही दिनों में होनेवाले हैं। सत्यमेव दीक्षित की चुनाव में जीत होगी या नहीं यह जानने के लिए वह मनन ज्योतिषी के पास जाता है। मनन ज्योतिषी कई सालों से यमुना के घाट पर बैठा करता है। इसलिए वह शेफाली और बकुल के प्रेम - संबंध को प्रारंभ से ही जानता है। मनन ज्योतिषी जिस घाट पर बैठा करता था, उसी घाट पर शेफाली और बकुल भी बैठा करते थे । बकुल स्वार्थनीति को मनन ज्योतिषी ने पहले से ही जान लिया है। मनन आचार्य शेफाली को अपरोक्ष रूप से बकुल की कुटिल चाल से सतर्क रहने के लिए चेतावनी देता है।

शेफाली और बकुल के प्यार की परिणति विवाह में होना सत्यमेव दीक्षित के लिए अत्यंत जरूरी है। सत्यमेव दीक्षित इसी कार्य में मनन आचार्य की भी सहायता लेना चाहता है। लेकिन मनन आचार्य इनके षड्यंत्र में भाग नहीं लेता। मनन आचार्य सत्यमेव दीक्षित की स्वार्थनीति का पर्दाफाश करते हुए कहता है - " छोड़िए, सत्यमेव जी ! समाजसेवा नहीं, यह समाजयोग है। यही समाजयोग आपको उस राजयोग तक पहुंचाएगा ! (जोर से हंसता है) समाजसेवा के भुनाऊ रास्ते से चलकर राजनीति के मंच पर चढ़ना चाहते हैं तो चढ़िए - एतराज किसे है ? ... ताकत की शराब पीना चाहते हैं तो पीजिए ... लेकिन अपने ही खरे - खोटे सिक्कों को भुनाइए। लोकसेवा - समाजसेवा के नाम पर किसी और की भावनाओं को अपना दाना - पानी मत बनाइए।"[48] मनन आचार्य अपरोक्ष रूप से सहायता करने के लिए इंकार कर देता है।

सत्यमेव दीक्षित को किसी भी कीमत पर शेफाली को अपनी बहू बनाना है। इसलिए सत्यमेव दीक्षित शेफाली की मां का मन परिवर्तन करना चाहता है ! शेफाली के पिता बीमार होने के कारण घर संभालने की और तीन बेटियों के विवाह की जिम्मेदारी मां पर आ पड़ी है। परिस्थितिवश शेफाली की मां को शेफाली का विवाह बकुल से करना है। मां को अपनी बेटियों का विवाह करके अपनी जिम्मेदारी निभानी है। इसी कारण शेफाली की मां शेफाली को बकुल के साथ विवाह के

लिए बाध्य करना चाहती है। लेकिन आत्मसम्मानशील शेफाली मां के प्रस्ताव को भी ठुकरा देती है। वह अपने स्वाभिमान को ठैंस पहुंचाकर किसी के हाथ की कठपुतली बनना नहीं चाहती।

सत्यमेव दीक्षित अपना स्वार्थ हेतू साध्य करने के लिए मिस साहब की सहायता लेना चाहता है। शेफाली की मां मिस साहब के यहाँ नौकरी करती है। शेफाली की बी.ए.तक की शिक्षा का खर्च स्वयं मिस साहब ने किया है। सत्यमेव दीक्षित मिस साहब की सहायता लेकर शेफाली को विवाह के लिए बाध्य करना चाहता है। लेकिन मिस साहब बकुल और शेफाली के प्यार में हस्तक्षेप करना उचित नहीं मानते। मिस साहब विवाह का निर्णय बकुल और शेफाली पर छोड़कर एक प्रकार से सत्यमेव दीक्षित के प्रस्ताव को ठुकरा देती हैं।

सत्यमेव दीक्षित को चुनाव में जीतने के लिए हरिजन लड़की शेफाली की सख्त जरूरत है, उन्हें हरिजनों से वोट प्राप्त करने हैं। ब्राह्मण समाजसेवी ने हरिजन युवती को बहू बनाया, ऐसा विज्ञापन देकर हरिजनों के प्रति सहानुभूति दिखाकर जनता से वोट प्राप्त करना चाहता है। इसी उद्‌देश्य पूर्ति हेतू सत्यमेव दीक्षित शेफाली की बहन किरन को बहू बनाने का प्रस्ताव शेफाली की मां के सामने रखता है। परिस्थितिवश शेफाली की मां बकुल से किरन का विवाह करने के लिए राजी होती है। अंत में सत्यमेव दीक्षित और बकुल कुटिल राजनीतिक दाँव - पेंच में सफल होते हैं। अंततः बकुल किरन के साथ विवाह कर लेता है।

प्रस्तुत नाटक शैली एवं शिल्प के स्तर पर प्रभावशाली है। नाटक के पात्र प्रतीकात्मक है। शेफाली नारी स्वाभिमान का आत्मसम्मान का प्रतीक है। शेफाली विद्रोही चरित्र के कारण घटियाँ और भ्रष्ट राजनीति के लिए वह अपना जीवन न्योछावर नहीं कर सकती। आत्मसम्मान की रक्षा के लिए वह अपने पवित्र प्रेम का बलिदान करना नहीं चाहती। शेफाली आखिर तक अपने निर्णय पर अड़िग रहकर विद्रोही नारी के रूप में चित्रित है।

विवेच्य नाटक की कथावस्तु आरंभ से ही कौतुहल निर्माण करती है। कथावस्तु में रोचकता, आकर्षकता एवं प्रभावोत्पादकता आदि गुण देखने मिलते हैं।

3.2.2 पात्र या चरित्र - चित्रण : -

कुसुम कुमार द्‌वारा लिखित ' सुनो शेफाली ' यह समस्या प्रधान नाटक है। प्रस्तुत नाटक का नायक बकुल और नायिका शेफाली है। नाटक के पात्र परिचय की सूची में तेरह पात्र अंतर्भूत है। तेरह पात्रों में से पांच प्रमुख पात्रा और आठ गौण - पात्र के रूप में चित्रित है। प्रमुख पात्र - शेफाली, बकुल, मनन आचार्य, सत्यमेव दीक्षित और गेरू हैं। गौण पात्र - शेफाली की मां, मिस साहब, स्त्री-पुरुष, पुजारिन युवती, भजन - मंडली, अंग्रेज फोटोग्राफर, किरन, शिवालय का पुजारी आदि है। प्रस्तुत नाटक में सात पुरुष पात्र और छः स्त्री पात्र है।

प्रमुख पात्र : -

3.2.2.1 शेफाली : -

नाटक के प्रमुख पात्रों में से एक है - शेफाली। उसका नायिका रूप अद्यांत है। कथावस्तु शेफाली के इर्द-गिर्द घूमती है। शेफाली नाटक में पाठकों - दर्शकों के सामने निम्न प्रकार से नजर आती है -

3.2.2.1.1 शिक्षित सज़ग युवती : -

शेफाली प्रस्तुत नाटक में सज़ग युवती के रूप में चित्रित है। शेफाली ने बी.ए.तक शिक्षा ग्रहण की है। अंग्रेजी पढ़ाने के लिए शेफाली समाजसेवक सत्यमेव दीक्षित के यहाँ जाती थी। शेफाली नाटक में एक सज़ग, सर्तक लड़की के रूप में चित्रित है। बकुल शेफाली को प्रेम - जाल में फंसाकर राजनीति में दलितों से वोट प्राप्त करना चाहता है। इस कुटिल चाल का पता लगने पर शेफाली बकुल के विरोध में विद्रोह करती है। शेफाली कहती है कि - " तू क्या उन्हें इतना भोला समझती है, अम्मा ? वह क्यों शादी करना चाहते हैं मुझसे - अभी ... इसी वक्त मैं खूब समझती हूं ... बाप - बेटा अपनी समाजसेवा की हथेली पर सरसों जमाना चाहते हैं ... एक हरिजन लड़की का उध्दार किया उन्होंने यही कह - कहकर अपने लिए जिन्दाबाद के नारे लगवाएंगे।"[49] शेफाली में सज़गता और सतर्कता दिखाई देती है।

3.2.2.1.2 स्वाभिमानी : -

शेफाली में स्वाभिमान कूट- कूटकर भरा हुआ है। स्वार्थी सत्यमेव दीक्षित के पुत्र बकुल से त्रह विवाह करने के लिए इंकार कर देती है। लफ़ंगे समाजसेवक की बहू बनने को इंकार करने में शेफाली का स्वाभिमान ही प्रमुख कारण है। छलकपट की राजनीति के लिए वह अपने पवित्र प्रेम का बलिदान करना नहीं चाहती। शेफाली की मां शेफाली का विवाह बकुल के साथ करना चाहती थी। शेफाली अपनी मां को समझाते हुए कहती है कि - " बराबरी मांग कौन रहा है ? बराबर मैं तो हूं ... उनकी दया का पात्र बनना होता तो मेरी शादी के खील - बताशे तो तुम भी कब के बांट चुकी होती ... अम्मा, मैं कैसे ना यह सोचूं कि हम उनकी दया के पात्र होने के अलावा भी कुछ है।"[50] अतः शेफाली का स्वाभिमान पूरी नारी जगत् को महत्ता प्रदान करता है।

3.2.2.1.3 विद्रोही : -

प्रस्तुत नाटक में शेफाली का विद्रोही रूप दिखाई देता है। शेफाली का विद्रोह अपने प्रेमी, समाज, मां के प्रति प्रकट हुआ है। जब शेफाली बकुल के स्वार्थनीति को जान लेती है, तब से वह बकुल के प्रति विद्रोह प्रकट करती है। शेफाली स्वगत कथन में कहती है कि - " बकुल जी ... बकुल बाबू ... आप भी क्या याद करेंगे ... एक हरिजन लड़की का सिखाया हुआ पाठ पूरी उम्र

बैठकर रटते न रह जाएं तो मेरा नाम भी शेफाली नहीं ।"[51] शेफाली के शब्दों में विद्रोह की आग निकलती है। शेफाली की मां परिस्थितिवश शेफाली का विवाह लफ़ंगे बकुल के साथ करना चाहती थी। मगर आत्मसम्मानी शेफाली मां के प्रस्ताव को भी ठुकरा देती है।

इस प्रकार प्रस्तुत नाटक में शेफाली, सज़ग, आत्मसम्मानी, स्वाभिमानी, विद्रोही रूप में चिंत्रित है।

3.2.2.2 बकुल : -

बकुल नाटक का प्रमुख पात्र है। बकुल नाटक में नायक के रूप में हमारे सामने आता है। वह आज की राजनीतिक व्यवस्था का प्रतिनिधि चरित्र है। समाजसेवा के नाम पर हरिजन युवती शेफाली को फंसाकर अपने पिता की राजनीतिक पृष्ठभूमि मजबू करना चाहता है। उसके चरित्र की विशेषताएँ निम्न लिखित है -

3.2.2.2.1 स्वार्थी प्रेमी : -

बकुल का शेफाली के साथ दो साल से प्रेम - संबंध है। वह भोली - भाली शेफाली को प्रेम - जाल में फंसाता है। बकुल अपने पिता सत्यमेव दीक्षित की राजनीतिक पृष्ठभूमि मजबूत करने के लिए हरिजन युवती शेफाली के साथ विवाह करना चाहता है। हरिजन युवती के साथ विवाह किया, ऐसा विज्ञापन देकर हरिजनों के प्रति सहानुभूति दिखाकर जनता से वोट लेना चाहता हैं। इसी उद्देश्यपूर्ति हेतू बकुल अपनी स्वार्थनीति को अपनाकर शेफाली को झूठे - प्रेमजाल में फंसाता है। इस प्रकार वह स्वार्थी है।

3.2.2.2.2 लफंगे राजनेता : -

बकुल चुनाव में जीतने के लिए राजनीतिक दाँव - पेंच का सहारा लेता है। शेफाली बकुल के साथ विवाह के लिए इंकार कर देने पर बकुल शेफाली की बहन किरन के साथ विवाह कर लेता है। अंततः वह अपनी स्वार्थनीति में सफल होता है। इस संदर्भ में शेफाली स्वगत कथन में कहती है कि - " बकुल जी ! आप पुरुष थे तो क्या हुआ ? सिर्फ इसीलिए तो आप लावारिस ,खुली गाय की तरह छुट्टी नहीं पा सकते ? मुझ पर हाथ की सफ़ाई दिखाई आपने ... काफी है ... किरन ! ... किरन !"[52] समाजसेवक की बहू बनने का लालच दिखाकर बकुल किरन के साथ विवाह कर लेता है।

3.2.2.2.3 यौन शोषक प्रेमी : -

बकुल शेफाली को प्रेम - जाल में फंसाकर बार - बार शेफाली का यौन शोषण करता है। इस संदर्भ में शेफाली कहती है कि - " मुझे जानना चाहिए ... और कुछ नहीं तो तुम्हारी जो मुझ पर असीम कृपा रही है, उसके बारे में जरूर जानना चाहिए मुझे ... तुम्हारे लबालब होठों के चुंबन ...

बरसों प्यार के कोहरे में चलते रहनेवाले पुरजोर वे आलिंगन - सब कुछ जैसे मुझ पर बरसाए जानेवाले उपकारों के फूल थे।"[53] आखिर शेफाली बकुल के स्वार्थी प्रेम को जान लेने से बकुल के बंधन से मुक्त होती है। वह यौन शोषक प्रेमी है।

इस प्रकार बकुल स्वार्थी प्रेमी, लफंगे राजनेता, यौन - शौषक प्रेमी के रूप में चित्रित है।

3.2.2.3 मनन आचार्य : -

नाटक के प्रमुख पात्रों में से एक है - मनन आचार्य। वह निम्न रूप में चित्रित है। मनन आचार्य पात्र के संबंध में डॉ.लवकुमार लवलीन लिखते हैं कि - " नाटकीय घटनाओं एवं संरचना में मनन आचार्य की भूमिका महत्त्वपूर्ण है, जो नाटक की नायिका को परोक्ष स्वर एवं समर्थन भी देते हैं। इसलिए इस पात्र का चरित्र विकास नाटक में सही ढ़ंग से हुआ है क्योंकि नाटक में वे जब जब सामने आते है, नाटकीय कथासूत्र को आगे बढ़ाने में सहायक होते है।"[54] मनन आचार्य की चारित्रिक विशेषताएँ इसप्रकार प्रस्तुत की जा सकती है -

3.2.2.3.1 स्पष्टवादी : -

मनन आचार्य स्पष्टवादी विचार का व्यक्ति है। ज्योतिषी की वेशभूषा धारण करके पाखंडी लोगों पर कुटाराघात करते हुए नजर आता है। जो कुछ लोग ज्योतिष जानने आते हैं, उन्हें सत्य की याद दिलाता है। मनन आचार्य जनता के अंधविश्वास पर हंसता हैं। वह शेफाली को अपने ज्योतिषी बनने का राज खोलकर कहता है कि - " शेफाली जी! आप कायर नहीं ... और मैं ज्योतिषी नहीं हूं ... रोज यहाँ भले कितने लोंग आते हों ... जिनके लिए मैं मनन आचार्य हूं ... पर मैंने कहा न! मैं वह नहीं हूं। ... यमुना के इस घाट को मैं जहाँ तक हो सकता है ... कुछ कायरों के इलाज के लिए इस्तेमाल जरूर करता हूं।"[55] लफंगे सत्यमेव दीक्षित मनन ज्योतिषी के पास चुनाव में जीत होगी या नहीं यह जानने के लिए आता है। मनन ज्योतिषी सत्यमेव दीक्षित की स्वार्थनीति का पर्दाफाश करते हुए कहता है कि - " छोडिए, सत्यमेव जी! समाजसेवा नहीं, यह समाजयोग है। यही समाजयोग आपको उस राजयोग तक पहुंचाएगा। समाजसेवा के भुनाऊ रास्ते से चलकर राजनीति के मंच पर चढ़ना चाहते है तो चढ़िए - एतराज किसे हैं ? ताकत की शराब पीना चाहते हैं तो पीजिए - लेकिन अपने ही खरे - खोटे सिक्कों को भुनाइए! लोकसेवा - समाजसेवा के नाम पर किसी और की भावनाओं को अपना दाना - पानी मत बनाइए।"[56] मनन ज्योतिषी मस्तमौला और स्पष्टवादी है।

3.2.2.3.2 सत्य के मार्ग पर चलनेवाला सच्चा मार्गदर्शक : -

मनन आचार्य सत्य का पक्ष लेकर शेफाली को हर समय बकुल और सत्यमेव दीक्षित की कुटिल चाल से बचाने के लिए मार्गदर्शन करता है। समाजसेवक सत्यमेव दीक्षित और बकुल दोनों बाप - बेटे शेफाली को फंसाकर अपना स्वार्थ साधना चाहते हैं। शेफाली एक हरिजन युवती है।

दोनों बाप - बेटे को चुनाव में हरिजनों का वोट प्राप्त करने के लिए शेफाली को बहू - वधू बनाना जरूरी है। मनन ज्योतिषी ने उनकी स्वार्थनीति को जान लिया है। वह अप्रत्यक्ष रूप से स्पष्ट होता है -

" शेफाली - आप नहीं जानते दादा, यहां बारीक जाल बुने जाते हैं।

मनन - चाहे जितने जाल बुने जाएं ... तुम्हें चिन्ता किस बात की है।"[57]

3.2.2.3.3 समाजप्रिय : -

मनन ज्योतिषी समाजप्रिय व्यक्ति है। समाज के सभी लोगों को अपनी मधुर वाणी से मोहित करता रहता है। गरीबों से लेकर रईसों तक सभी लोग मनन ज्योतिषी को जानते हैं। मनन ज्योतिषी के पास भविष्य जानने भी आते हैं। मनन कहता है कि - " ज्योतिषी नहीं हूं, फिर भी कभी यहां कोई - प्रेमी आता है ... अपनी डूबती नाव में बैठकर ... कभी कोई प्रेमिका ... कभी कोई बांझ, कभी कोई गद्दीधारी कभी कोई प्रधान, कभी कोई नहलाराम ... कभी कोई दहलाराम।"[58] मनन ज्योतिषी के पास समाज के सभी स्तर के लोग अपना भविष्य जानने के लिए आते हैं। इसीलिए वह समाजप्रिय व्यक्ति बना है।

इसप्रकार मनन आचार्य स्पष्टवादी, सच्चा मार्गदर्शक, समाजप्रिय व्यक्ति के रूप में चित्रित है।

3.2.2.4 सत्यमेव दीक्षित : -

सत्यमेव दीक्षित एक समाजसेवक है। उन्हें चुनाव में जीतकर मंत्री बनना है। लेखिका ने नाम तो रखा सत्यमेव, लेकिन वह समाज में अपने नाम के विपरीत काम करता है। उनके चरित्र की विशेषताएँ निम्नलिखित है -

3.2.2.4.1 स्वार्थी समाजसेवक : -

सत्यमेव दीक्षित आडंबर समाजसेवी है। चुनाव में जीतने के लिए उसे हरिजनों के प्रति सहानुभूति दिखाकर जनता से वोट प्राप्त करने हैं। इसी उद्देश्यपूर्ति हेतू सत्यमेव दीक्षित अपने बेटे का विवाह हरिजन युवती शेफाली से करना चाहते हैं। बकुल प्रेमभावना का प्रयोग कर शेफाली को प्रेमजाल में फंसाता । इस संदर्भ में मनन ज्योतिषी लफंगे समाजसेवक की स्वार्थनीति का पर्दाफाश करते हुए कहता है कि - " आपका सर्वस्व समाजसेवा है तो यह चुनाव की मशाल हाथ में लेकर दो प्रेमियों को अपने पीछे लगा लेना किसके सर्वस्व का सवंस्व है।"[59] सत्यमेव दीक्षित समाजसेवा के नाम पर जनता को फंसाता है। वह स्वार्थी है। जो आज के राजनीतिक नेता का प्रतिबिंब है।

3.2.2.4.2 सत्ता लोलुप : -

सत्यमेव दीक्षित को चुनाव में जीतकर मंत्री बनना है। सत्तालोलुपता के कारण निरीह भोली - भाली हरिजन युवती शेफाली को अपनी बहू बनाना चाहता है। हरिजनों के प्रति जनता को सहानुभूति दिखाकर जनता से वोट प्राप्त करना चाहता है, वे स्वयं उच्च कुल में जन्में ब्राह्मण है। लेकिन सत्तालोलुपता के कारण हरिजन लड़की को अपनी बहू बनाना चाहते है। मनन आचार्य कहता है कि - " यह झूठ है ! ... सरासर झूठ है, महाशय ! ... यह फैसला आपने इसलिए किया है ताकि लोग आपकी गगनचुंबी समाजसेवा पर फूल बरसा सकें - मैंने मिसाल कायम की है ... मुझे उठाओ ... मंच पर लाओ ... नायक बनाओ मुझे ... देखो लोगो, मुझे देखो !"[60] सत्यमेव दीक्षित सत्ता प्राप्त करने के लिए पाखंड़ी बनता है।

सत्यमेव दीक्षित स्वार्थी समाजसेवक और पाखंड़ी नेता के रूप में चित्रित है।

3.2.2.5 गेरू : -

कुसुम कुमार द्वारा लिखित नाटक ' सुनो शेफाली ' में लेखिकाने गेरू को नाटक के महत्त्वपूर्ण पात्र के रूप में चित्रित किया है। प्रस्तुत नाटक में गेरू सहायक पात्र के रूप में चित्रित है। गेरू दस - बारह वर्ष का लड़का है। वह मनन आचार्य को सहायता करता है। मनन आचार्य शेफाली को गेरू का परिचय करते हुए कहता है कि - " अब तो वह मेरा क्या नहीं है ? लेकिन कुछ साल पहले वह इसी घाट के बाहर बैठकर अपने बाबा के साथ कीर्तन किया करता था ... छोटा - सा बच्चा है ... कीर्तन क्या करेगा ? उसके बाबा उसे अपनी मद्द के लिए साथ रखते थे। बाबा अब नहीं रहें उसके। लेकिन यह गेरू छोटा - सा दस - बारह बरस का बच्चा है। हर किसी को मद्द किया करता है।"[61] गेरू की मां गेरू का कान पकडकर स्कूल भेजती है। गेरू एक होशियार, नटखट लड़का है। मनन ज्योतिषी को सहायता करके उनसे पैसे वसूल करता रहता है। कभी - कभी मनन ज्योतिषी के साथ गाना भी गाया करता है।

गेरू मनन ज्योतिषी को हमेशा सहायता करता है। गेरू एक नटखट, होशियार लड़के के रूप में चित्रित है।

गौण - पात्र

3.2.2.6 शेफाली की मां : -

शेफाली के पिता बीमार होने के कारण गृहस्थी संभालने की जिम्मेदारी शेफाली की मां पर आ पड़ी है। शेफाली की मां मिस साहब के यहाँ नौकरी करके अपने परिवार की परवरिश करती है। स्वयं किसी सुख की अपेक्षा न रखते हुए अपनी बेटी, पति की सेवा में व्यस्त रहती है। शेफाली की मां की एक ही जिम्मेदारी है, उसे अपने तीनों बेटियों की गृहस्थी बसानी है। मां परिस्थितिवश लफंगे समाजसेवक के पुत्र बकुल के साथ शेफाली का विवाह करना चाहती है। शेफाली बकुल के स्वार्थ -

प्रेम को जान लेने से बकुल के साथ विवाह के लिए इंकार कर देती है। अंततः शेफाली की मां अपनी बेटी किरन का विवाह बकुल से करा देती है, क्योंकि मां को अपनी जिम्मेदारी निभानी होती है।

शेफाली की मां नाटक में त्यागी, वात्सल्यमय माता, पतिसेवा में अपना सर्वस्व माननेवाली भारतीय नारी के रूप में चित्रित है।

3.2.2.7 मिस साहब : -

मिस साहब पेशे से डॉक्टर है। शेफाली की मां उनके यहां नौकरी करती है। मिस साहब नाटक में ममत्वपूर्ण, दयालू नारी के रूप में चित्रित है। शेफाली की शिक्षा का खर्च मिस साहब ने वहन किया है। इस संदर्भ में शेफाली कहती है कि - " मिस साहब ने मुझे बुलाया और कहा - तुम ग्याहरवीं तो क्या बी.ए.भी करना चाहो तो तुम्हारा खर्च मैं दूंगी - वह दिन गया और मेरे बी.ए. पास करने तक मेरा पूरा बोझ अपने सिर पर ले लिया मिस साहब ने।"[62] मिस साहब एक निष्पक्ष निर्णय लेनेवाली चतुर महिला है। शेफाली द्वारा बकुल के साथ विवाह का प्रस्ताव ठुकरा देने पर सत्यमेव दीक्षित मिस साहब की सहायता लेकर अपना स्वार्थ साधना चाहता है। लेकिन मिस साहब निष्पक्षता से यह निर्णय दोनों प्रेमी बकुल और शेफाली पर छोड़ देती है।

मिस साहब निष्पक्ष, सच्चे दिल की परोपकारी महिला के रूप में चित्रित है।

3.2.2.8 स्त्री - पुरुष : -

प्रस्तुत नाटक में ' स्त्री - पुरुष ' पात्रों का वर्णन मिलता है। ये दोनों स्त्री - पुरुष पति- पत्नी है। उनकी कोई संतान नहीं है। इसलिए वे भविष्य जानने के लिए मनन ज्योतिषी के पास आते हैं। मनन ज्योतिषी उन्हें पुत्र प्राप्ति के लिए झील बस्ती के बच्चों को खाना खिलाने की सलाह देता है - " उन बच्चों को दिन में दो बार ... एक बार सुबह ... एक बार शाम पेटभर खाना खिलाना होगा ... एक बरस तक ... इतना कीजिए ... बच्चे का मुंह अवश्य ही देखने को मिलेगा।"[63] दोनों स्त्री - पुरुष मनन ज्योतिषी की सलाह को मानकर अपनी मन की मुराद पूरा करने चाहते हैं। इसमें स्त्री पात्र श्रध्दालु, भावुक, वात्सल्य रूप में चित्रित है।

3.2.2.9 पुजारिन युवती : -

पुजारिन युवती नाटक की कथावस्तु को अधिक प्रभावशील बनाने में सिद्‌ध हुई है। पुजारिन युवती के प्रसंग द्‌वारा नाटक की कथावस्तु और अधिक गतिशील बन गयी है। पुजारिन युवती पारंपरिक विचारधारा की नारी है। उसका श्रध्दालु रूप प्रमुखता से दिखाई देती है। वह धर्म, प्रेम और सौभाग्य का प्रतीक तुलसी की आरती उतारती है। शेफाली को यह पसंद नहीं है। वह विडंम्बनापूर्ण दृष्टि से देखती है। प्रेम विवाह में सफलता प्राप्त करने के लिए तुलसी की पुजा करना यह बात शेफाली को पसंद नहीं आती। शेफाली को बैचेन देखकर पुजारिन युवती अपने आस्तिकवादी विचार प्रकट करती हुई कहती है - " देवी - देवताओं ते लिए आप ऐसी

अपमानजनक बात कह रही हैं - छीः- छी! अभी - अभी मैंने जो आरती उतारी वह भी व्यर्थ चली गई । साधारण लोगों और देवी - देवताओं में आपको कोई फ़र्क नजर नहीं आता ? देवताओं को आप एक उदाहरण कहकर सिर झटक रही है ? आपने तो मुझे भी पाप का भागी बना दिया।"[64] पुजारिन युवती परंपरा से जकड़ी , आस्तिकवादी भारतीय नारी के रूप में चित्रित है।

अन्य गौण पात्र

प्रस्तुत नाटक में अन्य गौण पात्रों में भजन - मंडली, अंग्रेज फोटोग्राफर, किरन, शिवालय का पुजारी आदि पात्र आते हैं। जिनका कार्य प्रसंगानुकूल है, जो कथावस्तु को आगे बढ़ाने में सहायक है।

3.2.3 कथोपकथन या संवाद : -

भावों की अभिव्यक्ति के लिए अथवा विचार-विनिमय के लिए कथन का प्रयोग किया जाता है, उसे ही कथोपकथन या संवाद कहते हैं। नाटककार का जीवनदर्शन पात्रों के क्रिया - कलाप और विचार अभिव्यक्त करने के लिए संवादों का कार्य अनन्य साधारण रहता है। कुसुम कुमार द्वारा लिखित, ' सुनो शेफाली ' नाटक के कथोपकथन की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं -

3.2.3.1 कथा को गति देनेवाले संवाद : -

नाटक में आदेशात्मक संवाद और स्वाभाविक सूचक संवादों में भी कथानक को गति देने की शक्ति होती है। बकुल और शेफाली के वार्तालाप द्वारा यह बात स्पष्ट होती है -

" शेफाली - बकुल तुम्हारे घर पर जो घटता है उसके बारे में तुम भी कुछ जानते हो या नहीं ?

बकुल - घर पर जो कुछ होता है वह जानता हूं ... तुम्हें भी जानता हूं ... तुमसे प्यार करता हूं यह भी जानता हूं ... तुमसे पहचान अब ...

शेफाली - पुरानी हो चली है ... सच बताओ कि अब कैसा लगता है ?

बकुल - लगता है ... लगता है कि मेरा शरीर तुम्हारी आत्मा से छू - छूकर ...

शेफाली - बस, बाबा बस ! मुझे बदहवास करने के सब उपास अब बस ! ! दूध की धुली प्यार की यह लफ्फाजी अब और नहीं चाहिए ...

बकुल - तब क्या चाहिए तुम्हें ? मेरी नफरत ?

शेफाली - हां ! वही चाहिए अब।"[65]

प्रस्तुत संवाद कथा को गति देने में सहायक सिध्द हुआ है।

3.2.3.2 पात्रानुकूल संवाद : -

जो संवाद पात्र के स्वभाव के अनुकूल होते हैं उन्हें पात्रानुकूल संवाद कहते हैं। विवेच्य नाटक में पात्रानुकूल संवाद के दर्शन होते हैं। शेफाली स्पष्ट बात कहनेवाली व्यक्ति है। बकुल की स्वार्थनीति को जान लेने से वह अब उससे नफरत करती है -

" शेफाली - बकुल ! ... रूको, बकुल ! अपने किए का हिसाब मैं खुद रख लूंगी ... पहले तुम बताओ तुम क्या हो ?... किस नाइलाज रोग का नाम तुम्हारे नाम से मिलता - जुलता है ?

बकुल - इन्सान ! ... इन्सान हूं मैं ...

शेफाली - अपने इन्सान होने का सबूत तो दिया होता? तुम क्या समझते हो मैं कुछ जानती नहीं ?

बकुल - कहो, क्या जानती हो ? ... अपने सिवाय तुम किसी दूसरे को क्या जान सकती हो ? ... कभी - कभी तो लगता है तुम्हारे शरीर में लहू की जगह भी तुम्हारे पहाड़ जितने अहं ने ले ली है ... इतना बड़ा अहं लेकर कहा जाओगी, शेफाली ! तुम दूसरे किसी को क्या जान सकोगी ?

शेफाली - मुझे जानना चाहिए ... और कुछ नहीं तो तुम्हारी तो मुझ पर असी कृपा रही है, उसके बारे में जरूर जानना चाहिए मुझे ...तुम्हारे लबालब होठों के चुम्बन ... बरसों प्यार के कोहरे में चलते रहनेवाले पुरजोर वे आलिंगन - सब जैसे मुझ पर बरसाए जानेवाले उपकारों के फूल थे ... मुझे क्या पता था यह पूरा सिलसिला सिर्फ़ तुम्हारी दया - दृष्टिवश चल रहा है ? ... ऐसा मगर मैं पहले जान पाती तो उसी वक्त तुम्हारा धन्यवाद कर देती।"[66]

पात्रानुकूल संवादों की योजना लेखिका ने काफी सजग रहकर की है।

3.2.3.3 मनोभावों को व्यक्त करनेवाले संवाद : -

प्रस्तुत नाटक में मनोभावों को व्यक्त करनेवाले संवादों का प्रयोग सफलता के साथ किया गया है। जैसे पुजारिन युवती और शेफाली के वार्तालाप से स्पष्ट होता है कि एक नास्तिकवादी है और दूसरी आस्तिकवादी।

" शेफाली - तुलसी किसी एक के प्रेम की मिसाल। ऐसी मिसालों की आरती उतरते देखकर मुझे बड़ी बेचैनी होती है।

युवती - देवी - देवताओं के लिए आप ऐसी अपमानजनक बात कर रहीं है - छी: - छी:। अभी - अभी मैंने जो आरती उतारी वह भी व्यर्थ चली गई। साधारण लोगों और देवी - देवताओं में आपको कोई फ़र्क नजर नहीं आता ? देवताओं को आप एक उदाहरण कहकर सिर झटक रहीं है ? आपने तो मुझे भी पाप का भागी बन दिया।"[67]

शेफाली और पुजारिन युवती के संवादों से उनके मन में स्थित भाव अभिव्यक्त होता है।

प्रस्तुत नाटक के संवादों में चरित्र-चित्रण की क्षमता है। मानसिक अन्तर्दन्द्व का चित्रण भी संवादों के माध्यम से उपस्थित किया गया है। प्रस्तुत नाटक में संवाद अधिकतर लंबे है, किन्तु उनमें

सार्थकता है। संवादों में कलात्मकता के साथ ही संप्रेषणीयता भी है। कहीं - कहीं संवाद लंबे है, इसीलिए कथानक में बोझीलता आ गई है।

3.2.4 देशकाल और वातावरण : -

देशकाल और वातावरण की योजना पर ही नाटक की सफलता निर्भर होती है। युग विशेष सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, राजनीतिक आदि विभिन्न परिस्थितियों पर विचार किया जाना चाहिए।

कुसुम कुमार द्वारा लिखित ' सुनो शेफाली ' नाटक में चित्रित परिवेश स्थान और काल सापेक्ष है। तत्कालीन परिस्थितियों के अनुरूप ही घटनाक्रम विकसित हुआ है। नाटक में ऐसी कोई घटना नहीं है, जो काल की दृष्टि से असंगत जान पड़े। स्थान के संबंध में विचार किया जाय तो ' सुनो शेफाली ' नाटक की कथावस्तु आदि से अंत तक यमुना के घाट पर घटित होती है। जिससे देशकाल और वातावरण का स्पष्ट जिक्र हुआ है।

स्थल के संबंध में कुसुम कुमार ने नाटक के प्रारंभ में टिप्पणी दी है कि - " मंच के बायीं ओर यमुना का एक घाट। मंच के दायी ओर यमुना का दूसरा घाट।"[68] बायीं ओर के घाट पर मनन ज्योतिषी बैठा करता है। दायीं ओर के घाट पर शेफाली बैठा करती है। यमुना के घाट पर नाटक की कथावस्तु निरंतर आगे बढ़ती रहती है। कुसुम कुमार ने देशकाल, वातावरण का चित्रण प्रस्तुत करने के लिए सुंदर दृश्य चित्रों का निर्माण किया है। जैसे -

" बकुल - कहो, आज क्या कहा इन लहरों ने तुम से ?

शेफाली - कुछ नहीं !

बकुल - कुछ नहीं क्यों ? तुम भी थी यहां ये लहरें भी थीं मेरी जान ... फिर कुछ क्यों नहीं कहा - सुना गया ? एक बात कहू आली ? कभी - कभी मुझे लगता है तुम मुझसे ज्यादा तो यमुना की इन लहरों से बेतकल्लुप हो। तुम प्यार मुझे जरूर करती हो, लेकिन प्यार का अपना तमाम लेखा - जोखा इन लहरों के साथ एकांत में बैठा करती हो।"[69]

प्रस्तुत वर्णन को पढ़ते समय यमुना तट का चित्र हमारे सामने स्पष्ट होता है।

कुसुम कुमार ने धार्मिक वातावरण का निर्माण भी किया है। पुजारिन युवती द्वारा तुलसी के पुजन करते समय बड़े उल्हासपूर्ण वातावरण का निर्माण किया है -

" युवती - ओं जय तुलसी माता
जय जय तुलसी माता
शरण पड़े जो तेरी
सो नर तर जाता
ज्योति जगे सब तेरी
जय निर्मल गाता

ओं जय तुलसी माता
प्यार तू जगत का सारे
सब जग की त्राता
कृपादृष्टि हो तेरी
तो त्रिभुवन सुखदाता।"[70]

धार्मिक गीतों के माध्यम से वातावरण निर्मिति में सजीवता आ गई है। जिससे नाटक सजीव, सुंदर बन पड़ा है।

3.2.5 भाषा शैली : -

भावों की अभिव्यक्ति का माध्यम भाषा है। भाषा की सशक्तता, गंभीरता और चित्रांकन करने का सामर्थ्य किसी कृति को स्प्राणता एवं सजीवता प्रदान करने में पूर्ण रूपेण् सहायक होती है।

कुसुम कुमार ने विवेच्य नाटक को आकर्षक तथा प्रभावशाली बनाने के लिए चित्रात्मक, काव्यात्मक, मिश्रित भाषा का प्रयोग किया है।

3.2.5.1 चित्रात्मक भाषा : -

चित्रात्मक भाषा की विशेषता यह है कि भाषा पढ़ते अथवा सुनते समय वह चित्र दर्शक अथवा पाठक के सामने हु - ब - हु आता है। नाटककार ने अपने नाटक में घटनाओं और सूक्ष्म दृश्यों के अंकन में चित्रात्मक भाषा का प्रयोग किया है। उदाहरण के रूप में हम बकुल और किरन के विवाह प्रसंग को देखते हैं - " पुजारी, जो शिवालय के अंदर अब तक बैठा था, आकर चारों को तिलक लगाता है। कीर्त्तन - ध्वनि पुनः तेज। नव - विवाहित दम्पति की शिवालय की तरफ से अभी भी पीठ है। कीर्त्तन की तेज ध्वनि मे मनन और शेफाली चुपचाप शिवालय की ओर देखते हुए खड़े हैं। शंख बजता है। फिर एक धमाका। कभी प्रकाश, कभी अंधेरा। बकुल और किरन शेफाली के सामने खड़े है। किरन दुल्हन बनी बकुल का हाथ पकड़े हुए है।"[71] चित्रात्मक भाषा के कारण नाटक में सजीवता आ गयी है।

3.2.5.2 काव्यात्मक भाषा : -

नाटक को अत्यंत प्रभावपूर्ण बनाने के लिए काव्यात्मक भाषा का प्रयोग किया जाता है। ' सुनो शेफाली ' नाटक में काव्यात्मक भाषा का सुंदर प्रयोग हुआ है। मनन आचार्य और गेरू मिलकर गीत गाया करते हैं। उनके द्वारा नाटक में गाया हुआ गीत प्रभावपूर्ण बना है -

" या तो जीत प्रीत के बलपर
या तो तेरा पद चूमे तस्कर
बदला लेना भी कमजोरी
पर कायरता अधिक अपावन !

कुछ भी बन ...
कुछ भी बन बस कायर मत बन। "[72]

मनन और गेरू के प्रस्तुत उपदेशात्मक गीत से शेफाली को प्रेरणा, संदेश मिलता है।

3.2.5.3 मिश्रित भाषा : -

दो भाषाओं के मिश्रण से एक अलग चमत्कारिक भाषा बनती है। जिससे नाटक प्रभावपूर्ण रोचक बनता है। कुसम कुमार द्वारा लिखित ' सुनो शेफाली ' नाटक में मिश्रित भाषा का प्रयोग हुआ है। सत्यमेव दीक्षित और अंग्रेज फोटोग्राफर के संवादों में मिश्रित भाषा का उदाहरण दृष्टव्य है -

" फोटोग्राफर - खुछ स्नेक चार्मर्स के फोटो लेने का भी प्लैनिंग था ...
स. दीक्षित - जरूर लीजिए!
फोटोग्राफर - लेकिन हमारे देश में सुना गया है कि आजकल यहां स्नेक्स का व्हैरायटी कुछ कम हो गया है और चार्मर्स का गिनती कुछ बढ़ गया है ...
स. दीक्षित - वाह, फिरंगी भाई, वाह! आप देश में बैठे - बैठे जो लोग यहां के स्नेक चार्मर्स पर रिसर्च किया करते है, दाद तो उनकी देनी चाहिए ... ये हुई न बात!
फोटोग्राफर - तो हमने ठीक सुना है!
यू मीन चार्मर्स आर टरनिंग इन टु स्नेक्स ? आर स्नेक्स हैव टर्न्ड इन टु चार्मर्स ?
स. दीक्षित - अच्छा - भला हिन्दुस्तानी में बात कर रहा था! अचानक यह अग्रेजी ...
येस - येस ... नो ... नो!
फोटोग्राफर - से येस! ... आर से नो! दोनों एक साथ क्यों बोलटा हय ? यू आर कन्फ्युज्ड इट सीम्स!
स. दीक्षित - येस - येस! ... नो ... नो! "[73]

प्रस्तुत संवादों में अंग्रेजी मिश्रित हिंदी भाषा का प्रयोग हुआ है। मिश्रित भाषा के कारण संवाद रोचक बना है।

3.2.5.4 मुहावरे और कहावतें : -

मुहावरों के प्रयोग से भाषा में सरलता, सरसता, चमत्कार और प्रवाह उत्पन्न होते हैं। भाषा में रोचकता और स्पष्टता लाने के लिए कहावतों का प्रयोग किया जाता है। प्रस्तुत विशेषता के दर्शन कुसुम कुमार के विवेच्य नाटक में होते है।

1. खुद पर बस नहीं चलना (' सुनो शेफाली ' पृ.19)
2. पांव पसारना (' सुनो शेफाली ' पृ.22)
3. शेखी बघारना (' सुनो शेफाली ' पृ.29)
4. कान में फूंक भर देना (' सुनो शेफाली ' पृ.29)

5. गले में त्रिशुल फंसकर रह जाना (' सुनो शेफाली ' पृ.31)
6. अम्मा का पारा सातवें आसमान पर चढ़ा (' सुनो शेफाली ' पृ.33)
7. सरसों जमाना (' सुनो शेफाली ' पृ.58)
8. कालिख पुत जाती है (' सुनो शेफाली ' पृ.58)
9. घात लगाकर बैठना (' सुनो शेफाली ' पृ.60)
10. टेढ़ी उंगली से घी निकालना (' सुनो शेफाली ' पृ.74)
11. काठ की नाव के लिए चीख - पुकार (' सुनो शेफाली ' पृ.77)
12. बगल में भीगी बिल्ली बने (' सुनो शेफाली ' पृ.83)

3.2.5.5 अंग्रेजी शब्द : -

कुसुम कुमार ने ' सुनो शेफाली ' नाटक में अंग्रेजी शब्दों का भी प्रयोग किया है। -

पोस्टकार्ड, कैप्टेन, आय एम सॉरी, कॉम्पलैक्स, फोटो, मैगजीन, स्नेक चार्मर्स, प्लैनिंग, कन्फ्युज्ड, सीम्स, असिस्टेंट, इलेक्शन, प्रैक्टिकल, क्लासिक आदि।

3.2.5.6 अरबी शब्द : -

कुसुम कुमार ने प्रस्तुत नाटक में कुछ अरबी शब्दों का प्रयोग किया है जैसे -

ताकत, मलाल, मक़सद, मुद्दत, हकीकत दफना आदि।

3.2.5.7 फारसी शब्द : -

कुसुम कुमार ने प्रस्तुत नाटक में कुछ फारसी शब्दों का प्रयोग किया है जैसे -

बदनसीबी, बेतकल्लुफ आदि।

3.2.5.8 शैली : -

शैली में भावों को स्पष्ट करने का सामर्थ्य होता है, इसलिए वह अपने उद्देश्य में सफल होती है। कुसुम कुमार द्वारा लिखित ' सुनो शेफाली ' नाटक में आवेगपूर्ण शैली, व्यंग्यात्मक शैली और वर्णनात्मक शैली का खुलकर प्रयोग हुआ है।

3.2.5.8.1 आवेगपूर्ण शैली : -

जब नाटक में पात्र विद्रोही रूप में अपने मन में छुपा हुआ आक्रोश व्यक्त करते हैं तब उनके उत्तेजनपूर्ण बातों में आवेग होता है। प्रस्तुत नाटक में शेफाली का आवेग निम्न कथन मे अभिव्यक्त हुआ है -

" शेफाली - क्या ? क्या कहां अम्मा ? किरन की शादी ? बकुल से ? किसने कहा तुझसे ? उसके बापने ? (दांत किटकिटाकर) तूने सुन लिया, अम्मा ? जिस मुंह से अपने आग की यह लपटें निकाली उसे तूने ... मिट्टी का तेल दिखाकर राख क्यों नहीं कर दिया ? जली हुई उस राख पर चिमटें से चप्प - चप्प और कर दिया होता ! लहू - लुहान कर दिया होता उस पामर को ... ।"[74]

3.2.5.8.2 व्यंग्यात्मक शैली : -

व्यंग्यात्मक शैली के माध्यम से सामाजिक विसंगतियों को चित्रित किया जाता है। निम्नलिखित प्रसंग इस शैली का अच्छा उदाहरण है -

" मनन - वधू यानी आपकी समाजसेवा और वर जिसके हाथ में अपनी कन्या का हाथ देने जा रहे है - आपका वह चुनावदेवता। समाजसेवा वेड्स चुनाव देवता ! दोनों मिलकर करेंगे देश - सेवा ! खाएंगे दीक्षित एण्ड कम्पनी खूब फल - मेवा ! फूल बरसाएंगे ऊपर से मननदेवा ! अब तो क्या आया न समझ में ?"[75]

3.2.5.8.3 वर्णनात्मक शैली : -

वर्णनात्मक शैली का निर्माण किसी वस्तु, विषय, स्थान की विशेषता प्रदर्शित करने के लिए किया जाता है। निम्नलिखित प्रसंग इसका अच्छा उदाहरण है -

" शेफाली - हम वहां से एक जीप पर रवाना होते हैं ... शहर भर में हम लाउड्स्पीकर पर बोलते चलते हैं ... वोट दीजिए हमें ... बहनों और भाईयों, वोट ! (उत्तेजना से शेफाली का स्वर कुछ और ऊँचा हो जाता है) तुम मुझसे ऊँचे खड़े हुए हो। कहते जा रहे हो - वोट फॉर दीक्षित ... वोट फॉर ... लोग सड़क के दोनों ओर अपने - अपने मकाम की ओर बढ़े जा रहे हैं। इनका ध्यान तुम कुछ और आकर्षित करना चाहते हो, इसलिए जीप एक चौराहे के ऐन बीच रोककर बोलना शुरू करते हो - ' बहनो और भाईयों ... अपना वोट हमें देकर अपना भविष्य उज्ज्वल बनाइए ... ।"[76]

इन शैलियों के प्रयोग से नाटक में रोचकता, प्रवाहमयता आयी है।

3.2.6 उद्देश्य : -

कुसुम कुमार ने प्रस्तुत नाटक में एक हरिजन लड़की और उच्चवर्गीय नेता के पुत्र की प्रेम कहानी के माध्यम से सामाजिक व्यवस्था की गिरती दशा और राजनीतिक नेताओं की स्वार्थनीति का पर्दाफाश करना यही उनका प्रमुख उद्देश्य रहा है। राजनीतिक नेता चुनाव जीतने के लिए चुनावी दांव - पेंच लड़ते हैं। गरीब जनता को फंसाकर कीमती वोट प्राप्त करके मंत्री बनतै हैं। प्रस्तुत नाटक ' सुनो शेफाली ' में सत्यमेव दीक्षित हरिजनों से वोट प्राप्त करने के लिए हरिजन युवती शेफाली को अपनी बहू बनाना चाहता है। एक उच्चवर्गीय नेता वोट प्राप्त करने के लिए एक निरीह लड़की शेफाली को पुत्र के माध्यम से प्रेमजाल में फंसाता है। राजनीतिक नेता लोग चुनाव में जीतने के लिए कितने घिनौने स्तर पर आते हैं। इसका सही चित्रण प्रस्तुत करके लेखिका ने राजनीतिक नेताओं की स्वार्थनीति का पर्दाफाश किया है। प्रस्तुत उद्देश्य की पूर्ति में लेखिका सफल हुई है।

3.2.7 शीर्षक की सार्थकता : -

प्रस्तुत नाटक का शीर्षक कौतुहलवर्धक, जिज्ञासावर्धक है। लेखिका, शेफाली को कुछ सुनाना चाहती है ; क्या सुनाना चाहती है, जिसके लिए पाठक, दर्शक नाटक का आस्वाद लेते हैं। कुसुम कुमार द्वारा लिखित ' सुनो शेफाली ' नाटक उच्चकुल में जन्में समाजसेवक का बेटा बकुल और हरिजन युवती शेफाली के प्रेम - संबंध पर आधारित है। प्रस्तुत नाटक का शीर्षक नायिका शेफाली से संबंधित है। शेफाली एक भोली - भाली किन्तु स्वाभिमानी लड़की है। बकुल ने शेफाली को प्यार के मोहजाल में फंसा दिया है। वह अपनी राजनीतिक पृष्ठभूमि मजबूत करने के लिए हरिजन युवती शेफाली से विवाह करना चाहता है। शेफाली बकुल के स्वार्थनीति को पहचान लेने से वह विवाह के लिए राजी नहीं होती। कुसुम कुमार प्रस्तुत नाटक के माध्यम से यह कहना चाहती है कि समस्त भारतीय नारियाँ शेफाली जैसे स्वाभिमानी रहे। ' सुनो शेफाली ' नाटक का शीर्षक अपने प्रतिपाद्य में सार्थक सिध्द हुआ है। अतः शीर्षक की दृष्टि से ' सुनो शेफाली ' नाटक सफल हुआ है।

3.3 'दिल्ली ऊँचा सुनती है'

प्रस्तुत नाटक का तात्विक विवेचन निम्नलिखित प्रकार से प्रस्तुत किया जा रहा है -

3.3.1 कथावस्तु

कुसुम कुमार द्वारा लिखित 'दिल्ली ऊंचा सुनती है' नाटक में माधोसिंह एक सेवा-निवृत्त क्लर्क हैं। सेवा-निवृत्ति के बाद पांच महिने तक पेंशन मिलती है और पेंशन मिलना बंद हो जाती है। माधोसिंह ने अर्थ-मंत्रालय में छत्तीस वर्ष तक क्लर्क की नौकरी की है। नौकरी के दिनों में दिल्ली जैसे महानगर में रहते समय उन्हें अर्थाभाव में जीवन व्यतीत करना पड़ता है। सेवा-निवृत्ति के बाद परिवार का खर्च चलाना मुश्किल होने से माधोसिंह अपने पैतृक गाँव अलीगढ़ में रहने के लिए जाता है। वहां अपने मित्र मनगलाल के मकान में किरायें पर रहता है। माधासिंह को पेंशन मिलना बंद होने पर अब तक उन्होंने दिल्ली के 'पे अण्ड एकाउण्ट्स आफिस' को छः बार रिमाइंडर पत्र लिखे हैं। फिर भी उनके रिमाइंडर का कोई जवाब नहीं मिलता। छः महीने से उनके पेंशन की राशि रूकी है। यहां कुसुम कुमार लालफीताशाही के कुचक्र में फंसे हुए सेवा-निवृत्त व्यक्ति का दर्दनाक चित्रण प्रस्तुत कर रही है।

पेंशन के मामले माधोसिंह दिल्ली जाता है। वहां 'पे ॲण्ड अकाउण्ट्स आफिस' के अधिकारी माधोसिंह के साथ हृदयहीनता से व्यवहार करते हैं। मिस्टर ए. 'पे ॲण्ड अकाउण्ट्स आफिस' का एसिस्टेंट अधिकारी है। बडे साहब की मेहरबानी से वे एसिस्टेंट बन गए हैं। मिस्टर ए. रिश्वत का लालची व्यक्ति है। दप्तर में कोई रिश्वत न म्लिने के कारण वह अपना रोष प्रकट करते हुए करता है कि - "हूं! यहां साला कोई आकर कुछ पेश करे तब ना !... रिश्वत मिलेगी और यहां? हुंह ! भूखे-नंगों का दफ्तर है यह ... सब कानी कौड़ी के मोहताज साले ... खुद पैंशन पर गुजर

करनले वाले ! उनसे रिश्वत मिलेगी ? भूल जा, डी.आर. भूल जा !" [77] मिस्टर ए. को माधोसिंह से कोई रिश्वत मिलने की संभावना नहीं है, इसलिए वह माधोसिंह के साथ हृदयहीनता से व्यवहार करता है। माधोसिंह द्वारा पेंशन न मिलने का कारण पूछने पर मिस्टर ए.रिमाइंडर पत्रों का प्रुफ मांगकर माधोसिंह को पेचीदगी में डालता है। 'पे ॲण्ड अकाउण्ट्स आफिस' की टाइपिस्ट मिस अलका माधोसिंह को पहचान लेती है। वह माधोसिंह की बेटी नीति की सहेली है। मिस अलका द्वारा अनुरोध करने पर मिटर ए. और उनके सहकर्मी सोनी फाईलें देखना शुरू करते हैं। रेकार्ड देखने पर पता चलता है कि माधोसिंह की रेकार्ड में मृत्यु हो चुकी है। माधोसिंह को जीवित हैं यह प्रमाणित करने के लिए 'बर्थ सर्टिफिकेट' की जरूरत होती है। माधोसिंह एक अर्जी लिखकर घर वापस आता है।

माधोसिंह बर्थ सर्टिफिकेट लेने के लिए आपने पूराने परिचय के डॉक्टर मित्र के पास जाता है। डॉक्टर सरकारी आफिस के मामले में जोखिम उठाना नहीं चाहता, क्योंकि वह प्राइवेट डॉक्टर है। माधोसिंह बर्थ सर्टिफिकेट पाने के लिए सरकारी अस्पताल में जाता है। वहां उन्हें मरीजों की लंबी कतार में खड़ा रहना पड़ता है। उस दिन माधोसिंह अर्जी लिखकर घर वापस आता है। पंद्रह दिन पत्र का उत्तर न मिलने पर माधोसिंह को फिर सरकारी अस्पताल में जाना पड़ता है। उस दिन माधोसिंह कतार में खड़ा रहता है। वहां के अस्पताल का कर्मचारी बड़ा भ्रष्ट व्यक्ति है। वह अपने परिचय के मित्र हरिओम का पर्चा सबसे उपर रखकर प्रथम नंबर देता है। कर्मचारी द्वारा पर्चे में गड़बड़ी करने से माधोसिंह को देर तक कतार में खड़ा रहना पड़ता है। माधोसिंह का नंबर आने में कुछ ही क्षण पूर्व लंच की घंटी बजतो है। लेडी डॉक्टर चलने निकलती है। माधोसिंह अनुनय स्वर में लेडी डॉक्टर को बिनती करता है। लेकिन लेडी डॉक्टर भी माधोसिंह के साथ रूष्ठता से व्यवहार करती है। दूसरे दिन माधोसिंह सरकारी अस्पताल की कतार में खड़ा रहता है। उस दिन डॉक्टर ही नही आते। माधोसिंह को तीन दिन सरकारी अस्पताल की कतार मैं खडा रहने पर भी 'बर्थ सर्टिफिकेट' नहीं मिलता। माधोसिंह सरकारी व्यवस्था में आयी अव्यवस्था पर उदासी प्रकट करते हुए कहता है कि - "आय हैव अंडरस्टुड, अंडरस्टुड ऐवरी सिचुएशन ! अंडरस्टुड दिस ब्लडी सिस्टम् अडरस्टुड ! नथिंग कैन बी डन विद दीज सिचुएशन.... व्दिद दिस सिस्टम ! अंडरस्टुड ! आय हैव अंडरस्टुड। "[78]

माधोसिंह को डाक द्वारा बर्थ सर्टिफिकेट मिलता है। लेकिन 'माधोसिंह' के स्थान पर 'माधवसिंह' लिखा हुआ मिलता है। अभी भीं माधोसिंह को अनेक कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है। माधोसिंह गलती सुधार करने के लिए फिर एक बार दिल्ली जाकर आवेदन देकर आता है। कुछ ही दिनों बाद 'बर्थ सर्टिफिकेट' गलती सुधार कर मिलता है। सर्टिफिकेट देखकर माधोसिंह के परिवार को बहुत खुशी होती है। माधोसिंह खुशी में भाव-विभोर होकर कहता है कि - "नीति बेटे, अब तू देखती जा - कैसे फुर्ती से 'पे ॲण्ड अकाउण्ट्स आफिस' को चिट्ठी लिखकर अपने सारे पैसे बटोरता हूं।" [79] अब तो पेंशन जरूर मिलेगी यह उम्मीद रखकर माधोसिंह बड़ी खुशी से 'बर्थ सर्टिफिकेट' 'पे ॲण्ड एकाउण्ट्स आफिस' के नाम पोस्ट करके आता है।

बर्थ सर्टिफिकेट भेज देने पर भी माधोसिंह को पेंशन नहीं मिलती। इसी सिलसिले में भी दिल्ली चला जाता है। 'पे ॲण्ड अकाउण्ट्स आफिस' के अधिकारी को बड़ी उम्मीद से कहता है कि - " मैं अर्ज कर रहा था साहेब कि मुझे इस बात का एकदम अंदाजा नहीं या - आपके दफ्तर में भी मेरे पास किसी कारण रूक सकते हैं।"[80] दफ्तर में जाने पर उसे पता चलता है कि पेंशन के लिए और कुछ दिन रूकना पड़ेगा। मिस्टर पी. माधोसिंह के फाईल पर ' फार एमीजिएट डिस्पोजल ' ऐसी टिप्पणी लिखकर फाईल आगे भेज देता है। मिस्टर पी. पेंशन के मामले को जल्द ही निपटाने का विश्वास दिलाकर माधोसिंह को घर जाने के लिए कहता है।

माधोसिंह सरकारी तंत्र की अव्यवस्था पर तंग आता है। उसके मन में आत्महत्या का विचार आता है। ऐसा विचार अपने मित्र मगनलाल के पास वह प्रकट भी करता है - " गले में फंासी का फंदा डाल लूं और ...।"[81] मगनलाल उन्हें धीरज बांधता है। मगनलाल पेंशन का मामला तुरंत निपटारा करने के लिए माधोसिंह को मंत्री कुलजीवन लाल के पास ले जाता है। मगनलाल मंत्रीजी के यहां मालिश करने जाया करता था। इसलिए मंत्री कुलजीवन लाल उनके गहरे परिचय का आदमी है। माधोसिंह पेंशन के मामले को तुरंत निपटारा करने के लिए मंत्रीजी के पास अनुनय बिनती करता है। वहां मंत्री माधोसिंह के साथ हृदयहीनता से व्यवहार करता है।

माधोसिंह और मगनलाल घर लौट आते हैं। वे घर की दहलीज पर पांव रखते ही किसी अनिष्ट की आशंका से सहमे हुए दिखाई देते हैं। माधोसिंह की नीति इकलौती बेटी है। नीति की मानसिक बीमारी के कारण उसके पति ने त्याग दिया है। इसलिए नीति अपने पिता के घर में रहा करती है। माधोसिंह और कमला के जीवन का सहारा नीति ही है। वे अपना सेवा-निवृत्त पेंशन के पैसों पर व्यतीत करना चाहते हैं। लेकिन पेंशन का मामला सरकारी नौकरशाही की हृदयहीनता के कारण मृगजल जैसा ही है। अंत में नीति घर की परिस्थिति, मानसिक बीमारी और सरकारी तंत्र की अव्यवस्था के सामने हार मान कर आत्महत्या कर लेती है। माधोसिंह घर आने पर नीति का नाम लेकर पुकारते हैं। लेकिन उन्हें अंदर से कुछ आवाज नहीं आती। उसे पता चलता है कि नीति ने दो दिन पहले ही आत्महत्या कर ली है। माधोसिंह को भीषण मानसिक यातना असहाय होने पर वह दम तोड देता है। माधोसिंह की मृत्यु के चार महीने बाद कमला को पेंशन की रजिस्ट्री मिलती है। माधोसिंह को लाख कोशिश करने पर भी जीवित होते पेंशन न मिलना सरकारी व्यवस्था में आयी हुई अव्यवस्था का ही द्‌योतक है। सरकारी दफ्तरो में फैली अव्यवस्था, भ्रष्टता, अराजकता, डॉक्टरों की हृदयहीनता, मंत्री लोगों का रूष्ठतापूर्ण व्यवहार आदि के कारण एक मध्यमवर्गीय परिवार आर्थिक विवशता के कारण नष्ट हो जाता है। कुसुम कुमार द्‌वारा लिखित ' दिल्ली ऊँचा सुनती है ' नाटक में यथार्थवादी नाट्य - शैली के प्रयोगों की दृष्टि से विशेष महत्त्व है, क्योंकि प्रस्तुत नाटक में नाटककार ने ' विषय ' और ' शैली ' दोनों ही स्तर प्रौढ़ता एवं सशक्तता का परिचय दिया है। कथावस्तु में रोचकता, आकर्षकता, कुतूहलता आदि गुण विद्यमान हैं।

3.3.2 पात्र या चरित्र - चित्रण : -

विवेच्य नाटक का नायक माधोसिंह है और नायिका कमला है। नाटक के पात्र - परिचय की सूची में पंद्रह पात्र हैं। पंद्रह पात्रों में से चार प्रमुख पात्र और ग्यारह गौण - पात्र के रूप में चित्रित है। प्रमुख पात्र है - माधोसिंह, मगनलाल, कमला और नीति। गौण - पात्र - मिस्टर पी., अस्पताल कर्मचारी, चपरासी, युवक, डाकिया, डॉक्टर, जरीवाला, मंत्री, अलका, सोनी आदि हैं।

प्रमुख पात्र

3.3.2.1 माधोसिंह : -

नाटक के प्रमुख पात्रों में से एक है - माधोसिंह। वह प्रस्तुत नाटक का नायक है। माधोसिंह के चरित्र की विशेषताएँ निम्न प्रकार से हैं -

3.3.2.1.1 आर्थिक दुरावस्था से पीड़ित : -

माधोसिंह सेवा निवृत्त होने के बाद पांच महीनों में ही उसकी पेंशन बंद हो जाती है। पेंशन न मिलने के कारण आर्थिक विपन्नता ग्रस्त स्थिति में उसे जीवन व्यतीत करना पड़ता है। माधोसिंह कहता है कि - " एक बार फिर से जिन्दा होना इतना आसान नहीं होता ... और फिर इस जमाने में फिर सांस लेने का मतलब जिन्दा रहना थोड़े है! पैसा चाहिए, पैसा! पैसा आदमी को मारता है! पैसा जिलाता है।"[82] अर्थिक दुरावस्था के कारण माधोसिंह के घर में एक - एक दिन चूल्हा भी नहीं जलता। वह आर्थिक दुरावस्था से पीड़ित है।

3.3.2.1.2 पेंशन के लिए विवश : -

माधोसिंह ने दिल्ली में छत्तीस साल तक अर्थ - मंत्रालय में क्लर्क की नौकरी की है। सेवा - निवृत्त होते ही कुछ महीनों के बाद पेंशन बंद हो जाती है। पेंशन के मामले उन्हें दिल्ली में ' पे ॲण्ड एकाउण्ट्स आफिस ' में बार - बार जाना पड़ता है। पेंशन बंद होने से माधोसिंह को घर खर्च चलाना मुश्किल होता है। एक साल तक माधोसिंह पेंशन प्राप्ति के लिए प्रयास करता है। आखिर पेंशन की रैजिस्ट्री माधोसिंह के मृत्यु के चार महीने बाद मिलती है। पेंशन के पैसों पर निर्वाह करनेवाला माधोसिंह विवश होकर प्राण त्याग देता है। यही उसके जीवन की सबसे बड़ी ट्रेजेडी है।

3.3.2.1.3 परिवार से प्रेम करनेवाला : -

माधोसिंह के परिवार में पत्नी कमला और बेटी नीति तीन ही सदस्य हैं। अपनी बेटी नीति से बेहद प्यार करता है। उसे किसी बात की कमी नहीं आने देता। नीति उनकी अकेली बेटी है। माधोसिंह नीति की उदासी दूर हटाते हुए कहता है कि - " नहीं - नहीं नीति बिटीया, तू ऐसा एकदम मत समझ नीति बेटे, तू बस खुद को संभाल तुझे किस बात की चिन्ता है। घर की चिन्ता के लिए मैं

जो हूं। अपना मन नहीं ढ़ाते पगली ... मन के ढ़ाए सब ढह जाता है तुझे तो बस उसी को थिर रखना है बाकी सब मैं देख लूंगा।"[83] माधोसिंह अपने परिवार से बेहद प्रेम करता है।

3.3.2.1.4 आशावादी : -

माधोसिंह पेंशन की प्रतीक्षा में हमेशा आशावादी दृष्टिकोण रखता है। पेंशन मिलने के बाद वह अपने परिवार के साथ सैर करने के लिए आग्रा जाने की इच्छा व्यक्त करता है। " देख, अब कुछ ही दिनों की तो बात है, मुझे अपने सारे रूके हुए पैसे मिल जाएंगे फिर तू, तेरी मम्मी, तेरे मगन काका - हम सब मिलकर आगरा जाएंगे।"[84] माधोसिंह एक आशावादी व्यक्ति है। इसलिए वह आज नहीं तो कल पेंशन मिलेगी ऐसी इच्छा से दिल्ली जाता रहता है।

माधोसिंह परिवार प्रेमी, महत्वाकांक्षी, आशावादी व्यक्ति है।

3.3.2.2 मगनलाल : -

कुसुम कुमार द्वारा लिखित ' दिल्ली ऊँचा सुनती है ' नाटक में चित्रित मगनलाल के चरित्र की विशेषताएँ लेखिका ने इस प्रकार प्रस्तुत की है -

3.3.2.2.1 पहलवान : -

मगनलाल पहलवान हैं। वह दिल का अच्छा आदमी है। इनकी आयु चालीस के आस - पास है। मगनलाल अविवाहित हैं। उन्हें व्यायाम करने का बहुत शौक है।

3.3.2.2.2 व्यंग्यकार : -

मगनलाल एक अच्छा व्यंग्यकार है। नाटक के प्रारंभ में समाचार पत्र जोर - जोर से पढ़ता है। पढ़ते - पढ़ते वह अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करता है कि - " रामपालसिंह की समाज्वादी पार्टी को खुली चुनौती ! ... आए बड़े चुनौती देने ? अरे लाला, समाजवाद के शेर को तुम्हारा पाकिटवाद क्या चुनौती देगा। सरकारी व्यय में कमी के उपाय ! ... हं - हं, बेबात की बात ! तुम सिर्फ गरीब की रोटी में कमी के उपाय कर सकते हो !"[85] मगनलाल एक अच्छा व्यंग्यकार है।

3.3.2.2.3 उदार : -

माधोसिंह मगनलाल के घर में किराये पर रहने के लिए आया है। आर्थिक विपन्नावस्था में माधोसिंह किराया देने से असमर्थता व्यक्त करने पर मगनलाल उन्हें कहता है कि - " इस घर में रहिए, हमें एकदम अपना समझकर रहिए। आपसे किराया कौन जाहिल मांग रहा है ?"[86] मगनलाल माधोसिंह को चाय - पत्ती और पचास रूपये देकर आर्थिक सहायता भी करता है। " लो भाभी, यह चाय - पत्ती, यह दूध, यह चीनी और हां ये पचास रूपये भी।"[87] मगनलाल उदार व्यक्ति है।

3.3.2.2.4 अन्याय के विरोध में लड़नेवाला : -

मगनलाल अपनी जवानी में आक्रमक था। माधोसिंह को अपनी जवानी की बहादुरी को बताते, हुए कहता है कि - " एक ऐसा भी बखत था माधोभाई, जब मैं किसी एक को दूसरे पै अन्याय करता देखता था तो मचल पड़ता था। ... किसी को किसी पै जुलम करते देखा नहीं मैंने कि बस कभी उसका जबड़ा तोड़ा, कभी उसकी हड्डी चकनाचुर। किसी - किसीके तो सिर पर से बाल उखाड़े और चौरास्ते पर उड़ा दिए।"[88] ' पे ॲण्ड एकाउण्ट्स आफिस ' के अधिकारी माधोसिंह के पेंशन के मामले में विलंब करने पर सरकारी कर्मचारियों की हृदयहीनता पर मगनलाल क्रोधित होता है। वह अन्याय के विरोध में आवाज उठाना चाहता है। वह अपने विचार माधोसिंह के पास व्यक्त करते हुए कहता है कि - " बाबा ने मरते समय कसम दिलाई थी - कि मैं बाकी जैसे चांहू जिन्दगी बिताऊं, पर कभी किसी पर हाथ ना उठाऊं - लैकिन नहीं, अब वह प्रन टूटकर रहेगा।"[89] मगनलाल अन्याय के विरोध में लड़नेवाला व्यक्ति है।

मगनलाल पहलवान है, व्यंग्यकार है, उदार और अन्याय के विरोध में लड़नेवाला व्यक्ति है।

3.3.2.3 कमला : -

नाटक के प्रमुख पात्रों में से एक है - कमला। वह प्रस्तुत नाटक की नायिका के रूप में चित्रित है। कमला के ममता - मूर्ति मां का रूप नाटक में विशेष उल्लेखनीय है। कमला के चरित्र की विशेषताएँ इस प्रकार है -

3.3.2.3.1 वात्सल्यमय माता :-

विवेच्य नाटक में कमला वात्सल्यमय माता के रूप में चित्रित है। नीति उनकी अकेली बेटी है। नीति मनोरूग्न होने के कारण उसके पति ने उसे त्याग दिया है। इसलिए नीति अपनी मायके रहा करती है। वात्सल्य प्यार से भरी कमला नीति को किसी भी बात की कमी नहीं आने देती। कमला उसे लाड़ - प्यार से दुलारती रहती है। नीति के पास आकर प्यार से उसके बालों पर हाथ फिराते हुए कहती है कि - " नीति बहुत प्यारा नाम है ! मेरी बेटी का मन प्यारा है। नाम प्यारा है ! इतने गुण हैं मेरी बेटी में भाईजी ...।"[90] कमला का वात्सल्यमय माता का रूप सराहनीय है।

3.3.2.3.2 आदर्श और कर्तव्यनिष्ठ पत्नी : -

कमला आदर्श माता और आदर्श पत्नी भी है। अपने पति और बेटी नीति की सेवा में अपना सर्वस्व मानती है। पति को पेंशन के मामले में हमेशा धीरज देती रहती है। आर्थिक विपन्नावस्था में पति का साथ देती है।

3.3.2.3.3 संघर्षशील एवं प्रयत्नशील नारी : -

संकटों का डटकर मुकाबला करनेवाली कमला प्रयत्नशील नारी है। वह घर - परिवार के लोगों को सुख मिले इस हेतू से प्रयत्न करती है। पेंशन प्राप्त करने के लिए दिल्ली जाने के लिए प्रेरित करती हुई कहती है कि - " एक बार दिल्ली हो आइए। सारे रूके हुए पैसे मिल जाएंगे। कल की गाडी से ही चले जाइए।"[91] पेंशन के मामले में विलंब होने पर कमला पति को बार - बार प्रयत्नशील रहने के लिए प्रेरित करती है। कमला संघर्षशील और प्रयत्नशील नारी के रूप में पाठकों के सामने आती है।

3.3.2.3.4 आशावादी नारी : -

कमला पेंशन मिलने की आशा में अपने सपनों को बुनाती रहती है। जब भी डाकिया पत्र लेकर आता है तब वह पत्र का जवाब सुनने के लिए आतुर होती है। पेंशन मिलने के बाद मथुरा - वृंदावन जाने की इच्छा भी प्रकट करती है। " नहीं, आगरा नहीं जाएंगे - मथुरा - वृंदावन जाएंगे ... आगरा में क्या धरा है ?।"[92]

कमला वात्सल्यमय माता, आदर्श पत्नी, संघर्षशील, प्रयत्नशील और आशावादी नारी के रूप में चित्रित है।

3.3.2.4 नीति : -

नाटक के प्रमुख पात्रों में से एक पात्र है - नीति। नीति के चरित्र की विशेषताएँ इस प्रकार हैं -

3.3.2.4.1 मनोरूग्न : -

नीति मानसिक बीमारी से अस्वस्थ है। वह हमेशा चिंता में बैठी रहती है। मगनलाल नीति के बारे में कहता है कि - " हम तो जब देखते हैं तभी उदास, गुमसुम बैठी रहती है। हम आपसे नहीं, नीति से कहते है। दुनिया में आदमी का सबसे बडा गुण खुश रहना है। हमेशा अपनी करे, पर कभी दूसरों के लिए तनिक खुश रहना पड़े तो इनमें मुश्किल क्या है ?"[93] नीति मानसिक रूग्न होने के कारण हमेशा अकेली बैठी रहती है।

3.3.2.4.2 परित्यक्ता : -

नीति के पति ने उसे दो साल पहले त्याग दिया है। अब नीति अपने पिता के घर में रहा करती है। मगनलाल द्वारा दामाद के बारे में पूछने पर माधोसिंह कहत है कि - " बड़े ओहदे पर ही हैं, पर हमसे कोई सरोकार नहीं। नीति हमारे पास ही रहती हैं।"[94] मानसिक रुग्नता के कारण नीति परित्यक्ता जीवन व्यतीत करती है।

3.3.2.5.3 मां - बाप की लाड़ली बेटी : -

नीति अपने माँ - बाप की इकलौती बेटी है। इसलिए माधोसिंह और कमला लाड़ - प्यार से उसे दुलारते हैं।

" कमला - नीति हमारे बड़ी भगवान है, अपने लिए न सही पापा के लिए, मेरे लिए, दूसरों सबके लिए ...

माधोसिंह - मेरे घर का तो यही स्वर्ग है। अब सब ठीक हो जायेगा।"[95]

नीति इकलौती बेटी होने के कारण माधोसिंह और कमला के जीवन का सहारा नीति ही है।

3.3.2.4.4 उदास : -

नीति मानसिक रूग्नता के कारण उदास बैठती है। पिता की आर्थिक विवशता के कारण हमेशा चिंतित रहती है। वह स्वयं को मां - बाप पर बोझ मानती है। माधोसिंह द्‌वारा सरकारी व्यवस्था पर उदासी प्रकट करने पर, नीति कहती है - " पापा ... पापा ... प्लीज पापा, बताइए ना ... मुझे भी पापा, आपने क्या समझ लिया ? वाट हैव यू अंडरस्टुड ? मैं तो कुछ भी नहीं समझी ... कुछ भी नहीं जानी पापा ... रियली पापा ! मैं जानती हूं, बस इतना कि मैं आपकी चिन्ता बनी रही हमेंशा ! आपकी मुसीबतें बढ़ाती रही ! ... आप पर बोझ हूं पापा, मैं ...।"[96] नीति अपने आप को बहुत अपराधी समझकर जीवन व्यतीत करती है। नीति कहती है कि - " सब है दुनिया में मेरे ... सब ... सबमें मैं नहीं ... समझ लीजिए, मैं नहीं।"[97] नीति की उदासी का प्रमुख कारण मानसिक, आर्थिक विवशता ही हैं।

नीति मनोरूग्न, परित्यक्त्या, मां - बाप की लाड़ली, आदि रूपों में चित्रित है।

गौण पात्र : -

3.3.2.5 मिस्टर ए. : -

मिस्टर ए. ' पे ॲण्ड एकाउण्ट्स आफिस ' में असिस्टेंट अधिकारी है। बारहवी कक्षा पास करके क्लर्क बन गए थे। बाद में साहब की मेहरबानी से असिस्टेंट बनता है। मिस्टर ए.माधोसिंह के साथ रूष्ठता से व्यवहार करता है। उनके पास दया भाव थोडा भी नहीं है। मिस्टर ए. अपने सहकर्मी अलका की चापलुसी करके उनके पीछे पड़ा रहता है। मिस्टर ए.अलका की चापलुसी करते हुए कहता है कि - " कल वाली पिक्चर में आपकी बड़ी याद आई अलकाजी ! पिक्चर की हीरोइन की शक्ल आपसे इतनी मिलती थी, इतनी - लगता था, जैसे आप दोनों जुडवां बहनें हों।"[98] मिस्टर ए. स्त्री - लपंट चाटुकार आदमी है। मिस्टर ए.भ्रष्ट और रिश्वत का लालचो आदमी है। माधोसिंह से उसे कुछ रिश्वत न मिलनेवाली है। इसलिए वह चपरासी दयाराम के पास रोष प्रकट करता है - " अरे, तू नहीं सह सकता तो मत सह ... पर मैं तो सब सह सकता हूं। यहां साला कोई आकर कुछ पेश करे तब ना ! ... रिश्वत मिलेगी और यहां ? हुंह ! भूखे - नंगों का दफ्तर है यह ... सब कानी कौडी के मोहताज साले ... खुद पेंशन पर गुजर करनेवाले ! उनसे रिश्वत मिलेगी ?

भूल जा, डी.आर. भूल जा! यहां तो जहान भर तते सठियाए हुए लोग ... पहले बाप का दफ्तर समझकर चले आएंगे।"[99] मिस्टर ए. भ्रष्ट, स्त्री - लंपट और रिश्वतखोर व्यक्ति है।

3.3.2.6 मिस्टर पी. : -

मिस्टर पी. ' पे ॲण्ड एकाउण्ट्स आफिस ' में डायरेक्टर जनरल हैं। मिस्टर पी.आफिस में मनचाहा कारोबार करता है। मिस्टर पी.के भ्रष्ट कारोबार के कारण उसके सहयोगी अधिकारी भी कभी भी छुट्टी पर जाया करतें हैं। माधोसिंह द्वारा मिस्टर पी.के बारे में पूछने पर मिस्टर ए.कहता है कि - " तभी मामला गड़बड़ है। डायरेक्टर पिछले दो महीने से छुट्टी पर हैं ... हमारे एक्टिंग डायरेक्टर हैं ... लेकिन पिछले करीब तीन हफ्ते से वह भी छुट्टी पर हैं ... उनकी जगह जो काम देख रहे है, वह भी परसों से एक हफ्ते की छुट्टी पर हैं।"[100] मिस्टर पी.प्रस्तुत नाटक में सरकारी कार्यालयों में कार्यरत नौकरशाही के प्रतिनिधी के रूप में चित्रित है।

अन्य गौण पात्र : -

प्रस्तुत नाटक मे अन्य गौण पात्रों में अस्पताल का कर्मचारी, चपरासी, युवक, डाकिया, डॉक्टर, लेडी डॉक्टर, जरीवाला, मंत्री, अलका, सोनी आदि पात्र आते हैं। जिनका कार्य प्रसंगानुकूल है। जो कथावस्तु को आगे बढ़ाने में सहायक है।

3.3.3 कथोपकथन या संवाद : -

कथोपकथन नाटक में सजीवता, गतिशीलता लाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। कथोपकथन द्वारा पाठकों या श्रोताओं में अभिरूचि और जिज्ञासा बढ़ाने की महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी जाती है।

कुसुम कुमार द्वारा लिखित ' दिल्ली ऊँचा सुनती है ' नाटक में संवाद कथानक के विकास में गति देते हैं। प्रस्तुत नाटक में कथोपकथन की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं -

3.3.3.1 कथा को गति प्रदान करनेवाले संवाद : -

विवेच्य नाटक में कथा को गति प्रदान करनेवाला निम्नलिखित संवाद प्रस्तुत है -

" कमला - जवाब आ गया ?
माधोसिंह - किसका ?
कमला - पैंशनवालों का और किसका ?
माधोसिंह - नहीं।
कमला - एक चिठ्ठी और ड़ाल दीजिए।
माधोसिंह - बेकार चिट्ठियां डाले चले जाने क्या फायदा!
कमला - जहां इतनी लिखीं है, वहां एक और लिख दो!
माधोसिंह - छः चिठ्ठियां पहले लिख चुका हूं, कोई जवाब नहीं! अब क्या सातवीं लिखने से बला जग जाएगी ? सरकारी मुलाजमत मैंने भी की है ... जानता हूं सब, इन दफ्तरों में आम आदमी की सुनवाई कितनी होती है।"[101]

उपर्युक्त संवाद द्वारा यह ज्ञात होता है कि माधोसिंह और कमला के वार्त्तालाप से कथानक को गति प्रदान करनेवाले हैं।

3.3.3.2 पात्रानुकूल संवाद : -

जो संवाद पात्रों के स्वभाव का परिचय करा देते है, उसे पात्रानुकूल संवाद कहते हैं। मिस्टर ए. रिश्वत का लालची है। उनके स्वभाव का चित्रण निम्न उदाहरण से स्पष्ट होता है -

" मिस्टर ए. - अरे, तू नहीं सह सकता तो मत सह ... पर मैं तो सब सह सकता हूं। यहां साला कोई आकर कुछ पेश करे तब ना ! ... रिश्वत मिलेगी और यहां ? हुंह ! भूखे - नंगों का दफ्तर है यह ... सब कानी कौडी के मोहताज साले ... खुद पेंशन पर गुजर करनेवाले ! उनसे रिश्वत मिलेगी ? भूल जा, डी.आर. ।"[102]

मिस्टर ए. का संवाद उनके स्वभाव के अनुकूल है।

3.3.3.3 संक्षिप्त संवाद : -

संक्षिप्त संवाद पाठकों, दर्शकों में अभिरूचि बढ़ाने में सहायक सिध्द होते हैं। प्रस्तुत नाटक में संक्षिप्त संवाद निम्नलिखित प्रकार से हैं -

" अलका - अब क्या करना होगा ?
सोनी - प्रमाणित करना होगा कि अंकल जिंदा है !
मिस्टर ए. - येस ! प्रुब करना होगा कि ...
माधोसिंह - कैसे प्रुब करना होगा ?
सोनी - हमारे रेकाड़ के अनुसार आप जिंदा थे !
माधोसिंह - कैसे ?
सोनी - जैसे सब होते हैं।
माधोसिंह - और अब ? अब में वैसे नहीं जिन्दा, जैसे सब होते हैं ?"[103]

प्रस्तुत नाटक में संक्षिप्त संवाद रोचक, सरस बने हैं। जिससे नाटक में रोचकता आयी है।

3.3.4 देशकाल और वातावरण : -

देशकाल वातावरण का चित्रण करते समय वर्णनात्मक सूक्ष्मता, विश्वसनीय कलात्मकता, उपकरणात्मक संतुलनता, चित्रात्मकता, यथार्थता इन गुणों का होना आवश्यक है। विवेच्य नाटक में देशकाल वातावरण का निर्वाह इस प्रकार हुआ है - नाटक के प्रारंभ में लेखिका ने स्थल के बारे में यह टिप्पणी दी है - " किसी बड़े घर का आंगन। यह आंगन ही वह प्रमुख स्थल है जहाँ सब घटनाएँ घटित होती हैं।"[104] प्रस्तुत नाटक की पूरी कथावस्तु एक ही स्थान में घटित होती है। ' दिल्ली ऊँचा सुनती है ' नाटक में ' दिल्ली ' का परिवेश है। वहां के कार्यालय, अस्पताल के वातावरण का चित्रण मिलता है। कुसुम कुमार ने अस्पताल के वातावरण का चित्रण सजीव, और चित्रात्मक रूप में किया है - " लाइन में लगे मरीजों को डॉक्टर की प्रतीक्षा है। कोई मरीज खांस

रहा है, किसी के घुटन में दर्द है। एक महिला बुर्का ओढ़े अपना बच्चा दुलरा रही है। अस्पताल का कर्मचारी, जो हर समय पान खाता है, इन सभी मरीजों को लाइन में लगने का आदेश दे रहा है। माधोसिंह लाइन से हटकर खड़े हैं।"[105] कुसुम कुमार ने सजीव साकार दृश्य की निर्मिति की है। जो वातावरण निर्मिति में सहायक सिध्द हुई है।

कुसुम कुमार ने प्रस्तुत नाटक में ' पे अ‍ॅण्ड एकाउण्ट्स आफिस ' के दृश्य में वातावरण की निर्मिति की है। डायरेक्टर जनरल मिस्टर पी.माधोसिंह के कैस पर विचार करके एक्शन लेते हुए अपने पी.ए. को बुलाते हैं। उसके हाथ में एक फाईल देकर ' फार नैससरी एक्शन मिस्टर क्यू.।' आगे इस टिप्पणी के साथ पांच अन्य अफसर भी फाईल अग्रेषित कर देते हैं। ये पांचों अफसर सभी सूट पहने हैं। डायरेक्टर जनरल की मेंज के सामने ही कतार में खड़े हैं , पांचों एक - दूसरे के आगे फाइल बढ़ाते जाते हैं। -

" कोई - इटज एस्ट्रेज केस !
अन्य - फॉर फरदर इन्स्ट्रकशन्ज मिस्टर आर !
अगला - फॉर फायनल डिसीजन मिस्टर क्यू.।
मिस्टर क्यू - फॉर फायनल डिसीजन मिस्टर पी.।
मिस्टर पी. - नो कोर्स एक्शन कैन बी टेक्स इन द सरकमस्टान्सेस।"[106]

उपर्युक्त वातावरण ऑफिस की कार्य पद्धति का अच्छा नमुना प्रस्तुत करता है। जिससे वातावरण में सजीवता, यथार्थता, वास्तविकता आयी है। ' दिल्ली ऊँचा सुनती है ' नाटक में नाटकीय घटना की अवधि आठ महीने की है। देशकाल वातावरण की अन्विती से नाटक सफल बनता है। प्रस्तुत नाटक के स्थल, काल और वातावरण की अन्विती करने में लेखिका कुसुम कुमार को सफलता मिली है।

3.3.5 भाषा शैली : -

' दिल्ली ऊँचा सुनती है ' प्रस्तुत नाटक में कुसुम कुमार ने नाटक के कथ्य, पात्र, संवाद एवं अभिनय आदि को ध्यान में रखकर भाषा शैली का प्रयोग किया है।

3.3.5.1 चित्रात्मक भाषा : -

चित्रात्मक भाषा द्‌वारा नाटक में सजीवता आयी है। कुसुम कुमार ने प्रस्तुत नाटक में चित्रात्मक भाषा - शैली का सुंदर प्रयोग किया है - " किनारे खड़े हो जाओ तो पानी का रंग हरा लगता है। किनारे के साथ- साथ चलने लगे तो उसी पानी का रंग दूधिया सफ़ेद।"[107] चित्रात्मक भाषा द्‌वारा हु - ब - हु चित्र पाठकों के सामने उभर आता है।

मंत्री कुलजीवन लाल और ' पे अ‍ॅण्ड एकाउण्ट्स आफिस ' के अधिकारी सक्सेना का फोन पर किया हुआ वार्त्तालाप चित्रात्मक भाषा का उत्कृष्ट उदाहरण दृष्टव्य है -

" कौन, सक्सेनाजी ? मैं कुलजीवन लाल बोल रहां हूं। यार, आज आपका विक्टिम हमारे पास बैठा है ... आपका विक्टिम यानी आपके विभाग का विक्टिम ... आप लोगों ने ऐसी गत बनाई

बेचारे की ... अब कैसे क्या तो वह खुद ही आकर बताएगा आपको ... उसे आपके पास भेज रहां हूं ... उसकी बात जरूर सुन लिजिएगा और हो सके तो मद्द भी कीजिएगा ... मेरा ? मेरा खास कुछ नहीं, पर इंसानियत का भी एक रिश्ता होता है यार !... हां हां ... आज ? चार बजे ? ठीक है ... वह पहुंच जाएगा ... बाकी सब ठीक है ... आप सुनाइए ... आपके सैंयाजी कैसे हैं।"[108] फोन पर किया गया संभाषण चित्रात्मक, सजीव साकार हो उठा है।

3.3.5.2 व्यंग्यात्मक भाषा : -

कुसुम कुमार ने ' दिल्ली ऊँचा सुनती है ' नाटक में व्यंग्यात्मक भाषा का प्रयोग किया है। नाटक के प्रारंभ में मगनलाल समाचार पत्र पढ़ रहा है। पढ़ते - पढ़ते वह अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करता है - " रामपालसिंह की समाजवादी पार्टी को खुली चुनौती! ... आए बड़े चुनौती देने ? अरे लाला, समाजवाद के शेर को तुम्हारा पाकिटवाद क्या चुनौती देगा! ... सुल्तानपुर ... दस मई ... कुख्यात डाकू हरिया की पुलिस - मुठभेड़ में मृत्यु! ... मरो स्सालो, तुम भी मरो! ... सरकारी व्यय में कमी के उपाय! ... हं - हं, बेबात की बात! तुम सिर्फ गरीब की रोटी में कमी के उपाय कर सकते हो!"[109] उपर्युक्त उध्दरण व्यंग्यात्मक भाषा का उदाहरण है।

3.3.5.3 काव्यात्मक भाषा : -

' दिल्ली ऊँचा सुनती है ' नाटक में काव्यात्मक भाषा का प्रयोग किया है। अस्पताल का कर्मचारी निम्न पंक्तियां गाता है -

" अरे अनासीन में का मिलवत है
ई हम पूछ के आवा
अरे अनासीन में का मिलवत है
ई हम सबका बतावा।"[110]

काव्यात्मक भाषा द्वारा नाटक में प्रभाव उत्पन्न हुआ है।

3.3.5.4 मुहावरे और कहावतें : -

भाषा को सजीव बनाने के लिए कुसुम कुमार ने प्रस्तुत नाटक में मुहावरे और कहावतों का खुलकर प्रयोग किया है। जिससे भाषा में मधुरता आयी है।

3.3.5.4.1 मुहावरे : -

1. सब कानी कौडी के मोहताज साले। (' दिल्ली ऊँचा सुनती है ' पृ.34)
2. साले दूसरों की नाक में दम किए हैं (' दिल्ली ऊँचा सुनती है ' पृ.63)
3. यहां तो जहान भर के सठियाए हुए लोग (' दिल्ली ऊँचा सुनती है ' पृ.34)
4. सबके चेहरे पर बारह बजे हैं (' दिल्ली ऊँचा सुनती है ' पृ.86)
5. बदमाशी की खीर पकते देखना (' दिल्ली ऊँचा सुनती है ' पृ.87)
6. तू तो बौरा गया है (' दिल्ली ऊँचा सुनती है ' पृ.87)

3.3.5.4.2 कहावतें : -

1. आखिर दूध का दूध हुआ पानी का पानी (' दिल्ली ऊँचा सुनती है ' पृ.91)
2. भगवान के घर देर है बिटिया अंधेर नहीं (' दिल्ली ऊँचा सुनती है ' पृ.99)
3. जान है तो जहान है (' दिल्ली ऊँचा सुनती है ' पृ.98)

3.3.5.5. अंग्रेजी शब्द : -

' दिल्ली ऊँचा सुनती है ' नाटक में कुसुम कुमार ने अंग्रेजी शब्दों प्रयोग किया है। वे शब्द ग्रहण करते समय अर्थ में बाधा नहीं बनकर आते। जैसे -

एसिस्टेट, कस्टम, इन्कमटैक्स, डिपार्टमेंट, रिमांइडर, डायरेक्टर, एक्टिंग डायरेक्टर, रेकार्ड, कारेस्पोंडेंस, डैथ सर्टिफिकेट, ऑफ कोर्स, अंडरस्टुड, स्लिप, सिचुएशन, ब्लडी सिस्टम, नैससरी एक्शन, पौसिबल, सरकमस्टान्सेस, एन्कवायरी, इमीजिएट डिस्पोजल, मैजोरिटी, फायनैन्स सेक्रेटरी, इन्वैस्टीगेशन आदि।

3.3.5.6 अरबी शब्द : -

कुसुम कुमार ने अरबी शब्दों का प्रयोग किया है। जैसे - महबूब, दफ्तर, कस्बा, तबीयत, अखबार आदि।

3.3.5.7 फारशी शब्द : -

कुसुम कुमार ने फारशी शब्दों का प्रयोग किया है। जैसे - रिश्वत, गवाही, मालिश, कागज, सरकार आदि।

3.3.5.8 शैली : -

विचार प्रकट करने की रीति को शैली कहा जाता है। शैली भावाभिव्यक्ति की कला है। शैली लेखक पर निर्भर हुआ करती है।

कुसुम कुमार द्वारा लिखित ' दिल्ली ऊँचा सुनती है ' नाटक में भावात्मक शैली, प्रश्नोत्तर शैली, कुतूहलपूर्ण शैली दिखाई देती है।

3.3.5.8.1 भावात्मक शैली : -

भावात्मक शैली के सफल प्रयोग में मानव हृदय की रागात्मक दृष्टि तथा आन्तरिक संघर्ष की अभिव्यंजना का समावेश पाया जाता है। कुसुम कुमार द्वारा लिखित ' दिल्ली ऊँचा सुनती है ' नाटक में प्रस्तुत शैली का प्रयोग हुआ है। प्रस्तुत नाटक में पुत्री के मृत्यु से व्याकुल माधोसिंह भावात्मक शैली का प्रयोग करते है। जैसे -

" माधोसिंह - मगना !
अब नहीं जी सकूंगा मगना ... अब नहीं ... मुझे किसी चीज की आस नहीं अब ... नीति बेटी मेरे होते चल बसी मगना ... कौन - सी आस बची है अब मेरे लिए ?"[111]

3.3.5.8.2 प्रश्नोत्तर शैली : -

प्रश्नोत्तर शैली को संक्षिप्त रूप में अभिव्यक्त किया जाता है। जिससे पाठक या दर्शक के मन में जिज्ञासा उत्पन्न होती है। निम्नलिखित संवाद प्रस्तुत शैली का उत्कृष्ट उदाहरण है -

" मिस्टर ए. - कहिए, क्या काम है ?
माधोसिंह - आप ही रेकार्ड असिस्टेंट है यहां ?
मिस्टर ए. - जी !
माधोसिंह - आप से कुछ काम है।
मिस्टर ए. - काम अभी शुरू नहीं हुआ।"[112]

3.3.5.8.3 कुतूहलपूर्ण शैली : -

नाटक में पात्र अधुरे वाक्य बोलकर ही रह जाते हैं। कभी - कभी पात्र कुतूहलपूर्ण प्रश्न करते जाते हैं, जिससे कुतूहल की सृष्टि होती है। कुसुम कुमार द्वारा लिखित ' दिल्ली ऊँचा सुनती है ' नाटक में मगनलाल और माधोसिंह के संवाद से कुतूहल में वृद्धि होती है। जैसे -

" मगन - (पुकारता है) भाभी ! ... भाभी ... (चकित है) लगता है, घर पर कोई प्राणि ही नहीं ! (पुनः ऊँचे स्वर में पुकारता है।) भाभी ... नीति ... (कहीं से कोई स्वर नहीं) सुबह - सुबह दोनों कहां चली गई ?
माधोसिंह - नीति ... नीति ! (सहसा कमला की रुलाई का स्वर फुटता है)
मगन - क्या हुआ भाभी ? कुछ बताएं तो सही।
माधोसिंह - क्या हुआ है ? कुछ बोलोगी भी, मेरी मौत से बुरी खबर तो नहीं ना ?"[113]

3.3.6 उद्देश्य : -

कुसुम कुमार ने प्रस्तुत नाटक में सरकारी, कार्यालयों में आयी हुई अव्यवस्था, डाक्टरों की मनमानी, नेताओं के झूठे आश्वासनों का पर्दाफाश करने का प्रमुख उद्देश्य रहा है। सरकारी कार्यालयों में अभिव्याप्त लालफीताशाही का दर्शन करा देना लेखिका का प्रमुख उद्देश्य है। सामान्य सेवानिवृत्त लिपिक लालफीताशाही के विवर्त में ऐसे फंस जाता है, जिसमें उसे अपनी जीवन यात्रा का समापन करना पड़ता है। सरकारी कार्यालयों में चलनेवाले काले कारनामों का यथार्थ दर्शन करा देना ही नाटक का प्रमुख उद्देश्य रहा है। नाटककार कुसुम कुमार को अपने उद्देश्य की पूर्ति में सफलता मिली है।

3.3.7 शीर्षक की सार्थकता : -

कुसुम कुमार द्वारा लिखित ' दिल्ली ऊँचा सुनती है ' नाटक में ' दिल्ली ' राजसत्ता का प्रतीक है। नाटक में चित्रित प्रमुख समस्या सरकारी कार्यालयों में अभिव्याप्त ' लालफीताशाही ' की है। जहां पर माधोसिंह जैसे सामान्य व्यक्ति की व्यथा को सुननेवाला कोई नहीं है। वहां हृदयहीन, रिश्वतखोर, लालची लोगों की भरमार है, जो निष्ठुर अमानवीय कार्यों में व्यस्त हैं। इन पक्षों का दर्शन लेखिका ने प्रस्तुत नाटक में चित्रित करने का प्रयास किया है, यही शीर्षक की सार्थकता है।

प्रस्तुत नाटक तत्वों के आधार पर खरा उतरता है।

निष्कर्ष : -

कुसुम कुमार के विवेच्य नाटकों का तात्विक विवेचन विद्वानों द्वारा स्वीकृत नाटक संबंधी आधुनिक तत्वों के आधार पर प्रस्तुत किया गया है।

कुसुम कुमार द्वारा लिखित ' ओम् क्रांति क्रांति ' नाटक की कथावस्तु स्वाभाविक, रोचक, नाटकीय और प्रभावशाली बनी है। सुगठित चरित्रांकन, गत्यात्मक घटनाएँ कथावस्तु को प्रवाहमयी बना देती है। प्रस्तुत 'नाटक' पाठक या दर्शक पढ़ते अथवा देखते समय नाटक में वर्णित कालेज जीवन से परिचित होते हैं।

विवेच्य नाटक के चरित्र चित्रण में पात्र अपने मनोभावों को व्यक्त करत हैं। पात्र कथावस्तु को आगे बढ़ाने में सहायक सिध्द हुए हैं।

विवेच्य नाटक में व्यंग्यात्मक संवाद रोचक बनें हैं। लेखिका ने संवादों के माध्यम से अपने विचार अथवा उद्देश्य को दर्शकों, पाठकों तक पहुंचाने का कार्य किया है। ' ओम् क्रांति क्रांति ' नाटक में कथानक को गति देनेवाले संवाद, संक्षिप्त संवाद, व्यंग्यात्मक संवाद रोचक दिखायी देते हैं।

' ओम् क्रांति क्रांति ' नाटक में देशकाल तथा वातावरण पात्रों के चरित्र में यथार्थता लाने के लिए नाटकीय घटनाओं के अनुकूल वातावरण की निर्मिति की है। देशकाल तथा वातावरण में समन्वय करके लेखिका ने नाटक में यथार्थता प्रदान की है।

' ओम् क्रांति क्रांति ' नाटक में भाषा, शैली, व्यंग्यात्मकता और नाट्यानुकूलता से युक्त है। प्रस्तुत नाटक में व्यंग्यात्मक भाषा रोचक बनी है। व्यंग्यात्मक भाषा के माध्यम से लेखिका ने सामाजिक विसंगतियों को चित्रित किया है। कुसुम कुमार ने ' ओम् क्रांति क्रांति ' नाटक में अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग किया है, वे शब्द अर्थबोध में बाधा नहीं बनते। इसमें अंग्रेजी वाक्यांशों का प्रयोग किया हे। प्रस्तुत नाटक में प्रश्नोत्तर, व्यंग्यात्मक, आवेगपूर्ण शैली का प्रयोग किया गया है। जिसमें लेखिका का अभिव्यक्ति कौशल दिखाई देता है।

प्रस्तुत नाटक शिक्षा व्यवस्था पर आधारित हैं, जिसमें विद्यार्थियों द्वारा भ्रष्ट लेक्चररों के विरोध में की गई क्रांति का महत्त्व प्रतिपादित किया है। प्रस्तुत कालेज की छात्रा क्रांति में सफल

होती है। लेखिका ने महिला कालेज में की गई सामूहिक क्रांति का महत्त्व प्रतिपादित किया है। अपने उद्देश्य की पूर्ति में लेखिका सफल हुई है।

' ओम् क्रांति क्रांति ' नाटक का शीर्षक भी अर्थपूर्ण और सार्थक है। शांति का पक्ष लेकर चलनेवाली भ्रष्ट प्राध्यापिकाओं के विरोध में ' ओम् क्रांति क्रांति ' का नारा लगाकर महिला कालेज की लड़कियों द्वारा परिवर्तन लाना प्रशंसनीय है। जिससे नाटक का शीर्षक सार्थक और प्रेरणास्त्रोत बना है।

कुसुम कुमार द्वारा लिखित ' सुनो शेफाली ' नाटक की कथावस्तु कौतुहल जगानेवाली है। कथावस्तु में रोचकता, आकर्षकता, एवं प्रभावोत्पादकता दिखाई देती है। कथावस्तु में घटनाओं का संगठन करके इसमें प्रवाहमयता दिखाई देती है। जो आदि से लेकर अंत तक पाठकों, दर्शकों में अभिरूचि उत्पन्न करती हैं।

' सुनो शेफाली ' नाटक के पात्र प्रतीकात्मक है। शेफाली नारी स्वाभिमान, आत्मसम्मान का प्रतीक है। बकुल स्वार्थी बेटे के रूप में जीवन मार्ग पर भटके व्यक्ति का प्रतीक है। नाटक में चित्रित मनन आचार्य की भूमिका महत्त्वपूर्ण है, जो नाटक की नायिका शेफाली को समर्थन देता है। प्रस्तुत नाटक के पात्र नाटकीय कथासूत्र को आगे बढ़ाने में सहायक सिध्द हुए हैं।

' सुनो शेफाली ' नाटक में संवाद पात्रों के क्रिया - कलाप और विचार अभिव्यक्त करने के लिए सहायक है। कथा को गति देनेवाले संवाद, पात्रानुकूल संवाद, मनोभावों को व्यक्त करनेवाले संवाद पात्रों के मानसिक अन्तर्द्वंद्व को स्पष्ट करते हैं, जो कथानक को संप्रेषणीय बनाने में सहायक है।

प्रस्तुत नाटक में देशकाल तथा वातावरण का चित्रण तत्कालीन परिस्थितियों के अनुरुप ही हुआ है। स्थल, काल तथा वातावरण में अन्विति से लेखिका ने नाटकीय घटनाओं में यथार्थता, सजीवता लायी है।

' सुनो शेफाली ' नाटक की भाषा मे सशक्तता, गंभीरता दिखाई देती है। जिससे पात्रों के मनोभाव अभिव्यक्त हुए हैं। चित्रात्मक, काव्यात्मक और मिश्रित भाषा के प्रयोग से नाटक में सजीवता, यथार्थता आयी है। भाषा में अंग्रेजी शब्द आये हैं, जो अर्थबोध में कहीं भी बाधा नहीं बनते।

' सुनो शेफाली ' नाटक में आवेगपूर्ण, व्यंग्यात्मक और वर्णनात्मक शैली का प्रयोग किया गया है। जिससे नाटक में रोचकता, आकर्षकता, प्रवाहमयता आयी हैं।

' सुनो शेफाली ' नाटका का उद्देश्य सफल है; जिसमें हरिजन युवती का स्वाभिमान स्वार्थी राजनेता का पर्दाफाश कर देता है।

प्रस्तुत नाटक का शीर्षक कौतुहलवर्धक है। लेखिका,शेफाली को कुछ सुनाना चाहती है, क्या सुनाना चाहती है, जिसके के लिए कौतुहलवश पाठक, दर्शक नाटक का आस्वाद लेते हैं। नाटक का शीर्षक सार्थक बना है।

कुसुम कुमार द्वारा लिखित ' दिल्ली ऊँचा सुनती है ' नाटक की कथावस्तु बिना किसी व्यवधान के सीधे मानसिक एवं वैचारिक स्तर पर प्रभावित करनेवाली है। कथावस्तु में रोचकता, आकर्षकता, कौतुहलता आदि विशेषताएँ विद्यमान हैं। नाटक की कथावस्तु अपेक्षाकृत अधिक कसी हुई सुगठित और सुसम्बध्द है।

नाटक में चित्रित प्रमुख पात्र पाठकों या दर्शकों में करुणा जगाते हैं। पात्रों के चरित्र - चित्रण में यथार्थता का दर्शन होता है। जिससे पाठक या दर्शक भाव - विभोर हो जाते हैं।

' दिल्ली ऊँचा सुनती है ' नाटक में संवाद पाठकों या दर्शकों में अभिरुचि, जिज्ञासा, निर्माण करते हैं। प्रस्तुत नाटक में पात्रानुकूल संवाद, संक्षिप्त संवाद रोचक बनें हैं। जिससे नाटक में सरसता आ गयी है। इसमें संवाद कई भी बोझील नहीं बनें हैं।

प्रस्तुत नाटक के देशकाल वातावरण में वर्णनात्मकता, चित्रात्मकता, यथार्थता दिखाई देती है। प्रस्तुत नाटक में वातावरण सजीव और चित्रात्मक है। जिससे नाटक के पात्रों में यथार्थता के दर्शन होते हैं। देशकाल तथा वातावरण का यथार्थ और हृदयग्राही चित्रण द्वारा पात्रों के व्यक्तित्व में स्पष्टता आ गई है।

' दिल्ली ऊँचा सुनती है ' नाटक में कुसुम कुमार ने कथ्य, पात्र, संवाद एवं अभिनय आदि को ध्यान में रखकर भाषा शैली का प्रयोग किया है। व्यंग्यात्मक भाषा दर्शकों या पाठकों को संवेदना के स्तर पर प्रभावित करती हैं। प्रस्तुत नाटक में अंग्रेजी वाक्यांशों का प्रयोग किया है, जिससे अर्थबोध में बाधा उत्पन्न नहीं होती। ' दिल्ली ऊँचा सुनती है ' नाटक में भावात्मक, प्रश्नोत्तर और कुतूहलपूर्ण शैली का प्रयोग किया है। जिससे पाठकों या दर्शकों में जिज्ञासा, रूचि बढ़ाने में सहायक है।

' दिल्ली ऊँचा सुनती है ' नाटक का शीर्षक सार्थक है। नाटक में ' दिल्ली ' राजसत्ता का प्रतीक है, जिसमें माधोसिंह जैसे सामान्य व्यक्ति का कोई सुननेवाला नहीं है।

उपर्युक्त विवेचन देखने के पश्चात् यह कहा जा सकता है कि कुसुम कुमार द्वारा लिखित विवेच्य नाटकों में आधुनिक नाटकों के तत्त्वों का निर्वाह अच्छी तरह से हुआ है।

संदर्भ सूची

अं.क्र.	लेखक का नाम	पुस्तक का नाम	पृष्ठ क्रं.
1.	डॉ.भगीरथ मिश्र	काव्यशास्त्र	96
2.	डॉ.रेखा गुप्ता	हिंदी रंगमंच : विविध आयाम	19
3.	डॉ.भगीरथ मिश्र	काव्यशास्त्र	96
4.	कुसुम कुमार	' ओम् क्रांति क्रांति '	59
5.	वही	वही	73
6.	वही	वही	75
7.	वही	वही	76, 77
8.	वही	वही	79
9.	डॉ.रेखा गुप्ता	हिंदी रंगमंच : विविध आयाम	22
10.	कुसुम कुमार	' ओम् क्रांति क्रांति '	16
11.	वही	वही	24
12.	वही	वही	27
13.	वही	वही	72
14.	वही	वही	73
15.	वही	वही	47,48
16.	वही	वही	22
17.	वही	वही	72
18.	वही	वही	22
19.	वही	वही	79
20.	वही	वही	41
21.	वही	वही	54
22.	वही	वही	52
23.	वही	वही	72
24.	वही	वही	48
25.	वहो	वही	51
26.	वही	वही	60
27.	वही	वही	56
28.	वही	वही	61
29.	डॉ.शांति मलिक	नाट्य सिद्धांत विवेचन	71
30.	डॉ.रेखा गुप्ता	हिंदी रंगमंच : विविध आयाम	22, 23
31.	कुसुम कुमार	' ओम् क्रांति क्रांति '	17

32.	कुसुम कुमार	' ओम् क्रांति क्रांति '	12
33.	वही	वही	59
34.	श्रीमती गिरिजा सिंह	हिंदी नाटको की शिल्प- विधि	519
35.	डॉ.रेखा गुप्ता	हिंदी रंगमंच : विविध आयाम	23
36.	कुसुम कुमार	' ओम् क्रांति क्रांति '	9
37.	वही	वही	9, 10
38.	वही	वही	50
39.	वही	वही	59, 60
40.	श्रीमती गिरिजा सिंह	हिंदी नाटको की शिल्प- विधि	428
41.	कुसुम कुमार	' ओम् क्रांति क्रांति '	75
42.	वही	वही	78
43.	वही	वही	55
44.	डॉ.शांति मलिक	हिंदी नाटकों का शिल्प- विधि का विकास	524
45.	कुसुम कुमार	' सुनो शेफाली '	31
46.	वही	वही	35
47.	वही	वही	36
48.	वही	वही	52
49.	वही	वही	58
50.	वही	वही	59
51.	वही	वही	63
52.	वही	वही	64
53	वही	वही	35
54.	डॉ.लवकुमार लवलीन	' साठोत्तर हिंदी नाटककार '	151
55.	कुसुम कुमार	' सुनो शेफाली '	40
56.	वही	वही	52
57.	वही	वही	79
58.	वही	वही	40
59.	वही	वही	52
60.	वही	वही	54
61.	वही	वही	16
62.	वही	वही	34
63.	वही	वही	25

64.	कुसुम कुमार	' सुनो शेफाली '	25
65.	वही	वही	19
66.	वही	वही	35
67.	वही	वही	66
68.	वही	वही	9
69.	वही	वही	18
70.	वही	वही	64
71	वही	वही	90
72.	वही	वही	39
73.	वही	वही	44, 45
74.	वही	वही	62
75.	वही	वही	49
76.	वही	वही	86
77.	कुसुम कुमार	' दिल्ली ऊँचा सुनती है '	34
78.	वही	वही	69
79.	वही	वही	80
80.	वही	वही	84
81.	वही	वही	86
82.	वही	वही	58
83.	वही	वही	69
84.	वही	वही	वही
85.	वही	वही	15
86.	वही	वही	22
87.	वही	वही	59
88.	वही	वही	86
89.	वही	वही	87
90.	वही	वही	29
91.	वही	वही	25
92.	वही	वही	81
93.	वही	वही	29
94.	वही	वही	21
95.	वही	वही	76
96.	वही	वही	69

97.	कुसुम कुमार	' दिल्ली ऊँचा सुनती है '	29
98.	वही	वही	42
99.	वही	वही	34
100.	वही	वही	39
101.	वही	वही	24
102.	वही	वही	34
103.	वही	वही	45
104.	वही	वही	13
105.	वही	वही	56
106.	वही	वही	82
107.	वही	वही	17
108.	वही	वही	94
109.	वही	वही	15
110.	वही	वही	56
111.	वही	वही	97, 98
112.	वही	वही	35
113.	वही	वही	96, 97